सिंघी जैन ग्रन्थ माला

[ग्रन्थाङ्क ४८]

श्रीमहेन्द्रसूरि-विरचिता

[प्राकृतभाषा-निबद्धा]

नम्मयासुन्दरी कहा

SINGHI JAIN SERIES

[NUMBER 48]

NAMMAYĀ SUNDARĪ KAHĀ

[A PRAKRIT WORK]

OF

MAHENDRA SŪRI

कलकत्तानिवासी

साधुचरित-श्रेष्ठिवर्य श्रीमद् डालचन्दजी सिंघी पुण्यस्मृतिनिमित्त

प्रतिष्ठापित एवं प्रकाशित

सिंघी जैन ग्रन्थमाला

[जैन आगमिक, दार्शनिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, कथात्मक-प्रभृति विविधविषयगुम्फित प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, प्राचीनगूर्जर, राजस्थानी आदि नाना भाषानिबद्ध सार्वजनीन पुरातन वाङ्मय तथा नूतन संशोधनात्मक साहित्य प्रकाशिनी सर्वश्रेष्ठ जैन ग्रन्थावलि]

प्रतिष्ठाता

श्रीमद् डालचन्दजी सिंघीसत्पुत्र

स्व० दानशील साहित्यरसिक संस्कृतिप्रिय

श्रीमद् बहादुर सिंहजी सिंघी

प्रधान सम्पादक तथा संचालक

आचार्य जिनविजय मुनि

अधिष्ठाता सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

निवृत्त ऑनररि डायरेक्टर

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

•

संरक्षक

श्री राजेन्द्र सिंह सिंघी तथा श्री नरेन्द्र सिंह सिंघी

प्रकाशक

अधिष्ठाता, सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

जयन्तकृष्ण ह. दवे ऑनररि रजिस्ट्रार, भारतीय विद्या भवन चौपाटी रोड बम्बई, नं. ७ द्वारा प्रकाशित
तथा – लक्ष्मीबाई नारायण चौधरी, निर्णयसागर प्रेस २६-२८ कोलभाट स्ट्रीट, बम्बई, नं. २ द्वारा मुद्रित

श्रीमहेन्द्रसूरि विरचिता

[प्राकृतभाषा-निबद्धा]

नम्मयासुन्दरी कहा

[देवचन्द्रसूरिकृत संक्षिप्त प्राकृत कथा जिनप्रभसूरिकृत अपभ्रंशभाषामय नर्मदासुन्दरी सन्धि तथा मेरुसुन्दरकृत गूर्जरभाषागद्यमय बालावबोधसमन्वित]

संपादनकर्त्री

कुमारी प्रतिमा त्रिवेदी, एम् ए

प्राध्यापिका भा वि भवन कोलेज बम्बई

प्रकाशनकर्ता

सिंघी जैन शास्त्र शिक्षापीठ

भारतीय विद्या भवन, बम्बई

विक्रमाब्द २०१६] प्रथमावृत्ति – पंचशतप्रति [१९६० खिस्ताब्द

ग्रन्थांक ४८] [मूल्य रु. ४/४०

किंचित् प्रास्ताविक

महेन्द्रसूरि रचित 'नम्मयासुन्दरी कहा' (सं० नर्मदासुन्दरी कथा)नी मूळ प्रति, मने सन् १९४२-४३ मां जेसलमेरना ज्ञानभंडारोनुं अवलोकन अने संशोधन करती वखते दृष्टिगोचर थई हती। कागळ पर लखेली ए प्रति कोई ५०० वर्ष जेटली प्राचीन जणाती हती। में ते वखते तेना परथी प्रतिलिपि करावी लीधी। सिंघी जैन ग्रन्थमालामां विशिष्ट रचनावाळी प्राकृत कृतिओ प्रकट करवानो जे उपक्रम में कर्यो हतो, तेमां आ कथाने पण प्रकट करी देवानो मारो विचार थयो अने तदनुसार प्रेस माटे कोपी तैयार करवा मांडी।

ए दरम्यान, विदुषी कुमारी प्रतिमा त्रिवेदी एम. ए. ए, मारा मार्गदर्शन नीचे बम्बई युनिवर्सिटीमां पीएच्. डी. माटे पोतानुं रजीस्ट्रेशन नोंधाव्युं अने भारतीय विद्याभवनमां प्रविष्ट थई अध्ययन करवानी इच्छा व्यक्त करी। में ए बहेनने पोताना थिसीस माटे प्रस्तुत कथानुं विशिष्ट परीक्षणात्मक संपादन करवानुं कार्य सूचव्युं जे एमणे बहु उत्साहथी स्वीकार्युं अने मारा मार्गदर्शन प्रमाणे, एमणे बहु ज खंतथी पोतानुं अध्ययन चालु कर्युं।

जूना हस्तलिखित ग्रन्थोनी लिपि वांचवा-उकेलवामां अने शास्त्रीय संपादननी दृष्टिए प्राचीन ग्रन्थोना पाठो विगेरेनी शुद्धि-वृद्धि आदि माटे केवी दृष्टिए काम लेवुं विगेरे विषयमां ए बहेने सारो श्रम उठाव्यो अने तेमां योग्य प्रावीण्य मेळव्युं।

प्रस्तुत कथानी मूळ वाचना बराबर तैयार थई गया पछी में एने प्रेसमां छपवा आपी दीधी अने धीरे धीरे एनुं मुद्रण कार्य थतुं रह्युं। बीजी बाजु कुमारी त्रिवेदीए, एना ग्रन्थना परीक्षणात्मक विवेचननी संकलना करवानुं काम चालु राख्युं।

केटलोक समय व्यतीत थतां एमनी शारीरिक स्थिति जरा अस्वस्थताजनक रहेवा लागी अने तेथी एमनुं अध्ययनात्मक कार्य मन्द पड्युं। ए दरम्यान मारो पण बम्बईनो निवास अस्थिर थयो अने हुं राजस्थाननी नूतन 'राजधानी जयपुरमां, मारा निर्देशन नीचे' स्थापवामां आवेल राजस्थान पुरातत्त्व मन्दिर'नी रचना अने व्यवस्था माटे वारंवार त्यां जवा-आववामां व्यस्त रहेवा लाग्यो। वचे वचे, ज्यारे ज्यारे बम्बई आववानो प्रसंग बनतो त्यारे ए बहेनने पोताना थिसीसनुं काम पूर्ण करवा सूचना करतो रहेतो।

परंतु समयनुं व्यवधान थई जवाथी तेम ज ते पछी भारतीय विद्याभवनमां संस्कृत भाषाना अध्यापननुं कार्य पण स्वीकारी लेवाथी, एमने पोताना थिसीसनुं कार्य हाल तरत पूर्ण करवा जेटलो अवकाश अने उत्साह बंने न जणावाने लीधे में आ कथाने अत्यारे आम मूळ रूपे ज प्रकट करी देवानुं उचित धार्युं छे।

जो ए बहेन नजीकना भविष्यमां पोतानुं थीसीस पूर्ण करशे तो ते, एना परिशिष्ट रूपे बीजा भागमां प्रकट करवानी व्यवस्था थशे

आ पुस्तकमां, सर्वप्रथम महेन्द्रसूरिरचित प्राकृत 'नम्मयासुन्दरीकहा' मुद्रित करवामां आवी छे। एनी कुल १११७ गाथा छे। बच्चे बच्चे केटलोक गद्यभाग पण छे। तेथी एकंदर एनो ग्रन्थाग्र परिमाण १७५० श्लोकप्रमाण छे—एम एनी मूळ प्रतिना अन्ते ज लखेलु मळे छे। एनी रचना महेन्द्रसूरि नामना आचार्ये विक्रम संवत् ११८७ मां करेली छे। महेन्द्रसूरिए करेला उल्लेख प्रमाणे मूळ ए कथा एमणे शान्तिसूरि नामना आचार्यना मुखथी सांभळी हती।

महेन्द्रसूरिनी आ रचना बहु ज सरळ, प्रासादिक अने सुबोधात्मक छे। कथानी घटना वाचक अनने हृदयंगम थाय तेवी सरस रीते वर्णवेली छे। बच्चे बच्चे लोकोक्तिओ अने सुभाषितात्मक वचनोमी पण छटा आपवामां आवी छे। प्राकृत भाषाना अभ्यासिओ माटे आ एक सुन्दर अध्ययनने योग्य रचना छे।

ए मुख्य कथाना परिशिष्ट रूपे, एना पछी श्रीदेवचन्द्र सूरिनी रचेली पण एक कथा आपवामां आवी छे। देवचन्द्र सूरि ते सुप्रसिद्ध कलिकालसर्वज्ञ गणाता आचार्य हेमचन्द्रना गुरु छे। तेमणे पोताना पूर्वगुरु आचार्य प्रद्युम्नसूरिरचित 'मूलशुद्धि प्रकरण' नामना प्राकृत ग्रन्थ उपर विस्तृत टीकानी रचना करी छे। ए टीकामां उदाहरण रूपे अनेक प्राचीन कथाओनी संकलना करी छे, तेमां प्रस्तुत 'नम्मयासुन्दरी' अर्थात् नर्मदासुन्दरीनी कथा पण प्रसंगवश, संक्षेपमां आलेखी छे। देवचन्द्र सूरिनी आ रचना लगभग २५० जेटली गाथामां ज पूरी थाय छे। पण कथागत मूळ वस्तुनुं परिज्ञान मेळववा माटे आ रचना पण बहु उपयोगी छे। खरी रीते महेन्द्रसूरि वाळी कथानो मूलाधार आ देवचन्द्र सूरिनी ज रचना होवानो संभव छे। देवचन्द्र सूरिना अन्तिम उल्लेख प्रमाणे नर्मदासुन्दरीनी मूळ कथा वसुदेवहिंडी नामना प्राचीन कथाग्रन्थमां गूंथेली छे अने तेना ज आधारे देवचन्द्र सूरिए पोतानी रचना करेली छे।

देवचन्द्र सूरिनी कृति पछी जिनप्रभ सूरिए अपभ्रंश भाषामां रचेली 'नम्मयासुन्दरि सन्धि' नामनी कृति मुद्रित करवामां आवी छे। आ कृति अपभ्रंश भाषाना अभ्यासनी दृष्टिए तेम ज नम्मयासुन्दरीकथागत वस्तुना तुलनात्मक अध्ययन करवानी दृष्टिए उपयोगी थाय तेम छे।

ए ज रीते, ते पछी मेरुसुन्दर गणिए प्राचीन गुजराती गद्यमां लखेली 'नर्मदासुन्दरी कथा' पण मुद्रित करवामां आवी छे। मेरुसुन्दर गणिए 'शीलोपदेशमाला' नामना प्राचीन प्राकृत ग्रन्थ उपर, प्राचीन गुजराती भाषामां बहु ज विस्तृत बालावबोध नामनुं विवरण लख्युं छे जेमां आवी अनेकानेक प्राचीन कथाओ आलेखित करवामां आवी छे। प्राकृत मूल कथाना अध्ययन अने विवेचनमां उपयोगी होवाथी आ रचना पण अहीं संकलित करवामां आवी छे।

एम २ प्राकृत रचना १ अपभ्रंश भाषारचना, अने १ प्राचीन गुजराती गद्य रचना—मळीने ४ कृतिओनो आ सुन्दर संग्रह सिंघी जैन ग्रन्थमालाना ४८ मा मणिना

रूपमां अभ्यासिओना करकमलमां उपस्थित करवामां आवे छे। आशा छे के ग्रन्थमालाना अन्यान्य ग्रन्थरत्नोनी माफक आ संग्रह पण आदरणीय थशे ज।

अन्तमां विदुषी कुमारी प्रतिभा त्रिवेदिए प्रस्तुत संग्रहना संपादन माटे जे परिश्रम उठाव्यो छे ते माटे एमने मारा हार्दिक अभिनन्दन आपुं छुं अने साथे शुभाशीर्वाद पण आपुं छुं के ए पोतानुं थीसीस पूर्ण करी तेने प्रकट करवा जेटलुं सामर्थ्य अने सुअवसर प्राप्त करे।

भारतीय विद्याभवन मुम्बई
—[ता. ५ १ ६०]— —मुनि जिनविजय

सिरिमहिंदसूरिकहिया

नम्मयासुंदरीकहा

[पत्थावणा]

†जयइ भुवणप्पईवो[1] सयहं जस्स नाणपुन्नाए ।
लक्खिज्जइ भवभवणे करुच्चयसंभम परुं[2] ॥ १ 5
भत्तिरयनमस्सुरवरमणिरयणकिरीडकोडिकोडीहिं ।
मसिणीकयपयपीढा जयंति तित्थेसरा सव्वे ॥ २
उवसग्गपरीसहसमुवाहिम्मी वाहिम्मी तिहुअणस्स ।
एगेण जेण विजिया सो जयउ जिणो महावीरो ॥ ३ 10
निम्महियमयणकरिणो कुमयकुरंगप्पयारनिट्ठवणा ।
सव्वे मुणिवरसीहा हुंति सहाया सया मज्झ ॥ ४
काउ सरस्सईए सरणं हरण समत्थविग्घाणं ।
वोच्छामि नम्मयासुदरीऍ चरिय मणभिराम ॥ ५
भणियं चिय फुडमेय विसुद्धबुद्धीऍ पुव्वपुरिसेहिं ।
तह वि य गुणाणुराया ममावि मणमुज्जमो जाओ ॥ ६ 15
बहुसो वि भममाण सुणिज्जमाण पि धम्मियजणस्स ।
कन्नरसायणमेयं एगंतसुहावह होइ ॥ ७
गुणवन्नणेण उत्तमजणस्स झिज्झंति असुहकम्माइं ।
उवसमइ दाहमगे झगतो चदकिरणोहो ॥ ८
सुयपुव्व पि सुणिज्जउ सुहयरमेयं महासईचरिय । 20
होइ चिय विसहरणो मंतो कन्नसु पविसंतो ॥ ९
उत्तमकुलप्पसूया निम्मलसम्मत्तनिच्चलसुसीला ।
असुणिमिसमणधम्मा न वन्निज्जा कह णु एसा ॥ १०
ता होऊण पसन्ना समागमज्झत्थमाणसा सुयणा ।
निसुणेह पावहरणं चरियमिणं मे भणिज्जंतं ॥ ११ 25
अह जाया उवूढा चत्ता य समुद्दमज्झदीवम्मि ।
जहपिउणो य मिलिया पुणो वि जा सा जहा तत्तो ॥ १२

---

† The Ms. begins with ॥ ६० ॥ ॐ नमो वीतरागाय ॥

Wherever the text is corrected the original readings of the Ms. are noted in the foot-note— १ °प्पईवो. २ परुं ... °उणा. ४ °सुंदरी°

महेन्द्रसूरिकृत नम्मयासुन्दरीकहा की प्राचीन प्रतिका अन्तिम पत्र

सिरिमहिंदसूरिकहिया

नम्मयासुंदरीकहा

[पत्थावणा]

†जयइ भुवणप्पईवो[1] सवन्नू जस्स नाणरुन्दाए ।
लक्खिज्जइ भवभवणे कालत्तयसंभवं वत्थुं[2] ॥ १

अविरयनमंतसुरवरमणिरयणकिरीडकोडिकोडीहिं ।
मसिणीकयपयवीढा जयंति तित्थेसरा सव्वे ॥ २

उवसग्गपरीसहसत्तुवाहिणी वाहिणी तिहुयणस्स ।
एगेण जेण विजिया[3] सो जयउ जिणो महावीरो ॥ ३ 10

निम्महियमयणकरिणो कुमयकुरंगप्पयारनिट्ठवणा ।
सव्वे मुणिवरसीहा कुणंतु सहाया सया मज्झ ॥ ४

काउ सरस्सईए सरणं हरणं समत्थविग्घाणं ।
वोच्छामि नम्मयासुंदरीऍ चरियं मणभिरामं ॥ ५

भणियं चिय कुसलेहिं विसुद्धबुद्धीऍ पुव्वपुरिसेहिं ।
तह वि य गुणाणुराया ममावि भणणुज्जमो जाओ ॥ ६ 15

बहुसो वि भण्णमाणं सुणिज्जमाणं पि धम्मियजणस्स ।
कन्नरसायणभूयं एगंतसुहावहं होइ ॥ ७

गुणरयणेण उवसमजणस्स झिज्झंति असुहकम्माइं ।
उवसमइ दाहभंगे लग्गंतो चंदकिरणोहो ॥ ८

सुयपुव्वं पि सुणिज्जउ सुहयरमयं महासईचरियं । 20
होइ च्चिय विमहरणो मणो कन्नेसु पविसंतो ॥ ९

उत्तमकुलप्पसूया निम्मलसम्मत्तनियलसुसीला ।
अणुचिन्नसमणधम्मा न वयणिज्जा कह णु एसा ॥ १०

ता होऊण पसन्ना समाणसज्झायमाणसा सुयणा ।
निसुणह पावहरणं चरियमिणं मे भणिज्जंतं ॥ ११ 25

जह जाया ठविया पत्ता य ससुरमन्दिरम्मि ।
पुडपिउणो य मिलिया पुणो वि पुत्ता जहा तत्तो ॥ १२

---

† The Ms. begins with ॥ ६० ॥ ॐ नमो वीतरागाय ॥

Wherever the text is corrected the original readings of the Ms. are noted in the foot-note— 1 ॰प्पईवो. 2 वत्थं 3 विजया. 4 बहुविह॰

अकलंकियधम्मगुणा बहुरयणम्मि सह चिरं सुत्था ।
मोयाविया य पिउणो मिलेण गया य सुरगेहं ॥ १३

सोऊण मयं पुरिसं सुहरिसहरिस्स पायमूलम्मि ।
निक्खंता संपत्ता कमेण तह देवलोगम्मि ॥ १४

5 सयलं कहगमेयं कयव इत्थ पत्थुयपबंधे ।
संखेव-वित्थरेण पइक्खरं व निसामेह ॥ १५

*

[महेसरदत्तमाया-रिसिदत्ताजम्मवण्णणा]

अत्थि सरिसेसवणगामागरनगरनिवहरमणीओ ।
नामेण मज्झदेसो महिमंडलम [प १A] ज्झो देसो ॥ १६

10 जत्थ –

गामा नगरायंति नगराणि यं देवलोगरूवाणि ।
दट्ठूण व संतोसा लच्छी सयमेव अवयरिया ॥ १७

आवासियाहिं निच्चं पए पए सत्थवाहसत्थेहिं ।
एयं विसममरन्नं एयं ति न नज्जइ विसेसो ॥ १८

15 तत्थऽत्थि पुरं पवरं धणधन्नसमिद्धलोयसंपुन्नं ।
नामेण रहमद्दणं पहुमोयं अणयपेहिं ॥ १९

जिणमंदिरेसु लच्छी अपवरयणपईवनहेसु ।
पयो पिच्छइ लोओ तयं व मायेइ सुरलोयं ॥ २०

सासे जत्थ विसालो सुयणो व सच्चवओ पयागम्मो ।
20 दीसंतो दूराओ भयंकरो वेरिवग्गस्स ॥ २१

निसिपडिबिंबियतारा नीलमणिपवणियं च दिवसम्मि ।
गयणंगणं व रेहइ समंतओ खाइया जस्स ॥ २२

कणयमयंकणयसायो पासाया गयणमणुगया जत्थ ।
रेहंति सुरवरा इव अच्छरसारिच्छपुत्तलिया ॥ २३

25 सुयणो सरलसहावो परोवयारी कयत्थओ धीरो ।
निवसइ जत्थ सुसीलो सज्जणलोओ सया सुहओ ॥ २४

ससिनिम्मलसीलाओ लज्जाविणयविणयकलियाओ ।
जत्थ वरंगणाओ परंगणाई वि न पासंति ॥ २५

---

1 ल. 2 'कार्यं कार्यं यत्काइज्जं' 3 पवणणं. 4 'यग्गा' 5 'णयणायाः 6 'जुहड' 7 'चउगो. 8 सुरगो 9 अर्थगमयो 10 अरपवाई 11 वर्जति.

अकलंकियधम्मगुणा बहुरदीवम्मि वह चिरं वुत्था ।
मोयाविया य पिउणो मिच्छेण मया य कुलगेहं ॥ १३

सोऊण मए पुरिमं सुरप्पियरिसिस्स पायमूलम्मि ।
निक्खंता संपत्ता कमेण तह देवलोगम्मि ॥ १४

सयलं कहागमेयं वच्छ इत्थ पत्थुयपबंधे ।
संखेव-वित्थरेण पउत्थं तं निसामेह ॥ १५

*

[महेसरदत्तमाया-रिसिदत्ताजम्मवण्णणा]

अत्थि सरिसेलकाणणगामागरनगरनिवहरमणीओ ।
नामेण मज्झदेसो महिमंडलम्मि [प. १A] रम्मो देसो ॥ १६

जत्थ –

गामा नगरायंते नगराणि य देवलोगसरिसाणि ।
दट्ठूण य संतोसा लच्छी सयमेव अवयरिया ॥ १७

आवासिएहिं निच्चं पए पए सत्थवाहसत्थेहिं ।
एयं विसमनरदं एयं ति न नज्जइ विसेसो ॥ १८

तत्थऽत्थि पुरं पवरं धणधन्नसमिद्धलोयसंजुत्तं ।
नामेण पउमाण पवरुमोदं जणवएहिं ॥ १९

जिणमंदिरेसु लच्छी भवणवरपवरगीयनट्टेसु ।
जणो पिच्छइ लोओ तयं च मायेइ सुरलोयं ॥ २०

साले जत्थ विसालो सुयणो इव सम्मओ परग्गामो ।
दीसंतो दूराओ भयंकरो वेरियगणस्स ॥ २१

निसिपरिहिंडियचोरा सीलावयणपथियं च दिवसम्मि ।
भयपयंगयं[१] च रेहइ समंतओ खाइया जस्स ॥ २२

कणयम्मि मणिपसाया पासाया गयणमणुमग्गा जत्थ ।
रेहंति सुरघरा इव अच्छरसालिंगपुत्तलिया ॥ २३

सुयणो सरलसहावो परोवयारी कयण्णुओ धीरो ।
निवसइ जत्थ सुसीलो महाणलोओ सया सुहओ ॥ २४

ससिनिम्मलसीलाओ लज्जाविणयविणयकलियाओ ।
जत्थ वरंगणाओ परंगणाइं[१०] वि न पासंति[११] ॥ २५

१ P. १ °मार्गे मार्गे सत्थवाह° २ भयभयं. ३ °नामा ५ °पुत्तलिया.
६ °मुहओ ७ °वहुओ. ८ सुहओ ९ वरंगणाओ १० आयणाई ११ पसंति.

पवासमहद्दोवरिं, निचलनयणा पेच्छमाइ पलोइउ पवत्ता । त दट्ठूण विम्हिय हियएण भणिय रुद्ददत्तेण–'अहो छमपेच्छणयार्थ वयस! रम्मया, जेण गयमंगणामयाउ अच्छराओ नियच्छति ।' तओ हसिऊण भणिय कुबेरदत्तेण–'किं दिट्ठाओ तए कहिंचि अच्छराओ जेण पचमियाणसि ।' इयरो भणइ–'न दिट्ठाओ, किंतु अत्थि सणप्पवाओ जहा "ता[ओ] अणमिसनयणाओ[5] हवति" । अणमिसनयणाओ एयाओ समासमद्दोवरिं चिट्ठंति, तेण भणामि अच्छराओ । न एरिसं रूवं माणुसीए संभवइ ।' पुणो पवुत्त कुबेरदत्तेण–

'गामिल्लओ कलिज्जसि अदिट्ठकल्लाणओ य त मित्त ! ।
जो माणुसिं[1]देवीण रूवविसेसं न लक्खेसि' ॥ ४३

एसा इब्भस्स सुया नयरपहाणस्स उसभदत्तस्स ।
जा देवीसकप्प संपावइ माणसे तुज्झ ॥ ४४ 10

एसा य विसालच्छी लच्छी य सुदुल्लहा अहण्णाण ।
जम्हा न चेव लब्भइ कुलेण रूवेण विद्दवेण ॥ ४५

जो जिणसासणभत्तो रमइ चिय इमीइ अणयस्स ।
सो सवणो असवणो वा लहइ इम नम्मदा कहवि ॥ ४६ 15

वत्थेहिं भूसणेहिं य कीरइ न गुणो इमीएँ देहस्स ।
भुवण उज्जोयती छाइज्जइ केवल कत्ती ॥' ४७

एय निसामयंतो स चेय पुणो पुणो पलोयंतो ।
सहस चिय रुद्ददत्तो विद्धो मयणस्स पाणेहिं ॥ ४८

परिभाविउ पवत्तो 'को णु उवाओ इमीएँ ला[२][3]म्मि ? । 20
न हु धारेउं तीरइ जीयं विरहम्मि[4] एयाए ॥ ४९

पेतु वत्ता न तीरइ एसा महयद्दयरेण महया वि ।
सावयजणस्स भत्ते संपइ रायम्मि जीवंते ॥ ५०

जइ मग्गिऊण पुव्वं अलहंतो सावयत्तणं काइं ।
तो कंमिउ चिय काउं नियमा इच्छं ने साहिस्सं ॥' ५१ 25

[रुद्ददत्तस्स कवडसावगधम्मांगीकरण]

एवमणेगहा परिचिंतिऊण नत्थि उवायांतरमन्न ति कयनिच्छओ गओ धम्मदेवसूरिसमीवं । कयप्पणामेण पुच्छिओ धम्म । साहिओ तेहिं साहुधम्मो । पसंसिओ तेण, भणियं च–'अहो दुक्करकारया भगवंतो नहिं एवंविहो कायर

[1] माणुस° [2] कवर्दमि [3] विरहंमि [4] दुक्ख [5] व [6] साहिस्स. [7] कयावेर°.

परितुवरियं निबंधछठ्यं', अंडकियाओ वंधाओ हंसगमणलीलाए। किं बहुणा? उक्कठियाए व सयंभमालिंगिया एसा जोव्वणलच्छीए।

तओ –

वयो वयो वड्ढइ इसमदत्तसुया नयरलच्छी।
वयो पोसिरमासस्सयं व फुल्लपुया वंति॥ ३६

विहवमयाओ चेव रूवमयाओ बहुवंमयाओ।
आयत्ति तं अणेगे कन्नवियया उसभदत्तस्स॥ ३७

पडिभणइ उसभदत्तो–'तुम्मे सव्वे वि सुंदरा चेव।
किंतु मम एस नियमो समाणधम्मस्स दायव्वा॥ ३८

जं विसरिसधम्माण न होइ परिणामसुंदरो नेहो।
नेहं विणा विवाहो आजम्म [illegible] परिदाई॥' ३९

जो जो वरेइ कन्नं तं तं इन्मो निवारए एवं।
नं य कोइ नियं धम्मं कन्नाकज्जे परिच्चयइ॥ ४०

[रुद्ददत्तस्स रिसिदत्तोवरि रागाणुभावो]

अन्नया समागओ तत्थ [illegible][नयर]वासी महेसरधम्माणुरत्तचित्तो महग्घभंडभरियबहुवाहणेहिं रुद्ददत्तो सत्थवाहपुत्तो। आवासिओ समाणगुणधम्मस्स कुबेरदत्तस्स मित्तस्स भंडागारसालासु। तया य [प १४] तम्मि नयरे लोयाणं कोइ महामहो वट्टइ। तत्थ य सविसेससुइछभूसणनेवत्थो सयलो वि जणो उवभमइ। कोउहल्लोयणलोलयाए रुद्ददत्त-कुबेरदत्ता एयस्स हट्टे निविट्ठा नायरजणविहियाइं निहालिंति पवत्ता।

अवि य –

कत्थइ नच्चंति नडा कत्थइ कुव्वंति रासए तरुणा।
गायंति चच्चरीओ [illegible]॥ ४१

कह वि रंगे पिच्छणयकिलिपमाणसा लोया।
[illegible] इमो तत्थ विपरंति॥ ४२

एत्थंतरे मणिरयणकिरणुज्जोयपभूरिभूसणाभरणा सुवन्नरंभवसंभसुयने [illegible] समाणवयवेसाहिं सहियाहिं किंकरीहिं य परिवुडा समागया उसभदत्तस्स रिसिदत्ता। सा य तम्मि नयरसंगाहे पलोयणोमासमलद्धमाणी समतच्छा

१ [illegible] २ [illegible] ३ 'तम्मे ४ 'वड्ढ' ५ [illegible] ६ [illegible] ७ मि ८ [illegible] ९ [illegible] १० [illegible] ११ सुवन्न' १२ [illegible] १३ परिवुडा

पयासमहड्डोवरिं, निच्चलनयणा पेच्छमाइ पलोइउ पवत्ता । त दट्ठूण विम्हिय
हियएण भणिय रुद्ददत्तेण–'अहो छम्मपेच्छणयाण वयस ! रम्मया, जेण
गयणंगणागयाउ अच्छराओ नियच्छति ।' तओ हसिऊण भणियं कुबेरद
त्तेण–'किं दिट्ठाओ तए कहिंचि अच्छराओ जेण पच्चभियाणसि ।' इयरो
भणइ–'न दिट्ठाओ, किंतु अत्थि जणप्पवाओ जहा "ता[ओ] अणिमिसनयणाओ 5
हवंति" । अणिमिसनयणाओ एयाओ समासमहड्डोवरिं चिट्ठंति, तेण भणामि
अच्छराओ । न एरिस रूवं माणुसीए संभवइ ।' पुणो पवुत्त कुबेरदत्तेण–

'गामिल्लओ कलिज्जसि अदिट्ठकल्लाणओ य त मित्त ! ।
जो माणुसि[1]देवीण रूवविसेस न लक्खेसि[2] ॥　　४३
एसा इब्भस्स सुया नयरपहाणस्स उसभदत्तस्स ।　　10
जा देवीसकप्प संपावइ माणसे तुज्झ ॥　　४४
एसा य विसालच्छी लच्छी व सुपुण्ण्णा अइमाणं ।
जम्हा न चेव लब्भइ कुलेण रूवेण विहवेण ॥　　४५
जो जिणसासणभत्तो रेवइ चित्तं इमीइ जणयस्स ।
सो सवणो अवणो वा लहइ इम नन्नहा कहवि ॥　　४६ 15
मन्नेहिं भूसणेहि य कीरइ न गुणो इमीएँ देहस्स ।
सुवण्ण उज्जोयती छाइज्जइ केवल कती ॥'　　४७
एय निसामयतो स चेय पुणो पुणो पलोयतो ।
सहस त्ति रुद्ददत्तो विद्धो मयणस्स बाणेहिं ॥　　४८
परिभाविउ पवत्तो 'को णु उवाओ इमीएँ ला[भ ?]म्मि ? । 20
न हु पारेउं तीरइ जीय विरहम्मि[3] एयाए ॥　　४९
घेत्तुं बला न तीरइ एसा महच्चरयरेण महया वि ।
सावयजणस्स भवे संपरायम्मि जीवंते ॥　　५०
जइ मग्गिऊण पुव्व अलहंतो सावयत्तणं काहं ।
तो लहिउ पि कहउ नियमा इच्छं न साहिस्सं ॥'　　५१ 25

[रुद्ददत्तस्स कवडसावगधम्मंगीकरण]

एवमणेगहा परिचिंतिऊण नत्थि उवायंतरमेव त्ति कयनिच्छओ गओ
धम्मदेवसूरिसमीव । कयप्पणामेण पुच्छिओ धम्म । साहिओ तेहिं साहुधम्मो ।
पसंसिओ तेण, भणियं च–'अहो दुक्करकारया भगवंतो जेहिं एवंविहो कायर

1 माणुस° 2 लक्खेसि 3 विरहमि 4 हुक्त ५ व 6 सारिस्स 7 दृढावचिर°,

जणहियपरओवयारओ गुरुगुणरो' अंगीकओ समयधम्मो । कया पुण होही सो अवसरो जया अम्हे वि परिसं धम्ममणुचरिस्सामो ? संपयं पुण करेह मे गिहत्थोचियधम्मोवएसेणाणुग्गहो' त्ति । साहूहिं भणियं –

'जिणपूया मुणिभत्ती जीवाइपयत्थसवणसद्दहणं च ।
पालणमणुव्वयाणं सावया(सावय ?) गहियम्मत्तचमिणं ॥' ५२

सोऊ सवित्थरमिणं संसियसंवेगसाहसो – 'भंते ! ।
इय जं छडियव पव्वं मे अज्ज धम्मफलं ॥ ५३

मायाँ पिया य तुम्मे वाई परमोवयारिणो मज्झ ।
जेहिं इमो आइट्ठो' मोक्खपहो दंसिओ मज्झ ॥' ५४

10 इमेयं जाणिऊण संविग्गं, सिक्खाविय साहूहिं देसगुणमंदपविहाय, पच्चक्खाणपुव्वं सयलं सावयसमायारं । तओ सो सविसेसंदंसियसंवेगो विसिट्ठम रोवयारपहाणिच्चं तहा काउमारद्धो जहा सव्वेसिं सावयाणं पहाणबहुमाणमायणं' संवुत्तो ।

अवि य –

15 'धम्मो महाणुभावो जूण आसन्नसिद्धिगामि त्ति ।
कस्सेरिसो दुरप्पो (उदग्गो ?) समुज्जमो धम्मकिरियासु ॥' ५५

जयमयबमियप्पेरा उदारया सुद्ध दाणधम्मम्मि ।
जिणसंघपूयणीयासु भव उवाओऽज्जमं गणइ ॥ ५६

एवं पवयणसो सगोरवं सावयाहिं दीसंतो ।
20 सो रुद्ददत्तसड्ढो जाओ सुवियक्खणो धम्मे ॥ ५७

पव्वेसु सयत्तसंवं पूयइ वत्थाइएहिं वत्थूहिं ।
पडिलामेइ सुविहिए दिणे दिणे पत्तमएणेव ॥ ५८

जिणसाहुसावयाणं चरियाइं विम्हिओ निसामेइ ।
सिंगारकहासु पुणो न देइ कन्नं खणद्ध पि ॥ ५९

25 अवि पाविऊइ ललिय सुसंजयाणं सुसावयाणं पि ।
निउणेहिं पेरिएहिं वि न तस्स मायापवण्णस्स ॥ ६०

एवमाराहियसम्मपसुहसावयहिययस्स रुद्ददत्तस्स वोलिया गिम्ह[५.१A] पाउसा । समागओ निप्पन्नसयलसस्सासासियासेसकासयजणो विमसियकमल संडमंडियमहिमंडलो पउत्थमहियामासईपसूयपसरवासुसुगन्धआगमणोहरो सर

1 दुरप्पयारो 2 °पहाण° 3 गओ 4 दुक्खो 5 °सविसेससेसंयं° 6 °पायणं 7 °एण° 8 °कथाय. 9 वत्थूहिं

पसमओ । तमोत्तोइऊण पुच्छिओ रुद्ददत्तेण उसभदत्तो–'समागओ मम जणयाएसो । तुम्हाणुन्नाए गच्छामि संपयं सद्वाणं ।' इयरेण भणियं–'उचियं समीव पट्ठियस्स फ्रो विग्घं करेइ ? तहा वि अम्ह धम्मे पेच्छा-ऽऽसोएसु चेइय मवणेसु समम्मुयभूयाओ महाहियामहिमाओ कीरंति । ताओ ताव पेच्छाहि, तओ वहिच्छमणुचेट्ठेज्जासि ।' तेण भणियं–'असाइसह । एअमाइसं ५ तेहिं भवतेहिं कओ महंतो ममाणुग्गहो । कहमण्णहा अम्हारिसाणमेरिसमहसव-दंसणं ति ।

धन्नो धन्नयरो हं साहम्मियसीह ! अज्ज मह सुमए ।
ज भवणनाहमहिमा निवेइया धम्मतिसियस्स ॥ ६१
अह कहवि न साहिंतो गमणामिप्पायमप्पणो तुज्झ । 10
मन्ने कल्लाणाणं अहो अहं वंचिओ होंतो ॥ ६२
सा सा पभवइ बुद्धी बुत्ति सहाया वि तारिसा नूणं ।
जारिसया संपत्ती उवट्ठिया होइ पुरिसस्स ॥' ६३

इच्चाइणी कम्मसुहावहेण वयणविन्नासेणोसभदत्तस्स हिययमाणंदिऊण भन्चिठं पवत्तो रुद्ददत्तो जाव अट्ठाहियामहिमा संपत्ता । 15

तत्थ य ता पढमं चिय उक्कंठियमाणसेहिं सव्वेहिं ।
पउणीकय सम्मग्गा जिणिंदभवण तुरंतेहिं ॥ ६४
पढम जिणबिंबाइं विहिणा विमलीकयाइं सयलाइं ।
पवरेहिं भूसणेहिं पसाहियाइं जहाजोग ॥ ६५
ससहरपहरकोइं बहुवन्नविचित्तचित्तरमणिज्जं । 20
मणितारियामिरामं पविउलविरमोत्तिओऊलं ॥ ६६
नाणाविहवत्थेहिं पट्टसुयदेवदूसपमुहेहिं ।
कयउल्लोय लोयं विम्हावितं समंतेण ॥ ६७
एयारिसमइरम्म अमरविमाणं व कयजणपमोअं ।
इय विहियं जिणभवण सहावरम्म पि अइरम्म ॥ ६८ 25
तो रइया वरपूया जिणाण कुसुमेहिं पवरकेहिं ।
बहुविहवन्नविसारा महुयरझंकारसोहिल्ला ॥ ६९
तओ कुसुमंकुडीओ पडिमाण कयाउ परिमलड्ढाओ ।
कप्पूरागरुसाराउ धूयवडियाउ ठवियाओ ॥ ७०

१ तस्मा° २ सत्थवा° ३ °समीव ४ समभूय° ५ तीओ ६ पमाइ्समसेहिं ७ मण्णमाओ ८ इच्चाण. ९ पवत्तो १ जिणिंद° ११ पसाहियाइं १२ बमा° १३ कुसुमेहिं १४ °विहउ° १५ °झंकार. १६ कुसुम°

सहत्य विरइयाइं[1] फुल्लपराय निचियरूवाइं।
उद्धीकयपेच्छयमणमुहराइं[2] ममरोलिमुहलाइ ॥ ७१

महुयमएहिं महुमयिणहिं महुमस्थि [प १ B]एहिं कयघोस।
रइयं जिणाय पुरओ सुट्ठ पराय पलिविहाणं ॥ ७२

राजगमोयगपमुहेहिं[3] विविहमक्खएहिं रइयसिहराइं।
पालाइं विमालाइं पुरओ पेमाइं दिमाइं ॥ ७३

तह नालिकेरखज्जूरमुद्दियाअंबकंपपमुहाइं।
विविहाइं वणफलाइं पुरओ दिमाइं धम्मेहिं ॥ ७४

इय निम्माये रम्मे पूयाबलिवित्थरे महस्यम्मि।
हरिसुल्लसियसरीरो मिलिओ लोगो तओ बहुओ ॥ ७५

गुमुगुमियगहिरमद्दलं, वासंतकुसुमपडलं;
कीरंतकरडरवरटं, पयडपडुपटहपडु(ड?)म्पडं;
गज्जंतसंखकाहल, समुच्छलंतकमालकोलाहल;
मवियजणपावरयपमज्जणं, पारद्धं सयणनाहस्स मज्जण;
चित्तेहिं विचित्तेहिं, उद्दामधुत्तेहिं;
संगायघोसेहिं, गंभीरघोसेहिं;
पच्छा नियम्बेहिं, त[ ]महेहिं;
पमुइयलोएहिं, साहम्मियलोएहिं।

जयजणियमहातोसो पए पए नयमाणनरगेओ।
मज्जणमहो पयट्टो तिलोयनाहस्स वीरस्स ॥ ७६

कत्थइ विविहभूसणमासिणीओ नच्चंति विलासिणीओ;
कत्थइ गायंति मंगलगीयाइं सोवासिणीओ;
कत्थइ लीलाए दिंति तालियाओ कुणंति रासयं कुलबालियाओ[4];
कत्थइ मंदमदप्पणविरीओ सहयाओ दिंति चच्चरीओ।

एव महुयज्जो बहुविच्छड्डो जणस्स सुहजणओ।
विहिविहियसयलकिच्चो जिणनाहमहूसवो जाओ ॥ ७७

कयसयलदिवसकिच्चो काऊण य जामरं महापूयं।
परमड्डियकारी परितुट्ठो वासरे बीए ॥ ७८

साहम्मियाण पूय करेइ तोसेइ[11] गायणाईए।
समण-समणीण विहिणा विहेइ पडिलाहणं हिट्ठो ॥ ७९

---

१ विरइयाइ २ °मुहय ३ °पमुहेहिं ४ निम्माय. ५ °घोस° ६ तह ७ वाइ ८ °मुहेहिं ९ वाइंति १० °बालियाओ ११ निम्माण° १२ तोसेइ

एव सत्त तिहीओ विहियाओ अट्ठमे दिणे इब्म ।
विन्नवइ रुद्ददत्तो भालयलनिहियकरमउलो ॥ ८०
'तुम्मे घम्मसउण्णा महाफ़ल धम्मनीधिय तुम्ह ।
जे वीयरायमहिम करेइ एव महासत्ता ॥ ८१
ता मह कुणह पसाय अट्ठममहिमं करेमि जइसत्ती ।
तुम्हाण पसाएण करेमि नियजीविय सहलं ॥' ८२
परिवड्ढियपरितोसो इब्भो पडिभणइ – 'होउ एवं ति ।
गोरवठाण अम्ह तुमाउ नन्नो मये होइ ॥ ८३

किंतु –

अट्ठसय दव्व[ ]लग्ग मोल्लेम परमपूयाए ।
तत्तो सयसयगुड्डी जाया सवासु पूयासु ॥ ८४
तं कुणसु महासत्ति सेसं अम्हाण पच्छ ! साहेख ।
तं चिय सफल वित्त जं वयइ तुम्ह साहेज्जे ॥' [१ ४ A] ८५
इय वुत्तो सो' वुत्तो ईसि हसंतो भणेइ त इब्म ।
'त होसु सुप्पसन्नो तो सव सुंदरं होही ॥' ८६ 15
इय भणिय गए तम्मी 'तओ वि अभो सुसावगो कत्तो ?' ।
इब्भस्स मणे फुरियं 'दिअउ एयस्स रिसिदत्ता ॥' ८७
इय चिंतिऊण तुरियं पुच्छइ सूरिं परेण विणएण ।
'भयव ! अहिणवसड्ढो पडिहासइ केरिसो तुम्ह ? ॥' ८८
इय पुट्ठो भणइ गुरू – 'छउमत्था किं वय वियाणामो । 20
भणियमेत्तं तुम्मे जाणामो तत्तिय अम्हे ॥ ८९
दीसइ अमममसरिसो सव्वो एयस्स धम्मववहारो ।
परमत्थं पुण सावय ! मुणंति सव्वण्णुणो चेव ॥' ९०
अह अट्ठमम्मि दिवसे पूया सव्वायरेण तेण कया ।
तीयपच्चउविहा साओ सत्तसु पूयासु जावइओ ॥ ९१ 25
दीणारक्रयसिहाई यत्थाई सत्थिएसु ठवियाई ।
जाई दहूण पुणो सव्वो वि हु विम्हयं पत्तो ॥ ९२

[रुद्ददत्तस्स रिसिदत्ताए सह परिणयण]

अइविम्हिएण तत्तो इब्भेण सुसावया समाहूया ।
भणिया य – 'एस तुम्हं नवसड्ढो केरिसो भाइ ? ॥' ९३ 30

---

१ कुणसु. २ सम्मीसु. ३ तत्त ४ सा. ५ रिसिदत्तो. ६ °पउविह.

तत्तो पसत्थदिवसे संमासियसयलपरियणं सयलं ।
ससुरकुलाणुण्णाओ संपत्तो नियपुरामिमुहो[1] ॥ १०९
संमासिया य पिउणा रिसिदत्ता नेहनिब्भरमणेण ।
'सयलसुरमणुमूए सम्मत्ते निच्चिया होज ॥ ११०
चियबद्धमसज्झाए पवज्जाणम्मि उज्जुया होज्ज । 5
सुद्दे सुसीलविणीया दयालुया सव्वजीवेसु ॥ १११
जह सायरमज्झगओ पोयं मोत्तूण मदबुद्धिल्लो ।
अवरम्मि विलग्गंतो होइ नरो दुहसयाभागी ॥ ११२
तह भवसायरमज्झे जिणमयपोयं सुदुल्लहं मुत्तुं ।
मा मुंचसु जेण न होसि भायणं दुक्खलक्खाण ॥' ११३ 10
एवं बहुप्पयारमणुसासिऊण [-- ------ ---] ।
अइवषिया(?) सपरियणेणोसमदत्तेण रिसिदत्ता ॥ ११४
जामाउगो वि भणिओ – 'चिंतामणिकप्पसालसारिच्छं ।
जिणधम्मं मा मुंचसु कल्लाणपरंपराहेउं ॥ ११५
साहम्मिणि तुह एसा धम्मसहाओ इमीइ त होज । 15
सुद्धसम्मोहणाओ मा मुंचसु धम्मबोहित्थं ॥' ११६
इयरेण सो पवुत्तो – 'मरियं उयरं गुरूवएसेमं ।
दिट्ठ निसुणेसु पुणो अहयं काई समेयाहे ॥ ११७
मा कुण इमीए चिंत नासीभूमा इमा ममेयाणिं ।
तह काहामि जहेसा न सरइ करिणी[4] य विंझस्स ॥' ११८ 20
एवं कयसंमासो सहायसहिओ इमो[5] समुच्चलिओ ।
उचियसमएण तत्तो संपत्तो कूववद्धम्मि ॥ ११९

[रिसिदत्ताए ससुरगिहे गमण, सधम्मा परिब्भसो य]

चिरकालाओ मिलिओ उक्कंठियमाणसाण सयणाण ।
छणाई नेय गेण्हइ नाम पि जिणिंदधम्मस्स ॥ १२० 25
रिसिदत्ता वि हसिज्जइ जणमाणी पुव्ववंदणाईयं ।
जणएण विदिमाण भणिकंचणमवियपडिमाण ॥ १२१
सासुयं पिव भणिया सासु-नणंदाई सा वि पुणरुत्तं ।
'जइ चिट्ठसि अम्ह गिहे ता मुंचसु अप्पणो धम्मं ॥ १२२

१ °राभिमुहो २ सुद्धु. ३ °ज्झाए. ४ करिणि° ५ इमो ६ इमी. ७ °वद्धम्मि.

एगेण तस्स भणियं – 'अम्हे पुण पमायओ आसि ।
एयस्स सन्निहाणा संपइ सुस्सावया जाया ॥' ९४

अन्नेण पुणो भणियं – 'भगवइ ! सम्मावसावओ एसो ।
किं कंपि[ए]ण बहुणा न हु दुक्खे' पूसरी दुंति ॥ ९५

5 अन्नेण किं कयाई इथियरयस्स कीरए नाओ ? ।
पच्चासिन्नम सुयमं को फिर उज्जाअम्मं कुणइ ? ॥' ९६

इणाए कंपियाइ निसुणंतो सावयाण सोवोलें ।
नाओ कमासाये निच्छियचित्तो इमो धम्मो ॥ ९७

निप्पाइया य तत्तो परिमा अट्ठाहिया महामहिमा ।
10 धम्मेण तो तयंते निमंतिया सावया सव्वे ॥ ९८

सम्माणिऊण बहुहा सपुत्तसयणेण उत्तमक्खेण ।
सो भरहचक्की एव भणिओ सबहुमाण ॥ ९९

'उत्तमकुलप्पसूओ कम्माकम्मापम्मि सुदु कुसलो वि ।
विणयासणमत्तीए मज्झ साहम्मिओ' नाओ ॥ १००

15 जा जा कीरइ पूया उत्तमसाहम्मियस्स तुह अम्हे ।
सा सव्वा वि हु तुच्छा पडिहाय मज्झ चित्तम्मि ॥ १०१

ता परिगिन्हसु इन्हि कमारयणं इमं अणग्घेयं ।
सीसियसवस्स इमं अम्हाणं तह य उवयारं ॥' १०२

पडिभणइ भरहचक्को–'को नयणं' तुम्ह जगरा कुणइ ? ।
20 किं पुण मायाविये पुच्छिय पुत्त इमं कज्जं ॥' १०३

धम्मेण पुणो भणियं–'मा मिच्छालंबणं इमं अलियं ।
धम्मएण सामकज्जं अम्हा इह पेसिओ तेसिं ॥ १०४

एसो परमो लाभो एय एहुं न कासिही भणभो ।
परमार्थदी सच्छी सुहावहा कस्स नो होइ ? ॥' [प. ४B] १०५

25 'एवं' ति तेण वुत्ते कारियमिज्जेण हत्थतोणेण ।
सम्मे गणयविहिविहे विवाहकिच्चं निरवसेसं ॥ १०६

आर्णदियसयलजणो चिंते वीवाहमंगले हुट्ठो ।
हिययम्मि भरहचो संपुण्णमणोरहो' नाओ ॥ १०७

उत्तम्म वेव दियहे सपुरिक्खेसवंसिओ भणियं ।
30 तं रिसिदत्तासामं मभवो रज्जमं च ॥ १०८

---

१ हुलाणा. २ इह. ३ ईम्प ४ नवाहिया ५ सामहिम्मियामो. —६ जन्मणं.
७ हुर्ने ८ तीसिं ९ दुच्चे १ 'अच्चेतये.

निद्धम्मकुलप्पसूओ[1] पावो सो ताव तारिसो होउ ।
बालत्तगहियधम्मा धुत्तो कह पिच्छ रिसिदत्ता ॥ १२५

सव्वेसिंणं सा घरई[2] दिन्ना अम्हेहिं तस्स पावस्स ।
तहवि कुलागयधम्मो तीए न हु आसि मोत्तव्वो ॥ १२६

ता इत्थ इमं जुत्तं तीए उवरी न काइ कायव्वा ।
सा पुत्ति पि न जाया मया य सोएहिं दट्ठव्वा ॥ १२७

जो पुण तीसे उवरिं[3] काही अम्हाण सो वि तंबुलो ।
इय साहियम्मि तत्ते मा अम्ह को वि जप्पिज्जा ॥' १२८

किं बहुणा ?–

तह सा पत्ता वेरिं जह किर नगरायमंदरं सेसिं ।
लोयणदुगमेयं पि हु संजाय लोअणसयं च ॥ १२९

तओ 'जो पुव्विं गहियपाहुडे पइदियहं मम पउत्तिनिमित्तं पुरिसे पेसंतो सो संपइ मासाओ मासाओ वि न पेसइ' त्ति मुणियजणयकोवाइसया किंकायव्वमूढा कालं गमेउमारद्धा रिसिदत्ता, जाया य कालेण आवन्नसत्ता । तओ दूयपेसणेण भणिओ तीए ताओ–'कीसाइ तुम्हेहिं परिचत्ता ? । तुम्हेहिं चेव अहमत्थ मिच्छत्तपंके पक्खित्ता । ता खमसु मम एगमवराहं । नेहि ताव गिहं । तत्थ-ट्ठिया आएसकारिणी चिट्ठिस्सामि । अन्नं च सयाओ विलयाओ पढमं पिइगि-हेसु पसवंति, ता कह लोयायारमवायाओ न बीहेसि ? ।' इच्चाइ बहुहा भणिए [प. ५ B]य पडिभणियमिब्भेण–

'जप्पभिइ च्चिय तुमए धम्मो चत्तो जिणिंदपन्नत्तो ।
तप्पभिइ च्चिय अम्ह मया तुमं किमिह बहुएण ॥' १४०

सोऊण जणयवयणं दूरं परिहरिऊण हिययम्मि ।
जाया मणे निरासा संठवइ पुणो वि अप्पाणं ॥ १४१

जाओ कमेण पुत्तो बहुलक्खणसंगओ कणयगोरो ।
नियकुलगयणमियंको तुट्ठा दट्ठूण तं माया ॥ १४२

सोऊण सुयं जायं कयाइ तुसेज्ज मज्झ वि जणओ ।
इय पेसेइ तुरंती वद्धावयमागयं पिउणो ॥ १४३

रुट्ठेण सो पवुत्तो–'अवरस्स वद्धावओ तुमं होसु ।
अम्हाण नत्थि धूया रिसिदत्तानामिया कावि ॥' १४४

---

१ °च्छत्तओ २ जुत्ता ३ सव्वसिं° ४ गिरई ५ उवरी ६ सव्वि° ७ °कायव्व° ८ दूया ९ पत्तो १० जवेयं ११ मम

भत्तारवेसयाओ नारीओ होंति जीवलोगम्मि ।
जं किं पि कुणइ भत्ता ताओ वि कुणंति तं धम्मं ॥ १२३
अम्हाण वि धूयाओ जेयाओ संति सावयकुलेसु ।
ताओ सावयधम्मं कुणंति अम्हे न रूसामो ॥' १२४
5 एसो पुण वुत्तंतो रिसिदत्ताए वि महुणो सिट्ठो ।
तेणावि तओ भणियं दक्खिण्णनेहवयणेणं ॥ १२५
'इट्ठा सि मज्झ सुंदरि ! जीवियभूया सि सुणसु मह वयणं ।
सयणाणं लज्जाए न हु तीरइ पालिउं धम्मो ॥ [प ५ A] १२६
तुह कज्जे मए धम्मो परिचत्तो ताव एत्तियं कालं ।
10 मम कज्जेण पुणो तं न चयसि किं दिट्ठवेहा वि ॥ १२७
एयं परवसयस्स सव्वं पि समप्पियं मए तुज्झ ।
को जाणेइ किसोयरि ! को धम्मो सुंदरो नो वा ॥' १२८

तओ सा किंचि तस्स नेहाओ, किंचि सासुय-ससुरा[ण] भयाओ, किंचि लज्जाए, किंचि अप्पसत्तयाए पम्हुसिऊण जिणधम्मं परिचत्तजिण15सासणकिरिया तेसिं चेव अणुट्ठाणं काउमारद्धा ।

भणियं च –

किच्चेण [ए]स जीवो ठाविज्जइ उत्तमे गुणट्ठाणे ।
तीसाए चिय निवडइ किच्चे मिच्छत्तपंकम्मि ॥ १२९
जिणधम्ममयमसूयं काउ को रमइ तुच्छमिच्छत्ते ।
20 जइ ता पुव्वकयाइं न होंति कम्माइं पउराइं ॥ १३०
पुव्वज्जियपावरसा अमयं वमिऊण तेहिं दोहिं पि ।
हालाहलं महाविसमापीयं मूढचित्तेहिं ॥ १३१

[पीइगिहाओ रिसिदत्ताए संघपविच्छेओ, पुत्तजम्मं च]

अन्नदियह पउत्थे पियम्मि संघमेयमिच्छेण ।
25 सिट्ठं च जंपयाणं–'हद्धी मो ! तेण पुत्तेण ॥ १३२
कम्मातुममनिमित्तं सुसावगत्तं पयासियं तेणं ।
पेच्छह कह सयणस्संमो वि मोहिओ गूढहियएण ॥ १३३
धम्मच्छलेण छलिया अम्हे निउणा वि तेण पावेण ।
ता सव्वमियं जायं कुणाय वि होंति परिकुणा ॥ १३४

१ चरयाः. २ मैहुणेण. ३ तेण. ४ जस्स. ५ ण्णीयाः. ६ कम्माणि.

निद्दम्मक्कुलप्पसुओ[1] पावो सो ताव तारिसो होउ।
पारुपगहियधम्मा पुत्तो कह पिच्छ रिसिदत्ता॥　　१२५
सव्वम्मि सा वरई दिण्णा अम्हेहिं तस्स पावस्स।
तहवि हु लायपधम्मो तीए न हु आसि मोत्तव्वो॥　　१२६
सा इत्थ इमं जुत्तं तीए तत्तो न काइ कायव्वा।
सा पुत्त पि न जाया मया य सोहिं दट्ठूणा॥　　१२७
जो पुण तीसे सत्ति[2] काही अम्हाण सो वि संपुत्तो।
इय साहियम्मि तत्ते मा अम्ह को वि कुप्पिज्जा॥'　　१२८

किं बहुणा?–

तह सा पत्ता तेहिं जह किर नगराणमंतरं तेसिं।
जोयणदुगमेत्तं पि हु संजाय जोयणसयं च॥　　१२९

तओ 'जो पुव्विं गहियपाहुडे पइदियह मम पउत्तिनिमित्तं पुरिसे पेसंतो सो संपइ मासाओ मासाओ वि न पेसइ' त्ति मुणियजणयक्रोधाइसया किंकायव्वमूढा चर्ज गमेउमारद्धा रिसिदत्ता, जाया य कालेण आवन्नसत्ता। तओ दूयपेसणेण भणिओ तीए ताओ–'कीसाइ तुम्मेहिं परिचत्ता?। तुम्मेहिं चेव अहमत्थ मिच्छत्तपंके पक्खित्ता। ता खमसु मम एगमवराहं। नेहि ताव गिहं। तत्थ ट्ठिया आएसकारिणी चिट्ठिस्सामि। अन्नं च सव्वाओ विलयाओ पढम पिइगिहेसु पसवंति, ता कह लोयायारवायाओ न बीहेसि?।' इच्चाइ बहुहा भणिए [प.५ B] य पडिभणियमिम्मेण–

'जप्पभिइ चिय तुमए धम्मो पत्तो जिणिंदपन्नत्तो।　　20
तप्पभिइ चिय अम्हं मया तुम किमिह बहुएण॥'　　१४०
सोऊण जणयवयण सुइरं परिझूरिऊण हिययम्मि।
जाया मये निरासा संठवइ पुणो वि अप्पाण॥　　१४१
जाओ कमेण पुत्तो बहुसकलुणसंगओ कणयगोरो।
नियकुलजणियाणंदो तुट्ठा दट्ठूण त माया॥　　१४२ 25
सोऊण सुयं जायं कयाइ तूसेज्ज मज्झ जइ जणओ।
इय पेसेइ तुरंती बद्धावयमाणयं पिउणो॥　　१४३
इम्मेण सो पवुत्तो–'उयरस्स बद्धावओ तुम होसु।
अम्हाण नत्थि धूया रिसिदत्तानामिया कावि॥'　　१४४

---

१ °पसूओ. २ पुत्ता ३ सव्वमि° ४ गिरई ५ तत्ती ६ वयमि° ७ °कायव्व° ८ दूया ९ पत्तो १ सवेज. ११ मम

एवं च नामकरणे पुरुषम-सुरणाइएसु ।
आहूओ वि न पत्तो हलगेहाओ महसो वि ॥ १४५
तं चेव पाहुयं तो हियए आलंबणं इहं काउं ।
परिपालिंति पयत्ता एसा धम्मत्थिणेण ॥ १४६

[नम्मयासुंदरीजम्मवण्णणा]

अह वड्ढमाणनयरे सिहाए उसमस्सचसुम्हाए ।
नमेव गुणेहिं य सुंदरीएं सहदेवभज्जाए ॥ १४७
उयवमो कप्पुमो को वि जिओ सुरो [ ] कम्मे' ।
चमिय पम्मज्झाये यं उवमा(या ?) सेण संजाया ॥ १४८
परिवड्ढियलायन्ना इट्ठा पत्तो सपरियणस्सावि ।
ससुरस्स सासुयाए सा जाया तो विसेसेण ॥ १४९
नवरं पयममासे संजाओ तीएं दोहलो एसो ।
नम्मयमहानईए मंसूण करेमि मज्जणयं ॥ १५०
सा पुण पमिइदेसे गंतुं तीरइ सुहेण नो तस्स ।
कज्जमसज्झ नाउं ह[इ]यस्स वि सा न साहेइ ॥ १५१
झिज्झइ अपुज्जमाणे दोहलएं सपरुम्मंगमेईए ।
तत्तो तं सहदेवो बहुयं पुच्छए एवं ॥ १५२
'किं सुयणु ! तुह भणिइं संपज्जइ नऽम्ह मंदिरे किंचि ।
किं केणइ परिभूआ वाहइ किं कोइ तुह रोगो ? ॥ १५३
केणेवं उव्वयमी हरिद्दपरिणि व नज्जसि सचिवा ।
साहेहि फुडं भद्दे ! जेण पणासेमि ते दुक्खं ॥' १५४
तीए भणियं – 'पियपम ! असज्झमेयं न साहिमो तेण ।
परमेसा इ झीणी किं तुह उवेयकरणेण ? ॥' १५५
सहदेवेण पवुत्तं – 'नासज्झं मज्झ विज्जइ जयम्मि ।
ता कहसु फुडं भणियं को वाणइ पवि(मि ?)मरयणाई(यं ?)' ॥ १५६
इय वुत्ताए ताए सब्भावो साहिओ तओ तेण ।
भणियं – 'किंचिंमेत्तं निउणहियया इह होसु ॥' १५७
आपुच्छिऊण बप्पयं भणिया सो वयंसयी तेण ।
'तुरियं करेह कज्जयं गच्छामो नम्मयं सहुं ॥' १५८

---

१ °य वि सह° २ पत्तो ३ °चे काम उ° ४ मम्माइ° ५ सिज्झइ ६ पीय.
७ किरेव° ८ मिसंपत्ता

मणिपाणंतरमेव य पमोयभरनिब्भरेहिं तेहिं पढमीकयाइं खामवयाइं, गहि याइं अमेयाइं कयाणगाइं, सहाईकओ नाणाविहपहरणविहत्थो सुहडसत्थो। पाल्मियाओ बहुविहाओ [प ६ A] पवईओ। समुच्छाहिया गवक्खकुक्खरया पारजमणा। पयट्टा कोउगावलोयपढालसा सयमेव पभूया लोया। तओ पसत्थवासरे कयकोउयमंगला परिवारपरिवारिया पयडुवपमोयउब्भुरेहिं बंध-5 वेहिं सपुलकच्छेहिं मेत्तेहिं सहिया चलिया दो वि सहदेव-वीरदासा। कहं?

गंभीरतूरघोसपडिसद्दपूरियनहंगणा, महलधूलीपडलधूसरियपेच्छयजणा;
वच्चलसंसफाइला, वणे वणे पलायमाणपुलिंदनाहसा;
गामे गामे पलोएज्जमाणा गामिणीहिं, गोरविज्जमाणा गामसामिएहिं;

कुम्ममाणा महम्घुयभूयाओ पूयाओ जिणिंदाण गामनगरेसु, अहुया(?)—10 निलंभिएहिं पयाणएहिं सुत्थीकयसमत्थसत्थिया सुहंसुहेण संपत्थिया। पत्ता कमेण नाणावणराइरमणीय रेवासमीवभूमिभाग। परितुट्ठा य सुंदरी दट्ठूण बहले-तरंगरंगंतकंदपकारंडवहंससारसाइविहगसंगसंपयरम्मय महा[नइं?] नम्मयं।

आवासिओ य सव्वो कडयजणो हरिसनिब्भरो तत्थ।
सहदेवसमाएसा भूमाए सग्गरमणीए॥ १५९ 15

दीवदिण्णम्मि सदारा कयसिंगारा मणोहरायारा।
मज्जणकीलाहेउं रेवातीरं गया सव्वे॥ १६०

पेच्छंति तयं सरियं महल्लकल्लोलभीसणायारं।
कत्थइ अभत्थ तरंगभंगुरं सुप्पसन्नं च॥ १६१

कत्थइ गहिरावत्तं कत्थइ कीलंतवाउयनरोहं। 20
कत्थइ मज्जंतमहागयदमयसुरहिजलवाहं॥ १६२

विंझगिरिपायपायवपगलियपप्फुसुमगोच्छचिंचइयं।
अनिमिसलोयणाओ पिरोदय स दई बहु॥ १६३

हरिसेण स पविट्ठा उम्मुक्कनिम्मुक्कपेण कयहासा।
विलसंति ते सहेलं सम्मं महिलाहिं परितुट्ठा॥ १६४ 25

सिंगियजलेण केई पहणंति परोप्परं पहासिल्ला।
अन्ने हरियंदणपंकियाहिं रम्मंति महिलाणं॥ १६५

परिकीलिऊण सुइरं संपत्तपरिस्समा समुत्तिण्णा।
तत्तो मरहराओ करिति जिणबिंबपूयाइं॥ १६६

---

१ °ववेहिं २ °हले. ३ °मत्त° ४ वसिंतुट्ठा ५ मरह° ६ °कार्मल° ७ अम्म° ८ कीह

एवं च नामकरणे सुहासण-सुहणाइएसु ।
आहूओ वि न पत्तो कुलमेहाओ मयूरो वि ॥ १४५
तं चेव सारुयं तो हियए आलंबणं दढं काउं ।
परिवालिअ पवत्ता एसा मग्गयचिरेण ॥ १४६

5 [नम्मयासुंदरीजम्मवण्णणा]

अह वैभूसणनयरे सिहाए उसभदत्तसुताए ।
नामेण गुणेहिँ य सुंदरीएँ सहदेवमज्जाए ॥ १४७
उववण्णो कणपुण्णो को वि जिओ सुंदरो [ ] गम्भे[1] ।
भणिय धम्मज्झाणे य उत्तमा(मा ?) तेण संजाया ॥ १४८
10 परिवड्ढियलायण्णा दट्ठा पइणो सपरियणस्सावि ।
ससुरस्स सासुयाए सा जाया तो विसेसेण ॥ १४९
नवरं पंचममासे संजाओ तीएँ दोहलो एसो ।
नम्मयमहानईए गंतूण करेमि मज्जणं ॥ १५०
सा पुण पगिट्ठदेसे गतु तीरए सुहेण नो तस्स ।
15 कज्जमसक्कं नाउं द[इ]यस्स वि सा न साहेइ ॥ १५१
झिज्जाइ अणुसमयं डोहलएँ सयलअंगमेईए ।
तत्तो तं सहदेवो दट्ठूण पुच्छए एवं ॥ १५२
'किं सुयणु ! तुह मणिइं संपडइ नज्जइ मंदिरे किंचि ।
किं केणइ परिभूया बाहइ किं कोइ तुह रोगो ? ॥ १५३
20 जेणेवं छलयंगी दरिहणिरिणि व नज्जसि सचिता ।
साहेहि फुडं सुद्धे ! जेण पणासेमि ते दुक्खं ॥' १५४
तीए भणियं – 'पियपम ! असज्झमेयं न साहिमो तेण ।
बरमेया हं झीणा किं तुह उवेयकरणेण ? ॥' १५५
सहदेवेण पवुत्तं – 'नासज्झं मज्झ किंचि जयम्मि ।
25 ता कहसु फुडं अज्जं को जाणइ भवि(मि ?)परयणा(मं ?) ॥ १५६
इय सुणाए ताए सम्भावो साहिओ तओ तेण ।
भणियं – 'किंचिमेयं निव्वुहियया दढ होसु ॥' १५७
आपुच्छिऊण जणयं भणिया सहे वयंसयी तेण ।
'गुरियं करेह कज्जं गच्छामो नम्मयं दट्ठुं ॥' १५८

१ "य कि वइ" २ ... ३ "ये ... " ४ ... ५ ... ६ ... ७ ... ८ ...

भणियाणंतरमेव य पमोयभरनिब्भरेहिं तेहिं पउणीकयाइं जाणवत्ताइं, गहियाइं अणेगाइं कयाणगाइं, सद्दाइकओ नाणाविहपहरणविहत्थो सुहडसत्थो। चालियाओ बहुविहाओ [प १ A] पयईओ। समुच्छालिया गंधव्वजयजयारवा चारणगणा। पयट्टा कोउगाबलोयणलालसा सयमेव बहुया लोया। तओ पसत्थवासरे कयकोउयमंगला परिवारपरिवारिया पवड्ढंतपमोयउद्धुरेहिं बंध-5 वेहिं सपुत्तकलत्तेहिं मेत्तेहिं सहिया चलिया दो वि सहदेव-वीरदासा। कहं?

गंभीरतूरघोसपडिसद्दपूरियनहंगणा, बहलधूलीपडलधूसरियपेच्छयजणा;
बज्जंतसंखकाहला, थये थये पलयमाणपुलिंदनाहला;
गामे गामे पलोयज्जमाणा गामियएहिं, गोरविज्जमाणा गामसामियएहिं;

कुणमाणा महच्छयभूयाओ पूयाओ जिणिंदाण गामनगरेसु, अहवा(?)—10 विलसियएहिं पयाणएहिं सुत्थीकयसमत्थसत्थिया सुहसुहेण संपत्तिया। पत्ता कमेण नाणावणराइरमणीय रेवासन्नभूमिभाग। परितुट्ठा य सुंदरी दट्ठूण बहले-तरंगरंगतकच्छभमयरत्तरंतहंससारसाइविहंगसंगसंपत्तरम्मय महा[नइं?] नम्मयं।

आवासिओ य सव्वो कडयजणो हरिसनिब्भरो तत्थ।
सहदेवसमाएसा भूमाए सग्गरमणीए॥ १५९ 15
बीयदिणम्मि सदारा कयसिंगारा मणोहरायारा।
मज्जणकीलाहेउ रेवातीरं गया सव्वे॥ १६०
पेच्छंति तय सरिय महल्लकल्लोलभीसणायारं।
कत्थइ अमरत्थ तरंगभगुरं सुप्पसन्न च॥ १६१
कत्थइ गहिरावत्तं कत्थइ कीलंतवारणनरोह। 20
कत्थइ मज्जतमहागयंदमयसुरहियजलाइ॥ १६२
विंझगिरिपायपायवपगलियपणकुसुमगोच्छअंचियप्रय।
अणिमिसलोयणाओ पिरोइयं तं दट्ठुं॥ १६३
हरिसेण तं पविट्ठा उम्बुडनिब्बुड्डणेण कयहासा।
विलसंति ते महेल सम्मं महिलाहिं परितुट्ठा॥ १६४ 25
सिंगियजलेण केई पहणंति परोप्परं पहासिल्ला।
अन्ने हरियंदणपंकियाहिं हम्मंति महिलाणं॥ १६५
परिकीलिऊण सुइरं संपत्तपरिस्समा समुत्तिण्णा।
तओ महरहाओ करिंति विप्पविंबरूयाइं॥ १६६

---

१ °बद्धरेहिं २ °रत्तो ३ °तवक° ४ वंचिद्धा ५ घट्ट° ६ °कारंकार°
७ मग्ग° ८ वीए

अइसयपमोयपडिहरखमाणसा सुंदरी विसेसेण ।
कुणइ पविमाण पूर्य पडिपुण्णमणोरहा जाया ॥ १६७
एव दियहे दियहे कीलताण अविचयिवियाणं ।
पोसदिवसो व सहसा मस्सो समइच्छिओ तेसिं ॥ १६८

5 [नम्मयानईतीरे नम्मयपुरनिवेसो]

नाणादेसाहिंतो कडय आवासियं नियरम्म ।
विविहकयाणगकलिया पत्ता येगे तहिं वणिया ॥ १६९
कमविक्कमो' पवत्तो दिये दिये सयलकडयलोयस्स ।
कयपरिओसो लाभो मणोरहागोयरो जाओ ॥ १७०
10 संउवियं च जपेहिं—'कयउन्नो को वि सुंदरीगब्मे ।
जस्स कयणऽभ्हाणं' पवहिया संपया एसा ॥' १७१
अमे भणंति—'वलियं वरयू एयस्स भूमिभाग[प. ६ B]स्स ।
नयरनिवेसं काउ चिट्ठह मो किं न एत्थेव ? ॥ १७२
किं एत्थ बहुमाये' मुहा(?) अम्हाण रोविया वाडा ।
15 चिट्ठंति सेण गम्मई सुरलोयसमं इम मोत्तुं ॥' १७३
उवलद्धजणाकूओ सहदेवो सुदरिं तओ भणइ ।
'चिट्ठामो किं मए ? रम्मम्मि इहेव ठाणम्मि ॥' १७४
तीए भणइ—'पियपम ! रेहुब्भमहल्लोलकल्लोल ।
पिच्छंतीए एयं ममावि मणनिवुई जाया ॥ १७५
20 ता जइ रोयइ तुम्हें कुणह निवेसं इहेव ठाणम्मि ।
किर सव्व लोओ सुयासुय कुणइ सुणइ ॥' १७६

तओ सहदेवेण वीरदासेण सद्धिं समभिठिऊण पसत्थवासरे पारद्धो नयरनिवेसो—ठविया वत्थुविज्जाविपक्खणेहिं सुत्तहारेहिं तियचउक्कचच्चराई, संठविया अहाजोगं पासायभवणपतीओ आइट्ठो सत्तेहिं पि नियनियकुडव 25 परियरो, कारियं च सुरिंदभवणविसुंदरं जिणमंदिरं, दिन्न च नामं नयरस्स नम्मयपुरं त्ति । किं बहुणा ?—

विमाणयमयलवचो संठ्यो सयलसयणवग्गेणं ।
सेट्ठी वि उम्मदत्तो हुरियं तत्थेव संपत्तो ॥ १७७

१ °विक्कम. २ न्हाणं. ३ पवड्डिया. ४ वलियं. ५ किंच. ६ बहुमाण. ७ गम्मई. ८ सुंदरी. ९ सिट्ठि. १ °मुत्तेण.

करमरविवज्जियाण[1] अपीडियाणं परेण केणावि ।
भवइ सुहम्म बलठो अणाण सग्गे सुराणं च ॥ १७८

अह बहुते चंदे गहबलजुत्तम्मि सुदरे लग्गे ।
सा सुंदरी पसूया धूयारयण कमलनयण ॥ १७९

पढमो अवच्चलाभो पुत्तजम्मदिया य बालिया एसा ।
इय पुत्तजम्मणम्मिव वद्धावणय कय पिउणो ॥ १८०

सयलो वि नगरलोगो जणइ आणंदपुलइयसरीरो ।
'धन्नाण इमा बाला लच्छि व [घ]रे समोइन्ना ॥' १८१

छट्ठीजागरणाई किय सयल पमोयकलियाहिं ।
जणणीहिं ठीएँ विहिय पडमम्मिय पुत्तजम्मम्मि ॥ १८२

बत्तम्मि बारसाहे सयणसमक्खं [च ?] सुहमुहुत्तम्मि ।
गेज्जतगीयमंगलमविरयवज्जतवरतूरं ॥ १८३

जं नम्मयसरियामज्जणम्मि जणणीएँ डोहलो जाओ ।
तं होउ नम्मयासुंदरि त्ति नाम परिमिमीए ॥ १८४

महसुंदरनामम्मि पस्सइ सयो वि पुरजणो हुओ ।
पुण्णमहिओ जीवो किर कस्स न वल्लहो होइ ॥ १८५

हत्थाहत्थं घिप्पइ जणेण मणोभपेच्छणपरेण ।
बड्ढइ पडिपक्खी सियपक्खे चंदलेह व ॥ १८६

मोक्खाविज्जइ पिउणा पवनमोक्खारमणणकहेण ।
देवगुरूण पणाम सिक्खाविज्जइ हसिरवयणा ॥ १८७

सव्वस्स पेन इट्ठा विसेसओ वीरदासलहुपिउणो ।
चीवंदणाइकिच पढम सिक्खाविया तेण ॥ १८८

नारीजणोचियाइ विन्नाणाइ तओ वि चउसट्ठी ।
तओ [य] समप्पिया साहुणीण सम्मत्त[?]आमहा ॥१८९

जीवाइनवपयत्था नाया तीए विसुद्धपन्नाए ।
पढियाइं पगरणाइं वेरग्गकराइं भेगाइं ॥ १९०

सरमंडलाभिहाणं तीए इहेण पगरण पढिय ।
नर-नारीण सरूवं सुभासुभं जेण नज्जंति ॥ १९१

गिण्हइ हाहेण जं जं सुणेइ पाएण पगइसंपन्ना ।
पच्चुसम्म नेय गहियं सयावि पच्छन्नमो तीसे ॥ १९२

---

१ °करविरविवज्जियाणं. २ निउणो. ३ बरममीय ४ वरिय° ५ समत्त° पम ।

सो वि महेसरदत्तो रिसिदत्तानंदणो नियपिउणा ।
वावपरीक्खओ पट्ठाविओ लोगपयडाओ ॥ १९३

[नम्मयासुंदरीरूववण्णणा]

अह नम्मयपुराओ केई वणिया कयाणगमपुव्वं ।
घेत्तूण साहरेउं संपत्ता कूवचंदम्मि ॥ १९४
रिसिदत्ताए पुट्ठा—'नम्मयपुरवासिणो फुड तुम्हे ।
तो उसभदासभिब्भ परियाणह निच्छयं नो वा ? ॥ १९५
सहदेव-वीरदासा तस्स सुया विस्सुया पुहईवीढे ।
ते परियाणह तुम्हे वह वेसिं पुत्तभंडाई ? ॥' १९६
हसिऊण तेहिं भणियं—'एवं गुरुसुयसंगयगयाणं ।
को न वियाणइ सुंदरि ! जं भणियव्वं तयं भणसु ॥' १९७

तीए भणियं—

'नम्मयसुंदरिनामा सुणह सहदेवनंदणा धूया ।
तयरूवाइं तीसे अह जाणह तो फुडं कहह ॥' १९८

वणिएहिं वुत्तं—

'वाउम्मयकयसोहं तीसे रूवं न वण्णिउं सक्का ।
चलणाणं नियमा अलिपयलासयपयं होइ ॥ १९९
अह सुंदरि ! मासेमो' छयं पिव मेहवरं सीसं ।
ता सीमंतयसोहा तीसे वि निवारिया होइ ॥ २००
छम्मयरसम वयणं तीसे अह साहिमो सुयं[स्थ ?] तुज्झ ।
तो नक्कछकयको तम्मि समारोविओ होइ ॥ २०१
संपुण्णसम गीवं रेहातियसंजुयं पि अह भणिमो ।
गंडयपेयं सा हंसिय पि भणइ जणो सव्वो ॥ २०२
करिकुंभविब्भम जई तीसे वच्छत्थलं च वणामो ।
तो चम्मघोरयाफासफरुसया ठाविया होइ ॥ २०३
विसरुहकमलनाळोवमाउ बाहाउ तीए जो कहइ ।
सो विप्फुरंतपाहिड्डियवदोसं पयासेइ ॥ २०४
किंकिल्लिपल्लवेहिं तुल्लो करपल्लवे वि भणेहिं ।
नियमा निम्मलनहमणिसंभवमयं होइ अंतरियं ॥ २०५

१ पुरा°. २ °चयं. ३ मासेमो. ४ संपुण्ण° ५ °हूमगाइय ६ नेहपयेन. ७ वह
८ तह. ९ भणेहिं.

जइ भासिज्जइ तीसे रूवाइगुणेहि सयलमहिलाणं ।
ता किर वासिमवस्स असारया होइ मज्झरिया ॥ २०६
कीरंते चलणाणं कुम्मुवमाणम्मि पुरुसवों मणिही ।
निम्मंसकुम्मखंडाणं नणु तेसिं केरिसी सोहा ? ॥ २०७
जं जं तीसे अंगं पलोएमो तस्स तस्स भुवणम्मि । 5
नत्थि सम उवमाणं कह तीए वणिमो रूवं ॥ २०८
सग्गम्मि अच्छरा जइ तीए तुल्ला इमं न पच्चक्खं ।
जं सा विठोलनयणा इयरीओ पईदिट्ठीओ ॥' २०९

[रिसिदत्ताए सपुत्तकज्जे नम्मयासुंदरीमग्गणा]

[ए]यं वणिएहिं वणिज्जमाणं नम्मयाए निरुवमरूवसंपयं निसामयं[प. ७ B] 10 ती चिंतिउं पवत्ता रिसिदत्ता 'कह नाम सं कुमाररयणं महेसरदत्तस्स करे विलग्गिही' ? न ताव ताओ असाहम्मियस्स दाही । पडिवन्नसावगधम्मस्साविदिट्ठमणयचरिया से न पत्तियति । एगवारमेव कुसमयवालीए रज्जइ । को दिट्ठिवकेरीहिं अप्पा मोसेइ ? न चाहं तत्थ गया वंसणमवि लहिस्सं । ताव पेसेमि पडिवचिवयणकुसलं कं पि दूयं ति । मा कया[इ] समागयकरुणमणी 15 ते पसीयंति' एव संपहारिऊण पेसिओ तीए पडिवयणकुसलो विसिट्ठ पुरिसो । संपत्तठवियसम्माणेण य मणिओ तेण इब्भो – 'ताय ! अवलाओ मयलाओ चेव हुंति, विसेसओ ससुरकुलगयाओ । जओ –

एगत्तो रडइ पई एगत्तो सासुया य परिसवइ ।
इसंति नमंदाओ रूसइ सेसो वि कुलोगो ॥ २१० 20
परओणाण सामं नियधम्मो सह य कह णु निव्वहइ ।
को किर रिसिदत्ताए दोसो सम्मं विमावेह ॥ २११
अणुतावग्गिपलित्ता अवराहं अप्पणो खमावेइ ।
मग्गइ धम्मसहाय सा नम्मयसुंदरीकन्नं ॥ २१२
काही जिणवरधम्मं तीए संगेण नत्थि संदेहो । 25
एस महेसरदत्तो कुमइ इमं पत्थणं तीए ॥' २१३
इब्भेण तओ भणइ – 'पत्तिज्जामो न तस्स धुत्तस्स ।
जेण तया अम्हाओ सावगणो विम्हय नीओ ॥ २१४
तारिसओ सो वणओ तणयम्मि वि तारिसेण होयव्वं ।
न कयावि अंवगुलिया निवसइ पासम्मि निंबस्स ॥ २१५ 30

१ पुरुसवो २ इयरीओ ३ पईदिट्ठी ४ °कुम्मखं° ५ विठोलगणी. ६ सत्यं
७ °काला. ८ क. ९ सर्व. १ भासिज्जेव.

एवं ता रिसिदत्ता भणसरयं वहइ माणसं अम्ह ।
ता भावता चीयं न पविस्सामो तहिं अम्हे ॥' २१६

एवं बहुप्पयारं भणिओ ण्हेण सत्थवाहेण ।
हूओ' विलक्खउद्दियओ गओ निरासो नियं ठाणं ॥ २१७

5 सोउं दूयमुहाओ सपणुत्तारं सिणेहनिरविक्खं ।
'हा सहरा वि मओ नियपिउणा पावकम्मा हं ॥' २१८

इय सा विसुवकंठं रिसिदत्ता रोविउं तह पवत्ता ।
कारुण्णपुमहियओ अन्नो वि जणो वह परुन्नो ॥ २१९

आसासिऊण बहुसो भणिया सा नंदणेण – 'किं अम्मो ! ।
10 किं रुयसि अणाहा इव करेहि दुक्खकरणं मज्झ ॥' २२०

तीए भणियं – 'पुत्तय ! तुह पिउणो दंसिएण होऊण ।
परिणिसु हरापीया जणाविया तह य जिणधम्मं ॥ २२१

उज्झियजिणधम्माए जणा जणा वि मज्झ सयणेहिं ।
आसानडियाएं ममावि मोडिओ एपिओ कंठो ॥ २२२

15 अत्थी उत्तमरूवा दुहिया तुह माउलस्स मे मिसुय ।
सा रूपपेसणेणं तुह कज्जे जाम[या] वच्छ ! ॥ २२३

सा ताम न लद्ध चिय मह पिउणा निठुरं तहा भणिओ ।
पुत्तज्झरिएण दूओ जहा निरासा मई जाया ॥ २२४

अणुरूवा तुह पुत्तय ! जइ सा इत्थे न ठग्ग[illegible]इं बाला ।
20 किं जीविएण ता मह इय दुक्खाओ मए रुन्नं ॥' २२५

तेण पवुत्तं – 'अम्मो ! कन्नावराहाण किमिह कज्जेण ।
कुविएसु सयणेहिं विहिओ सहियव्वो परिभवो' ताओ ॥ २२६

अन्नं च –

कारणवसेण कुविया वि सज्जणा मंगुलं न चिंतंति ।
25 चिंतंति' नेय वसणे जो उ परो सो परो चेव ॥ २२७

जइ तुज्झ इम दुक्खं ता हं गंतूण तं विवाहेमि ।
अवराहविरहिओ हं न चोएहेउ जणो तेसिं ॥ २२८

कुविओ वि रहं ताओ विणीयवयणस्स तसिरी मज्झ ।
पज्जलइ नेय जलणो सिचंतो वारिधाराहिं ॥' २२९

---

१ हूओ. २ मिथ. ३ चिरम्मे ४ भणिओ. ५ भणिमाओ ६ चिंतंति.

तीए वुत्तं–'पुत्तय! माइम्मियमोहिओ तओ पावं।
परिहरइ दूरउ चिय महासरं नीरपडिपुन्नं॥ २३०
विणएण य चाएण य तुह पिउणा रंजिओ तओ तइया।
सम्मावविणीयस्स वि परियइ कइ तओ तामो?॥' २३१
मणियमियरेण–'अम्मो! पेच्छाहि ममावि ताव कोसल्लं। 5
जाइसइ जेण तुरियं पूरेमि मणोरहा तुज्झ॥' २३२
पडिमणइ तो हसंती रिसिदत्ता–'पुत्त! होउ तुह सिद्धी।
समणुभावो चि मए होउ सिव मगठ तुज्झ॥' २३३

[महेसरदत्तस्स मायामहगिहगमणं]

आपुच्छिऊण सयणं महया सत्थेण सो तओ चलिओ। 10
पत्तो कमेण तत्तो अइरम्मं नम्मयानयरं॥ २३४

तओ नयररम्मयाविम्हियमणेण बहिरुज्जाणे संठिएणेव पेसिओ आप्पा-वयस्स मायामहस्स समीवं पुरिसो। तेणावि सपुत्तपरियणो सुहनिसन्नो पणमिऊण मणिओ सत्यवाहो–'एस तुम्ह नत्तुणीनत्तुणो मायामहस्स दंसणुक्कंठिओ विविहमहमरियजाणवाहणो समागओ महेसरदत्तो, विन्नवेइ य–15 "दंसेह क पि मङनिक्खेवणट्ठाणं ति"। समायन्निऊणं तिम्मलीतरंगमग मालवहेण सक्केव मणिओ सत्थवाहेण–'न किंचि अम्ह तेण पओयणं। चिट्ठउ तत्थ अन्ने वि देसंतरवणिया चिट्ठंति।' तओ कयकरंजलिमउलिणा विन्नत्तं सहदेवेण–'ताय! मा एवमाणवेह। सो बालो अदिट्ठदोसो तुम्ह दंसणुक्कंठिओ समागओ। अन्नस्स वि घरमागयस्स उचियउवयारो कीरइ। जेण मणियं– 20

जेण न किंचि वि कज्जं तस्स वि घरमागयस्स चे सुयणा।
मूण पडुवयणा नियसीसं आसणं दिंति॥ २३५

ता सहहा तस्सावमाणकरणं न जुत्तं। सम्माणिओ समुप्पन्नसिणेहो मा कयाइ जिणधम्मं पडिवज्जेज्जा।' 'एवं होउ त्ति।'

तओ मणिओ पगंतुं [ ] सहदेव-वीरदासेहिं। 25
दसियगरुयसणेहो पवेसिओ नयरमज्झम्मि॥ २३६
उत्तारिय च भंडं भंडागारेसु निरुवसग्गेसु।
तओ [य] विणयमहग्घं पणओ मायाम[प. ८ a]महो तेण॥ २३७

---

१ इम्माविणीयस्स २ पंडिपयइ ३ 'मियवा ४ विन्नवई ५ तमाइन्निऊण. ६ निवसंति ७ को ८ दोसा ९ समाणिम्म

एवं वा रिसिदत्ता अपवरयं दइए माणसं अम्ह ।
ता आमता वीयं न पविसामो वहिं अम्हे ॥' २१६

एवं बहुप्पयारं मणिओ रुट्टेण सत्यवाहेण ।
दूओ' विलक्खवाहियओ गओ नियओ निय ठाण ॥ २१७

सोउं दूयगुहाओ सयपवुत्तंतं सिमेहनिरविक्खं ।
'हा सहसा वि चयो नियपिउणा पावकम्मा हं ॥' २१८

इय सा विसुक्कंठं रिसिदत्ता रोविउं तह पवत्ता ।
कारुण्णपुण्णहियओ अन्नो वि जणो जह परुन्नो ॥ २१९

आसासिऊण बहुसो भणिया सा नवरेण—'किं अम्मो ! ।
किं रुयसि अणाहा इव करेहि दुक्खारणं मज्झ ॥' २२०

तीए भणियं—'पुत्तय ! तुह पिउणो दंभिएण होऊण ।
परिणिय इहाणीया पयाणिया तह य जिणधम्मं ॥ २२१

उज्झियजिणधम्माए पत्ता पत्ता वि मज्झ सयणेहिं ।
आसानडियाएँ ममावि बोलिओ एत्तिओ कालो ॥ २२२

अत्थी उवमरूवा दुहिया तुह माउलस्स मे पिसुय ।
सा दूयपेसणेणं तुह कज्जे मग्ग[या] वच्छ ! ॥ २२३

सा ताव न लद्ध चिय मह पिउणा निठुरं तहा भणिओ ।
पुत्तच्छाहिएण दूओ जहा निरासा मई जाया ॥ २२४

अणुरूवा तुह पुत्तय ! मह सा हत्थे न लग्ग[ ] बाला ।
किं जीविएण ता मह इय दुक्खाओ मए रुन्नं ॥' २२५

तेण पवुत्तं—'अम्मो ! कयावराहाण किमिह रुन्नेण ।
दुविणयपयोहिँ विहिमो' सहियव्वो परिभवो' सव्वो ॥ २२६

अन्नं च—

अवरावसेण दुहिया वि सयणा मंगुलं न चिंतंति ।
चिंतंति' नेय सयणे जो उ परो सो परो चेव ॥ २२७

जइ तुम्ह इमं दुक्खं ता हं गंतूण तं विवाहेमि ।
अवराहविरहिओ हं न करेउ जओ तेसिं ॥ २२८

इक्किओ वि दढं ताओ विणीयवयणस्स तुसिही मज्झ ।
पवसइ नेय चक्को सिंचंतो वारिधाराहिं ॥' २२९

१ दूओ. २ मिया. ३ रिसत्तो ४ वहिओ ५ परिणाओ ६ मिढुंपि

धम्मकपाणगमेव परलोगसुहत्थिणा वि घेत्तव्व ।
जो तत्थ वंचिओ फिर सो मुच्चइ सव्वसोक्खाण ॥ २५२
अम्हाणं ताव धम्मे अट्ठारसदोसवज्जिओ देवो ।
ते पुण पुच्छेहिं[1] सुंदर ! दोसा एवं पढिज्जंति ॥ २५३
अन्नाणकोहमयमाणलोहमाया रई य अरई य । 5
निद्दामोयअलियवयणचोरिया मच्छरभया य ॥ २५४
पाणिवहपेमकीडापसंगहासा य जस्सऽमी दोसा ।
अट्ठारस य पणट्ठा नमामि देवाहिदेव[2] तं ॥ २५५
जीवदय सच्चवयणं परधणपरिवज्जणं च बंभं च ।
पचिंदियनिग्गहणं आरंभपरिग्गहच्चाओ ॥ २५६ 10
[ए]स विसिट्ठो धम्मो उवइट्ठोऽणुट्ठिओ सयं जेण ।
सो अम्ह वीयराओ देवो देविंदकयपूओ ॥ [प. ९ A] २५७
एसो न चेव तूसइ न य रूसइ दुट्ठपिट्ठियस्सावि ।
साराणुग्गहरहिओ तारेइ भवसमुदं नियमा ॥ २५८
तहा— 15
असणयभम्मसरवो सुधम्मकरणुज्जुओ य जो निच ।
धम्मोवएसदाया निरीहचित्तो गुरू अम्ह ॥ २५९
एयारिसगुणहीणो देवो गुरुणो वि नऽम्ह रोयंति ।
जइ अत्थि पहाणयरा अन्ने साहहि तो अम्ह ॥' २६०
इय देवाइसरूवे सवित्थरं नम्मयाएँ परिकहिए । 20
कम्माण उवसमओ महेसरो मणसि पडिबुद्धो ॥ २६१
तह वि परिहासमसारं पुणो वि सो नम्मयं[3] इम भणइ ।
'अम्हाण वि दवाणं सुणसु सरूवं सुभ भद्दे ! ॥ २६२

सुयणु ! अम्ह संतिया देवा अप्पडिमल्ला इच्छाए रमंति, इच्छाए कीलंति गायंति नच्चंति । जइ रूसंति मावे य पयच्छंति, जइ तूसंति वरे [य]वियरंति । 25
तेण धुत्ता तंमि पूयाविहाणपगाराहणा । तुम्ह संतिओ वीयरागदेवो न रुट्ठो निग्गहसमत्थो, न तुट्ठो कस्स वि पसिअइ । ता किं तस्साराहणेण ?' तो नम्मयासुंदरीए भणिय – 'एए हासतोसमायाणुग्गहपयाणमाया सहजणसामन्ना, ता देवाण जणस्स य को विसेसो ? जं च भणसि "साराणुग्गहपयाणविगलस्स किमाराहणेण ?" तत्थ सुण । मणिमंताइणो अचेयणा वि विहिसेवगस्स समी 30

1 अम्हाणं. 2 पुच्छेहिं 3 थिदेदं. 4 सत्थिपुरे 5 नम्मय. 6 दवाणं

आलिंगिऊण गाढं मायामहिगाइ चुंबिओ सीसे ।
दिन्ना पवराऽऽसीसा – 'अक्खयअजरामरो होसु ॥' २३८

तो मायामहघरणीओ उ(ताओ ?) सायरेण पणमेइ ।
उच्छूसीसो सव्वो पणमइ सह सयणवग्गं ॥ २३९

पच्छा चेइयभवणं तहिं समं नमइ मुणिवर विहिणा ।
जिणबिंबदंसणाओ बहुइ पमोय हियमज्झे ॥ २४०

सुविणीओ सुहचरिओ' पियवओ वच्छलो गुरुयणस्स ।
स पुण मिच्छद्दिट्ठी [वि] मणागमहरूवं एय ॥ २४१

भणिही सव्वो लोगो पायइ नयणपेहियंमयमेय ।
तेण न सिक्खइ धम्मं मामयभणिओ वि पुणरुत्त ॥ २४२

[महेसरदत्तस्स नम्मयासुंदरीए सह परिचओ]

पेच्छंतो रूवं सुंदरीए चिंतेइ माणसे धणियं ।
'कह नाम सहुलाभो होही एयाए सह मज्झ ॥' २४३

अणुदियहं वच्चंती दिट्ठा अज्झाउवस्सए तेण ।
तो सो वि तयणुमग्गं गओ तहिं धम्मसुहत्थी ॥ २४४

[स]लोणयाए तीए ईसि हसिऊण सो इमं भणिओ ।
'पाहुणय ! किं न वंदसि भद्दा अम्हाण गुरुणीओ ? ॥' २४५

'जइ तुम्हं गुरुणीओ तुम्हे वंदेह अम्ह किं इत्थ ? ।'
'होही तुहावि धम्मो गुरुणीए नमंतस्स ॥' २४६

काऊण पणामं अखिणाय इयरेण सा इमं भणिया ।
'तुह वयणाओ सुंदरि ! पणमामि न धम्मबुद्धीए ॥ २४७

कुलधम्मं मोत्तूण सुंदरि ! अन्नोन्नधम्मनिरयाणं ।
नासंति दो वि धम्मा को गच्छइ दोहिं मग्गेहिं ? ॥' २४८

दाऊण आसणं तो भणिओ – 'निवसाहि एत्थ ख[ण]मेक्कं ।
मज्झत्थचित्तयाए धम्मसरूवं वियारेमो ॥' २४९

उवविट्ठस्स य भणियं – 'चिट्ठंति कयाणगाइं' होउ ।
मणुयत्तणपोरुसाइं निपुणनियविभवाणुसारेण ॥ २५०

निच्छंति विढवंता मणुयत्तणयं ति मंगुल चोज्जं ।
धम्मेण उ वेचइं सुंदर ! सुपरिक्खियं' कज्जं ॥ २५१

---

१ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible] ५ [illegible]

पुत्त ! पिओ सयमाम्म गेह गतूण पयसि जइ धम्मं ।
दिसा वि इमा कहा तुमं च ता दूरओ होसि ॥'　　२६९
भणइ महेसरदत्तो—'न मए कवडेण एस पडिवन्नो ।
जिणपन्नत्तो धम्मो ता मा एवं विगप्पेह ॥'　　२७०
'परिभाविऊण सम्मं जं जुत्तं वच्छ ! त करिस्सामो ।　　5
मा होसु उच्छुगो' त पुच्छामो मामए तुज्झ ॥'　　२७१
'एव'ति तेण वुत्ते सिट्ठं गंतूण तेण एगंते ।
इब्भेण सपुत्ताण भणियं—'तो किमिह जुत्तं'ति ॥　　२७२
आह तओ सहदेवो—'पुत्ताण ताय ! को णु पत्तियइ ।
किंतु निसुणेह एग मह वयण एगचित्तेण ॥　　२७३ 10
बहुलवणरंजणकज्जे उम्मडवेसाउ होंति वेसाओ ।
न तहा कुलंगणाओ नियसणपरिओसरसियाओ ॥　　२७४
धम्मरया वि हु पुरिसा किंचिमसामाविया कलिज्जंति ।
बहुदुम्मडसाहावियकिरियाकरणेहिं निउणेहिं ॥　　२७५
जह चेव मणसमक्खं तहेव एगागिणो जइ कुणंति ।　　15
ता नज्जइ सुस्समणो सुभावओ वा सुपुरिसेहिं ॥　　२७६
एस महेसरदत्तो अणरंजणकारि उम्मड किं पि ।
न कुणइ न चेव जंपइ कुणइ विसुद्ध अणुट्ठाणं ॥　　२७७
सपडिओ सो य मए एगागी चेइयाई वंदंतो ।
रोमंचचियगत्तो संपुण्णविहिं मणुट्ठितो' ॥　　२७८ 20
सब्भावसावगो खलु तम्हा एसो न इत्थ संदेहो ।
एसा वि अम्ह धूया निच्चलचित्ता जिणमयम्मि ॥　　२७९
ता कीरउ संजोगो एयाण न किं चि अणुचियं मुणिमो ।
अहवा जं पडिहासइ तायस्स तमेव अम्हाण ॥　　२८०
सुंदर ! अमोहबुद्धी सुदीहदंसी तमाउ को अन्नो ।　　25
ता कीर[र]उ एवमिण' इय भणिए उसभदत्ता[६. १ A.]ग ॥　　२८१
बे नयरम्मि पहाणा गणया सवे वि ते समाहूया ।
संपुच्छम भणिया 'विवाहलग्ग गणह सारं ॥'　　२८२
नाउं रविगुरुसुद्धिं सुसीलिय तह य अम्मेरिक्खाणं ।
तिहिनक्खत्तपवित्ते ससिबलजुत्तम्मि दिवसम्मि ॥　　२८३ 30

१ उच्छगो. २ मेकाए ३ °संतम° ४ °ओहि ५ बहुओ ६ मारवमि. ७ मम्मपासं ८ सुसीलिय ९ वह १ वरण°

रियफलदायगो भवंति, अविहिसेवगस्स अणत्थकारिणो भवंति । एवं वीयरागा वि विहिअविहिसेवगाण कल्लाणाकल्लाणकारया संपज्जंति ।' पुणो भणियं महेसरदत्तेण–'जइ न रूससि ता अन्नं पि किं पि पुच्छामि ।' तीए भणियं–'पुच्छाहि को धम्मवियारे[1] रूसणस्सावगासो ?' इयरेण भणियं–'जइ तुम्ह 5 देवो वीयरागो ता कीस न्हवणं कीस गंधपुप्फाइनट्टगीयाइं वा पडिच्छइ ।' तओ ईसि हसिऊण भणियं नम्मयाए–'अहो निउणबुद्धीओ तुमं अओ चेव अरिहो सि धम्मवियारस्स, ता निसामेह परमत्थं । अरहंता भगवंतो सुसिवपयं संपत्ता । न तेसिं भोगुवभोगेहिं पओयणं । जं पुण तप्पडिमाणं ण्हावणाइ कीरइ एस सव्वो वि ववहारो सुहभावनिमित्तं धम्मियजणेण कीरइ, तओ चेव सुहसंपत्ती भवइ' 10 त्ति । तओ महेसरदत्तो भणइ–'सुठ्ठाइं इत्थियाण पंडियत्ताइं । अओ पढिज्जइ विउसेहिं–

> दो चेव असिक्खियपंडियाइं दीसंति जीवलोगम्मि ।
> इक्कुस्साय य सुई तस्सुप्पत्ति(?) च महिलाण ॥ २६२

सुंदरि ! विजिओ ताए अहं तुमए ।' सुंदरीए भणियं–'मा एवं भणह । न 15 मए वायपुट्ठीए किं पि भणियं । किंतु तायाईण [प ९ B] अहं वल्लहो तुमं, तेण इहागयस्स मए पाणेहिंतो वि पिय परसारभूममेव निययधम्मपाहुडं तुहोवणीयं ।' इयरेण भणियं–'ममावि मामयंभूया तुमं ति गोरवट्ठाणं वट्टसि, ता पडिच्छियं मए तुह संतियं पाहुडं' त्ति भणंतो उट्ठिओ महेसरदत्तो ।

> तप्पभिइमेव धम्मं नाउं काउं च सो समारद्धो ।
> 20 मूढजणोहसणायं कवडमवेगो सुचिरचित्तो ॥ २६४

[महेसरदत्तस्स मायामहइसमीवे नम्मयासुंदरीमत्थे पत्थणा]

> गहिओ सावगधम्मो भणइ य मायामहं अह कयाइ ।
> 'कीरउ एक्क पसाओ दिज्जउ मम नम्मयं ताय ! ॥' २६५
> सो भाणइ–'को न इच्छइ संजोगं भागधेज्जभावं ।
> 25 नवरं तुह परिणामं अम्हे सम्मं न याणामो ॥ २६६
> अम्ह कुले एस कमो देंतु वो चयइ वीयरागधम्मं ।
> आईल्लपदीणं वञ्चो सोऽमस्स कायव्वो ॥ २६७
> एत्तो पिय तुह माया चवाऽम्हेहिं न कोववसेण ।
> को सक्को[5] विपयरियं विस्सासीउं वए भोत्तुं ? ॥ २६८

---

१ °वियारे २ एवं ३ ममाव° ४ वहसि ५ सव्वो

तओ पढमाणेहिं मंगलपाढगेहिं अग्घिज्जमाणो पायमूले[1], पलोइज्जमाणो नयरलोएहिं, तोरणवंदणमाल दुवारोभयपासपइट्ठियकणयकलसं पविट्ठो सम वहूए महेसरदत्तो नियमंदिरं ति । निवडिओ चलणेसु जणयस्स जणणीए सेस गुरुजणस्स य । नम्मयासुंदरी वि चलणेसु निवडमा[ण] [ ]णी चिरकालु- क्कंठियाए रिसिदत्ताए समालिंगिऊण दिण्णासीसा पवेसिया निहेलम्मि । 5

परितोसियसुहिसयण बद्धावणय सवित्थरं काउं ।
रिसिदत्ता परितुट्ठा काल गमिउ समारद्धा ॥ २९२
पियमंदणसज्झायं झुणमाणि[2] नम्मय सुणंतीओ ।
गोयरिमिव हरिणीओ सासुरयाओ न तिप्पंति ॥ २९३
उवसंतं सयलकुल [ती]प समीवे सुणेइ जिणधम्मं । 10
परियाणियपरमत्थ आयं धम्मुज्जुयं सव ॥ २९४
अह अन्नया कयाइं [ ]पणो ।
भणइ महेसरदत्तो जणय महुरायॅ वाणीए ॥ २९५
'ताय! इमो जिणधम्मो विचारयणं व दुल्लहो सुइ ।
लद्धूण कीस तुमए बालेण व उज्झिओ एक्क वि ॥ २९६ 15
जह कीरइ जीवदया अलिय चोरिक्कया य मुच्चति ।
पालिज्जइ बंभवय कीरइ न परिग्गहारंभो ॥ २९७
किं इत्थ ता न जुत्त मणियमिमं सासणेसु सवेसु ।
पागयनरा वि एए पंच वि थाइं[3] विपुज्जंति ॥ २९८
एए जो परिवज्जइ सो देवो सो गुरु चि किमजुत्त । 20
समदोसाम्म होन्ह तारेइ तरेइ एक्को मणसु ॥ २९९
विन्नायमिण सवं तुमए वहुया गुरुप्पसाएण ।
न य चरिय नियहियए चोज्जमिणं अम्ह पडिहाइ ॥ ३००
आसाइयअमयरसो पिसुमवरसस्स एक्को नरो सरइ ।
पत्तम्मि पुहइरज्जे हलियत्त को मई कुणइ ? ॥' ३०१ 25
इय महुरगिरा भणिओ लग्गो मग्गम्मि जिणवरुद्दिट्ठे ।
पच्छायावपरद्धो संविग्गो रुद्ददत्तो वि ॥ ३०२
इय मुणियधम्मतत्त सासुरय सवमेव सपत्त ।
संगेण नम्मयासुदरीऍ गुणरयणखाणीए ॥ ३०३

---

1 °मूलेहिं 2 मिहुए. 3 तुज्झमाणी 4 धम्मुज्जुयं 5 अन्नया 6 थाई. 7 विपुज्जंति 8 भामिओ 9 लग्गो

संधुभगावलं सव्वसुंदरं मोहियं तहा लग्ग ।
सयलसुरसिद्धिसमय पगग्गमणाहिं गयणाहिं ॥ २८४

[नम्मयासुदरीविवाहोसवो]

समायण्णिऊण नम्मयासुन्दरीए विवाहो त्ति हरिसिओ नयरलोगो । उब्भि-
5 याइं[1] घरे घरे तोरणाइं, ठाणे ठाणे पिणद्धाओ[2] वंदणमालाओ, मंदिरे मंदिरे
पवज्जियाइं मंगलतूराइं, पणच्चियाओ धवलनारीओ, जाओ परमाणन्दसहरनि-
बुड्डो[3] इव सुहियओ पुरिसवग्गो । सहदेवेणावि विय-पउरवत्थवराईसु पवत्ति
याइं अमारियसत्ताइं, निमंतिओ सयलनायरलोगो, सम्माणिओ वत्थत-
बोलमाईहिं । किं बहुणा ? –

10 पवंचतूरमणहरं, नच्चतलोयसुहयरं;
पईवमहूसवरूयं, पए पए पमहूय;
पमोइयासेसमम्मणं, जयसंखाहविमहुरारवसंमंडियघरंगण;
कीरंतको[उ]यमंगलसोहणं, सयलपच्चयजणमणमोहणं;
पिइमाइवियमाणनिम्मइणं[4], संजायं नम्मयासुंदरी-महेस[र]दत्ताणं पाणिग्गहणं।

15 अवि य –

दाणेण य माणेण य पिउणा तह तोसिओ जणो सव्वो ।
आसीणायसयाइं अमरयगओ त्ति वह देइ ॥ २८५
भणइ जणो – 'भो सुंदर ! केहिं तुमं आगओ सि सउणेहिं ।
ज एमा संपया परमा लच्छि व पच्चक्खा ॥' २८६
20 अन्नाओ बुड्ढाओ अक्खयपहाहिं सिरम्मि मोत्तूण ।
संपत्ति – 'नंद मिहुणय ! जाव णये जाव ससि-सूरा ॥' २८७
'अणुरूवो संजोगो विहिणा घडिओ' भणंति अन्नाओ ।
'कोमुई-गयणाहाण य मा विरहो होज्ज कइया वि ॥' २८८
इय नयरजणासीसे पडिच्छमाणो[5] गुरूण कयतोसो ।
25 उप्पाइयनेहो नम्मयाएँ सो[11] संठिओ तत्थ ॥ २८९
आपुच्छिय सुहिसयणो महेसरो चलिओ नियं नयरं ।
जणयाण विमसिक्खा विसज्जिया नम्मया चलिया ॥ २९०
केहि वि दियेहिं पत्तो मोहेहिं महाविभा य रिद्धिजुत्ता ।
कयमंगलोवयारा पत्तो निग्गया सयणा ॥ २९१

---

1 अविओयाइं 2 पिणद्धाओ. 3 °निबुड्डे 4 °पीइ° 5 °पिययमाईमिम्मवणं. 6 °सुंदरीय महे° 7 °सुहि- 8 °मोहयर° 9 °सीसे. 10 °माणा. 11 से.

तओ पडमाणेहिं मंगलपाढगेहिं अग्घिज्जमाणो पायमूले¹, पलोइज्जमाणो नयरलोएहिं, रोलंबवंदणमाला दुवारोमयपासपइट्ठियकणयकलसं पविट्ठो सम बहूए² महेसरदत्तो नियमंदिरं ति। निवडिओ चलणेसु जणयस्स जणणीए सेस-गुरुयणस्स य। नम्मयासुंदरी वि चलणेसु निवडमा[प. १ B]णी चिरकाल-कंठियाए रिसिदत्ताए समालिंगिऊण दिन्नासीसा पवेसिया निहेलम्मि। 5

परितोसियसुहिसयण भद्दावणय सवित्थरं काउं।
रिसिदत्ता परितुट्ठा काल गमिउं समारद्धा ॥ २९२
पियवइयणसत्ताय कुणमाणि³ नम्मय सुणतीओ।
गोयरिमिव हरिणीओ सासुरयाओ न तिप्पंति ॥ २९३
उवसंतं सयलकुडु[ती]य समीवे सुणेइ जिणधम्मं। 10
परियाणियपरमत्थ जाय धम्मुज्जुयं सव ॥ २९४
अह अन्नयो कयाई [ ]यणो।
भणइ महेसरदत्तो जणयं महुराएं वाणीए ॥ २९५
'ताय! इमो जिणधम्मो चिंतारयणं व दुल्लहो सुइ।
लद्धूण कीस तुमए बालेण व उज्झिओ जम्म चि ॥ २९६ 15
जइ कीरइ जीवदया अलिय चोरिक्कया य मुचति।
पालिज्जइ बंभवय कीरइ न परिग्गहारंभो ॥ २९७
किं इय ता न कुंष मणियमिणं सासणेसु सवेसु।
पागयनरा वि एए पंच वि धाई⁷ विमुच्चंति ॥ २९८
एए जो परिवज्जइ सो देवो सो गुरु वि किमजुत्त। 20
समदोसाणं होणइ तारेइ तरेइ को भणसु ॥ २९९
विन्नायमिण सव तुमए तया गुरुप्पसाएण।
न य भरिय नियहियए चोज्जमिण अम्ह पडिहाइ ॥ ३००
आसाइयअमयरसो पिसुमवरसस्स को नरो सरइ।
पत्तम्मि पुरहरज्जे इलियत्त को मई कुणइ? ॥' ३०१ 25
इय महुरगिरा भणिओ लग्गो मग्गम्मि जिणवरुद्दिट्ठे।
पच्छायावपरद्धो संविग्गो रुद्ददत्तो वि ॥ ३०२
इय सुणियधम्मतत्त सासुरय सवमेव संपत्त।
संगेण नम्मयासुंदरीऍ गुणरयणखाणीए ॥ ३०३

---

१ °मूलहिं २ बिहूए. ३ कुणमती ४ धम्मुज्जुयं. ५ अजवा ६ पाई. ७ विमुच्चंति ८ धरमिओ ९ जणो.

[महेसरदत्तनम्मयासुंदरीण जवणदीव पइ पयाण]

अन्नया महेसरदत्तो उज्जाणे कीलंतो भणिओ सिणिद्धमित्तेहिं – 'किमम्हे कूवदद्दुरेणेवादिट्ठदेसंतराण जीवियव्वं ? किं वा अणभिसमाए अणयविइत्ताए उच्छीए परिवायण कीरमाणेहिं चायंभोगाइविलासेहिं ? अवि य –

नियभुयविढत्तदव्वो मणोरहे मग्गणाण पूरिंतो ।
विलसइ जो न अदिट्ठं पढयमपाएण् न सो पुरिसो ॥ १०८
जे च्चिय भमंति भमरा ते च्चिय पावंति बहलमयरंदं ।
मयपरिसक्किराण होइ रई नियकुसुमेसु ॥ १०९
अप्पंडिओ वि पुरिसो अदिट्ठदेसंतरो हवइ अबुहो ।
देसंतरनीईओ भासाओ वा अयाणंतो ॥ ११० 10
पुण्णापुण्णपरिच्छा कीरइ दव्वमप्पणो मणुस्सेहिं ।
हिंडंतेहिं धणज्जणकज्जे नाणाविहे देसे ॥ १११

किं बहुणा ? –

होसु तुमं अम्हाणं [सत्थाहं] अग्गणी जवणदीवं ।
वच्चामो नाणाविहमणिमोत्तियरयणपडिहत्था ॥' ११२ 15
एवं बहुप्पयारं वयंसयाण सुणेत्तु विन्नत्तिं ।
भणइ महेसरदत्तो – 'किमजुत्तं होउ एवं ति ॥' ११३

तओ आपुच्छिऊण नियनियजणए पारद्धा संजत्ती – गहियाइं तदीवपाउग्गाइं भंडाइं, पउणीकयाइं जाणवत्ताइं, सज्जिया निज्जामया, निरूवियं पत्थाणदिवसं । एत्थंतरे पुच्छिया भत्तुणा नम्मयासुंदरी – 'पिए ! वच्चामो 20 वयं जवणदीवं ।' नम्मयाए भणइ – 'हो[१ ११ ३]उ एवं, ममावि सायरदंसण कइं संपु[रि]ज्जं' ति । इयरेण भणिय – 'तुम ताव अंब-तायपायसुस्सूसणपरा रहेव चिट्ठाहि जाव वयमागच्छामो ।'

पडिभणइ सुंदरी स – 'मा परिसमाणवेसि कह्या वि ।
न तरामि तुह विओए पाणा धरिउं मुहुत्तं पि ॥ ११४ 25
अवि जीवइ कूवरिया नीरविउत्ता वि किंचिय कालं ।
तुह विरहे पुण नियमा सहसा पावेहिं मोक्खामो ॥ ११५
एक्कपए च्चिय पियपम ! किं एव निट्ठुरो तुमं जाओ ।
किं ते सुया चेव तए लोगपसिद्धा इमा गाहा ॥ ११६
भत्ता महिलाण गई भत्ता सरणं च जीविय भत्ता । 30
भत्तारविरहियाओ बसणसहस्साइं पावंति ॥' ११७

---

१ °मेत्तेहिं २ किमिम्ह ३ वाई ४ °वाउ ५ °वत्तारं ६ निरुवंत ७ संपुज्जेति ८ ए

भणइ महेसरदत्तो– 'सुंदरि ! जवणदीवसमो जलही ।
तेण तुमए समाणं गमणं न हु [सु]अए काउं ॥ ११८
मा कुण बालगाइं मइ भणिय सुमणु ! सव्वहा कुणसु ।
आणाकारि कलत्तं सलाहिज्जइ लोयमज्झम्मि ॥' ११९
5 निच्छयनिवारणत्थं आयण्णिय नम्मया तइ पउत्ता ।
जइ निद्दओ वि भत्ता सामी करुणापरो भणियं ॥ १२०
भणइ य पुणो वि– 'सुंदरि ! रोयसि तं कीस तुह दुक्खमयं ।
आगमइस्सामि एवं मा मभसु कारणं अम्हं ॥' १२१
सा साउसावमीया विरहं दइएण सह अणिच्छंती ।
10 भणइ– 'सुहं दुक्खं वा तुमए सहिया सहिस्सामि ॥ १२२
अहवा पिइ गिहे पियं अहवा म मेहि अप्पणा सहिं ।
जइ ता जीवंतीए पुणो वि मिलियाइ तुह कज्ज ॥' १२३
विनायनिच्छयं सो अणुमेत्ता नम्मयं महुरवयणं ।
भणइ महेसरदत्तो– 'जं कहं संपिय तुज्झ ॥' १२४
सो नम्मयाइ सहिओ सहिओ मेत्तेहिं एगचित्तेहिं ।
15 मरुयच्छपरेण गुरुत्था पत्तो सरिनम्मयाकूलं ॥ १२५

तत्थ य पत्तेहिं संजत्तियाइं पव[ह]णाइं आयामेण वित्थरेणावि पायसा सहस्सपमाणाइं, सुपिंडलाइं च परिहरियलोहाइं पहाणगुणसंभमपगिहकूडारि हियाइं च, चित्तकम्माइं पिव सुनिम्मायविविचभूमिभागाइं बहुयभरूयपसंग याइं च । तओ तेसु बहुभंडलोगजलपमपमाइसंगहो, निवडा चउद्दिसु पि
20 दिसासु नंगरा, पवेसियाइं च पसरवमासर गंभीरनीरे पोयपवेसठाणे । आरूढा नियनियजाणवत्तेसु संजत्तिया । महेसरदत्तो वि समारूढो सह पियवमाए विसेसरमणिज्जे उवरिमभूमिविरइए वासमंदिरे । सो कुसलनिज्जामगकण्णधारेहिं पाणियऽणुकूलपवणपण्णयारेहिं विमज्झियाइं पवेसियाइ च महासमुद्दे जाणवत्ताइं । करवर गिरिसिहरसमाणमहल्लकल्लोलेहिं गयणाभिमुह निज्जमाणाइं, अवरत्थ
25 विलीयमाणेहिं तेहिं चेव पायालं पिव पवेसिज्ज[P. 11 A]माणाइं, खलिज्जमाणाइं महामच्छेहिं, पेल्लिज्जमाणाइं जलहत्थिमत्थएहिं, आहम्ममाणाइं मगर मच्छपुच्छच्छडाहिं, विलग्गमाणाइ विदुमवणगहणेसु, उप्पयमाणाइ पिव पवणुद्धुयसेयवडेहिं गयणाइं अणेगाइं जोयणसयाइं । तओ नम्मयासुंदरी[ए] भणियं– 'सामि ! जवणदीवसमो एस समुद्दो तेण जिणसासणे संसारउवमाणं

1 सुंदरी 2 पत्तोवाइ 3 करुणिय 4 दुक्खमयम्. 5 पिय 6 कुसली. 7 °आहरण° 8 °रमणेऽ. 9 महति° 10 विविहम° 11 विदुम

कीरइ । अन्न च कन्ने गया नगरब्भमणासया भेड्णी, रविससिगहाइणो वि ? एए किं जलयरा जेण जले उग्गमंति जले चेव अत्थमंति' इयरेण भणिय–'सुंदरि ! मा भाहि पभूयमलं वि अपुव्व दट्ठव्व ।' तीए भणियं–'एए समिहिए कयत्थाओ वि न बीहेमि ।' इच्चाइ समुल्लावपवंचस्स बोलिया वेगे दियहा । 5

[महेसरदत्तस्स नम्मयासुंदरीचरियम्मि कुसंका]

अन्नया मज्झरत्तसमए कोइ पुरिसो सुइसुहयं किंपि गाइउं पयत्तो । तस्स सरं सुणमाणीए नम्मयासुंदरीए भरिय सरमंडल पगरणं वियार्य च तस्स सरूवं । तओ अइपरिओसाओ भणिओ भत्ता–'जो एस पुरिसो गायइ तस्सेरूवमहमि इट्ठिया चेव जाणामि ।' 'केरिस ?' ति पुट्ठे साहिउं पयत्ता–'पियथम ! एस 10 वण्णे अ मेग सामो पसुलो पमुलहत्थरत्तच्छो य । अन्न च एयस्स गुज्झदेसे पयालसमवन्नो मसो अत्थि ।' त सोऊण विम्हिएण भणिय मणुणा–'कह पुण तुममिहट्ठिया जाणासि ?' तीए भणियं–'सरलक्खणपयाओ ।' तओ 'सच्चमेय न व ?' त्ति गंतूण बीयदिवसे पगंते पुच्छिओ सो सणावि 'एवमेय' ति भणिए समुप्पन्नविलीओ समालिंगिओ ईसापिसाईए असंभावणिज्जा इम भाविउं पयत्तो । 15 जवि य–

> ईसावसेण पुरिसा हवंति पुहइरिय व विवरीया ।
> न नियंति गुण संतं दोसमसंतं पि पच्छंति ॥ ३२६
> चिंतेइ कह जाणइ गुज्झपएसट्ठियं मसं एसा ।
> अह ताव न परिमिलिओ पसुलपुरिसो इमो बहुसो ॥ ३२७ 20
> नूणं निरंतरमेसो एयाए हियथमंदिरं वसइ ।
> अन्नह किह दड मणो एमा एयस्स गीयम्मि ॥ ३२८
> एसो वि महीं पुत्तो गायइ उच्चं निसीहसमयम्मि ।
> जेण नियामेइ इमा संकेओ वा इमो दुन्ह ॥ ३२९
> मोत्तूण चदमं मच्छियाओ लग्गति असुइदेसेसु । 25
> पयई इह महिलाण विलीणपुरिसेसु रज्जति ॥ ३३०
>
> भणियं च–
>
> अइरूवपाण रज्जं कुणति कीडंति पडियमणस्स ।
> महिलाण एस पयई कापुरिसेसु रमंति ॥ ३३१

---

१ °मत्तु २ नवगिरस. ३ वरम° ४ ताव ५ जाणामि. ६ असंभावणेज्जा ७ °चदमं दिवं ८ मस. ९ बहुसा. १ इमो ११ सुरा° १२ मिच्छियाउ १३ कायइ°

भणइ महेसरदत्तो–'सुंदरि ! जवणदीवसमो वसही ।
तेण तुमए समाणं गमणं न हु [जु]त्तए काउं ॥ ११८
मा कुण चालम्गाइ मह भणियं सुयणु ! सव्वहा कुणसु ।
आणाकारि कलत्तं सलहिज्जइ लोयमज्झम्मि ॥' ११९
5 निच्छयनिवारणवयं आयण्णिय नम्मया तह परुण्णा ।
जह निट्ठुरो वि भत्ता जाओ करुणापरो भणियं ॥ १२०
भणइ य पुणो वि–'सुंदरि ! रोयसि व कीस तुह दुक्खमएणं ।
अहमाणसामि एव मा भणसु कारणं अन्नं ॥' १२१
सा साहुसावमीया विरहं दइएण सह अणिच्छंती ।
10 भणइ–'सुहं दुक्खं वा तुमए सहिया सहिस्सामि ॥ १२२
अहवा चिट्ठ गिहे च्चिय अहवा म नेहि अप्पणा सद्धिं ।
जइ ता जीवंतीए पुणो वि मिलियाइ तुह कज्जं ॥' १२३
विनायनिच्छयं सो अणुवेच्चा नम्मय महुरवयणं ।
भणइ महेसरदत्तो–'जं कमइ जंपियं तुज्झ ॥' १२४
सो नम्मयाइ सहिओ सहिओ मेचेहिं एगचित्तेहिं ।
15 मडचडयरेण गुरुणा पत्तो सरिनम्मयाकूलं ॥ १२५

तत्थ य पत्तेहिं संजत्तियाइं पव[ह]णाइं आयामेण वित्थरेणावि पायंता-सहस्सपमाणाइं, सुसिलिट्ठाइं च परिहरियछिद्दाइं पढमगुणसंजमपगिट्ठकट्ठाहिट्ठियाइं च, चित्तकम्माइं पिव सुनिम्मायविचित्तभूमिभागाइं बहुयमरूयपसंगयाइं च । तओ तेसु बहुभंडजोग्गभंडपयभारसंभारो, निरूवा चउसु वि 20 दिसासु नंगरा, पवेसियाइं च पसत्थवासरे गंभीरनीरे पोयपवेसठाणे । आरूढा नियनियठाणवत्तेसु संजत्तिया । महेसरदत्तो वि समारूढो सह पिययमाए विसेसरमणिज्जे उवरिमभूमिनिरद्धए वासमंदिरे । तो दसठनिज्जामगकण्णधारेहिं पावियअणुकूलपवणप्पयारेहिं विमुक्कियाइं पवेसियाइं च महासमुद्दं जाणवत्ताइं । कत्थइ गिरिसिहरायमाणमहल्लकल्लोलेहिं गयणाभिमुहं निज्जमाणाइं, अन्नत्थ 25 विलीयमाणेहिं तेहिं चेव पायालं पिव पवेसिज्ज[प. ११ A]माणाइं, दलिज्जमाणाइं महामच्छेहिं, पछिज्जमाणाइं जलहत्थिमरवएहिं, आढम्ममाणाइं मगर नक्कपुच्छच्छडाहिं, विलग्गमाणाइं विदुमवणगहणेसु, उप्पयमाणाइं पिव पवणुद्धुयसेयवडेहिं गयाइं अणेगाइं जोयणसयाइं । तओ नम्मयासुंदरी[ए] भणियं–'सामि ! जवणदीवमओ एस समुद्दो तम्ह जिणसासणे संसारउवमाण

१ सुरमि   २ सकोरेमइ   ३ °व्वइमित्त   ४ सुहमाए°.   ५ मिव   ६ सुयमो   °चाइवत्त°   ८ °रयमेमं.   ९ महसि°   १० मिक्किमा°   ११ मिहुम

तत्तो पहायसमए पोय धरिऊण दीवनियडम्मि।
जलगहणत्थं चलिओ पवहणलोगो तहिं बहुओ॥ २४६

भणइ महेसरदत्तो–'पिच्छामो ता वयं इमं दीवं।
जइ रोयइ तुह सुंदरि!' तीए भणियं–'हवउ एवं॥' २४७

चलियाइं तओ दुन्नि वि उत्तरिउं पाऊण तम्मि दीवम्मि। 5
'अइरमणिओ दीवो पेच्छामो ताव एयं पि॥' २४८

इय एवं जंपतो हियए दुट्ठो मुहम्मि पियवाई।
परिसक्किउं पयत्तो दंसितो तीएँ वणराई॥ २४९

कत्थइ असोगतरुणो निरंतरं मेहवंदसारिच्छा।
कोइलकलयलमुहला कत्थइ सहयारतरुनिवहा॥ २५० 10

फलरससित्तवरामो निरंतराओ कहिंचि सिरीओ।
नालीरीओ कत्थइ अविरलउंबरसुवीमो॥ २५१

कत्थइ दाडिमरुक्खा कत्थइ नवीरगाहिरगुम्माइ।
कत्थइ दक्खामंडवछायापरिसुत्तसारंगे॥ २५२

दावंतो दइयाए सुंदरवणराइरायं दीव। 15
पत्तो हरयासन्नं पेच्छइ य[प. ११A]मगाहणमहुपिडं॥ २५३

माउलुंगाईफलियं साहापिवक्कपलिंगेहकयसोहं।
दट्ठूण भणइ–'सुंदरि! संतावपरिसक्कणेण तुमं॥ २५४

ता भणेमो एय कयलीहरयं मणोहरच्छाए।
तरुपल्लवेहिं सेज्ज काऊण खणं पि वसामो॥' २५५ 20

तीए 'तह' त्ति भणिए रइयाए सुहयरीएँ सिज्जाए।
सुत्ता पसमचित्ता सुविसत्था नम्मया तहियं॥ २५६

पेमस्स सुच्छयाए परिस्समाओ सुसीयपवणाओ।
भयसमभरहियमणा वसीकया झ त्ति निद्दाए॥ २५७

इयरो वि हरसियो दट्ठुं निद्दापरवसं एय। 25
सणियं उत्तरिऊण पहाविओ पवहणसमुहं तो॥ २५८

दोहिं वि करेहिं सीसं निबिडं मच्छ[र्य]उं व ताडितो।
लुक्कसरमुहो 'हा हा! मुद्धो' त्ति पलवितो॥ २५९

सहस त्ति तओ भणिओ रोयंतो चारिऊण मित्तेहिं।
'सत्यवाह! केम मुद्धो कहिं वा सा पडरा तुज्झ! ॥' २६० 30

---

१ मेहवंद० २ °हरया. ३ B मोभेमो ४ ...क. ५ निभिः. ६ रि.
...न ५

अम्हं चिंतिंति' मणे पेसलवयणाइं दिंति अम्हस्स।
[अम्हस्स] निद्धदिट्ठिं खिवंति रामंति पुण चत्तं॥ १३२

तह दंसिओ सिणेहो तहा तहा रंजियं मणं मज्झ।
एसा परिसचरिया अहो महेलाण निउणत्तं॥ [प. १२ B] १३३

एयस्स विरहभीया नूणं एसा ठिया न गेहम्मि।
बहुकूडकवडभरिया नज्जइ पुण उज्जुया एसा॥ १३४

का होज्ज एत्थ दुई किं नामं केयठाणमेयस्स।
कह नाम पत्तिओ हं एमाए गूढचरियाए॥ १३५

भिज्जइ वज्जसरिस्स मणं तोल्लिज्जइ मंदरो य धीरेहिं।
कूडकवडाण भरिय दुभेय महिलियाचरिय॥ १३६

कुवियप्पसप्पग[सि]ओ पयडुसमो इमो इहं जाओ।
धम्मज्झयम्मकम्मो परलोयभएण वि विमुक्को॥ १३७

[महेसरदत्तस्स नम्मयासुंदरीपरिच्चाओ]

चिन्तारिऊण सो गुरुभयसे पयपयचे वि।
धम्मारंभेकचित्तो चिंतइ कोहाउलो एवं॥ १३८

को होज्ज मे उवायो जेण इमा दिट्ठिगोयरे मज्झ।
चिट्ठइ न खणं पि खला मलिणियनिम्मलकुला पावा॥ १३९

अह ता चाएमि सयं' अवमाणो तओ इहं होइ।
तम्हा अण्णो न भायइ दुच्चरियं को वि पत्ताए॥' १४०

छम्मम्मामरणमज्झं गोवियकोवो विसेसियपसाओ।
जइ कह वि निसातिमिरे मुएज्ज एयं समुद्दम्मि॥ १४१

समु[६]चंते दियहे वहंते रयणिपहमग्गामम्मि।
निज्झामएण केणइ घुट्ठं उदामसद्देण॥ १४२

'भो अत्थि जलहिमज्झे दीवं निम्माणुसं वरप्पमाणं।
नामेण भूयरमणं तम्मि पहायम्मि मज्झाहं॥ १४३

तत्थऽत्थि महाहरओ गंभीरो महुरनीरपडिपुण्णो।
पेयव्वं तत्थ जलं सुयंतु संजत्तिया सव्वे॥' १४४

सोऊण घोसणं तं महेसरो धम्मओ चिंतेइ।
'होही इंधणमेयं कज्जिस्सं तत्थ दीवम्मि॥' १४५

---

१ चिंतिंति २ दंसियं चत्तियं ३ °नीहा. ४ मज्झ. ५ दीवं ६ मज्झाइं ७ वयं ८ °भरावं. ९ पहायम्मि.

अहयं पि बालभावे जइ सा गेण्हेज जिणमए दिक्खं ।
एयारिसदुक्खाणं नामं पि न ताव जाणती ॥ ३९६
अज वि जइ जीवंती संघुरीव कह पि पाविजा ।
गेण्हेस्सं[1] पवजं सुहरियपरिस्स पामूले ॥ ३९७
एसो इहेव नियमो पारिस्सं छट्ठभत्तपज्जंते । 5
नियमेण एगवारं फासुयफलपत्तपुप्फेहिं ॥' ३९८
संठविऊण हियए पेपूण अभिग्गहं[2] इमं घोरं ।
निहवइ उहयस्स तडे संकेयपट[3] चिरपसिद्धं ॥ ३९९
'जिणधम्मो बोहित्थं साहू सत्थिया सहाया मे ।
निज्जामओ जिणिंदो भवजलही दुत्तरो कह णु ॥ ४०० 10
चत्तारि मंगल मे अरहंता तह य सबसिद्धा य ।
सबो वि साहुवग्गो धम्मो सबन्नुपन्नत्तो ॥ ४०१
धन्ना हं जीयं मए सामग्गी एरिसा समणुपत्ता ।
भवसयसहस्सदुलहं निबंधणं सम्मामोक्खाण ॥ ४०२
सा संपइ मम देवो वीरजिणो विगयरागमयमोहो । 15
सयलसुरासुरमहिओ सहिओ अइसयसमूहेण ॥ ४०३
संसारभउबिग्गा एगग्गा गुरुवएसु जा लग्गा ।
सेवंति सुगुरुचरणे ते गुरुणो साहुणो मज्झ ॥ ४०४
जीवाइए पयत्थे जिणमणिए सद्दहामि सबे वि ।
न रमइ एवं पि खणं कुतित्थसत्थे मण[4] मज्झ ॥ ४०५ 20
इय दूरसम्मत्ताए पत्ताए दारुणम्मि वसणम्मि ।
सा होउ मज्झ चिंता जीवामि मरामि वा हं ति ॥ ४०६
किंचिपमेयं वसणं महाणुभावेहिं धीरचित्तेहिं ।
सहियाइं मुणिवरेहिं सुवंति जिणागमे जाइं ॥ ४०७
निप्फोडियाणि दोन्नि वि सीसावेढेण जस्स अच्छीणि । 25
नं य संजमाठे चलिओ मेयज्जो म[प १४ B]दरगिरि व ॥ ४०८
कस्स न करेइ चोज्जं असमोवसमो चिलाइपुत्तस्स ।
दुक्करकरणं पि तहा अवंतिसुकुमालमहरिसिणो ॥ ४०९
धन्नो गयसुकुमालो[11] मत्थयजलिएण जस्स जलणेण ।
दड्ढेसेसं सहसा कम्मवणं[12] चिरपरूढं[13] पि ॥ ४१० 30

---

1 गेण्हिस्सा. 2 अभिग्गहं 3 निसिहवइ 4 संकेयवयं 5 सव्वं 6 मण 7 वालीवाई. 8 मि 9 संजमाओ 10 'सुकमाल' 11 सुकमालो 12 वयण' 13 कम्मावयं. 14 'परूढं

अह परिचत्ता अहयं दुज्जणवयणेहिँ मोहियमणेण ।
तह मा मिच्छपरमम्म पसंगसुहाणइं चयसु ॥ १८२

मं मोत्तुमणो जइ ता आसि तुम कीस सणयिप्पमयाय ।
पासे नाइं मुक्का अम्मतरवेरिओ किं मे ? ॥' १८३

[नम्मयासुंदरीए धम्मक्खाणेण कालगमण]

करुणं रुयमाणीए तीए उव्वेविएण मू(मु?)एण ।
नइपत्तणएण दिमा कुलक्खरं परिसा पाया ॥ १८४

'नट्ठो सो पावपई सुद्दे ! किं रुयसि कारणे तस्स ? ।
किं पलविएण सुंदरि ! सुमारमम्मि एयम्मि ? ॥' १८५

त सोऊण नम्मयाए चिंतिय –

'मायासगया माया पसा सुरज्जाइयस्स कस्सा[प. १४ A]वि ।
नूणं न होइ अलियं गओ पिओ म पमोत्तूण ॥ १८६

म कयं किं पि अजुत्त आणा वि न खंडिया मए तस्स ।
तह हसिऊण नेहं परिचत्ता कीस सुमम्मि ? ॥ १८७

सुयणा सरलसहावा असमिक्खियकारिणो न खलु हुंति ।
एमेव जइ चत्ता अहयं कह तेण निउणेण ॥ १८८

सुपिसायाओ मीया पडिया कह इत्य दारुणे वसणे ।
कूपमिगाओ(?) तरवा खित्ता रुदे समुद्दम्मि ॥ १८९

धी धी अहो ! अकज्जं कयं अणज्जेण पियपलज्जेण ।
संचालिऊण मेहा एरवाइं पाडिया दुक्खे ॥ १९०

अहवा न तस्स दोसो पुव्वकय दारुणं समोयरइ ।
कह सुहिएण सुणिणा दिन्नो कम्ममहा सावो ? ॥ १९१

सु[णि]णो वि नत्थि दोसो महावराहेण चोइयमणस्स ।
उप्पज्जइ जेण अग्गी चंदणकट्ठे वि अइमहिए ॥ १९२

किं दुरियणे संपइ आयरियं सव्वहा विचिंतेमि ।
धीरेहिँ कायरेहिँ वि सोयव्वं जेण सुहदुक्खं ॥ १९३

होऊण कायरा जइ करेमि मरणं न हुकरं तं तु ।
किं तु अविहाणमरण निवारियं वीरनाहेण ॥ १९४

मज्झ य पमाओ कुमारसमणीओ जीवलोगम्मि ।
पियविप्पओगदुक्खा साओ सुमिणे वि न सुणंति ॥ १९५

---

१ अहं २ चत्तं ३ मो ४ वेरा ५ हरिएण ६ तत्र

नम्मयासुंदरीसमुम्मियं चिंधं भणिउमाढत्तो–'भो भो! अत्थि इह दीवे कोइ मिच्छाइमिओ' । समओ एस पोयवणियाणं, एयं मोत्तूण न गत्तव । ता ठवेह एयस्स समीवे पवहणाइं ।' ठवियाइ च तेहिं । तओ समुचिओ' समागओ इरयतीरे । दिट्ठाइं च मत्तिणधूलीए अचिरागयाए नम्मयासुंदरीए पयाइं । ताइं च सपुणाइं पिव मन्नंतो सविसेसं' पलोइऊण भणिउमाढत्तो–5 'भो भो वाणियगा! एह एह, दंसेमि किं पि कोउगं ।' समागयाणं च दंसियाइं, भणियं च वीरदासे[प १५५]ण–'न ताव एयाइं पुरिसपयाइं, जओ एयसिं पच्छिममागो मारिओ इव लक्खिज्जइ । किं बहुणा? एयाइं नम्मयासुंदरीए संतियाइं पयाइं ।' तेहिं भणियं–'अहो अच्छेरयं । कत्थ नम्मयासुंदरी?' वीरदासेण भणियं–'जइ अहमओ भवामि ता एयाइं पि10 ममाइ भवंति । एगागिणी य एसा, जओ पुरिसपयाइं नत्थि । चिरआगया मे नज्जइ जओ पइओ' दंसओ एस । ता एह ताव सम्मं निरिक्खिमो' ति भणतो चलिओ दुइयण । नाइदूरमयण निसुओ' जिणगुणपडिबद्धाइं धुइयोचाइं पडंतीए सद्दो । पवमिभाया, 'मा संखोहं गच्छिहि' [त्ति!] महया सद्देण भणियं–'निसीहि' । सा वि कहिं इत्थ उत्तमप्पो त्ति विम्हिया अप्पाणं15 संठविउ सम्मुही समुट्ठियो । तओ दट्ठूण वीरदासं पमुहं' पि दुक्खं सयणयण दंसणे पुणनवं" होइ त्ति दुक्खभरमारिया चलणेसु निवडिऊण विमुक्ककंठं रोविउ पवत्ता । तओ–

सयमेवं रुयमाणी पडिखिज्जा [सा न] वीरदासेण ।
उग्गिलियपडियपयदुक्खा जेण सुहं कुणइ नियपुत्त ॥ ४२४ 20
दोहि वि करेहिं सीसं गहिऊणुट्ठविया सणेहेण ।
आलिंगिऊण गाढं निवेसिया नियपयंकम्मि ॥ ४२५
भणिया–'पुत्ति! कहिउ कालत्था परिसी इमा तुज्झ ।
साहिज्जउ कुणंतो असंभवो तुह कह जाओ? ॥' ४२६
आसमरिसिसागाओ'' सिट्ठो तीए असेसवुत्ततो । 25
'इह ठाणम्मि पसुत्त मोत्तूण गओ पिओ ताव ॥ ४२७
अहमवि [नि]रस्स दुरा सुमणा एत्थ घणवणे दीवे ।
असुणियवत्तगुत्तब्भरा अनिपाणियत्तमिणीदियहा ॥ ४२८
गहगहिया इव भमिया "हा पिययम! हा पिय!" ति पलवंती ।
भीमम्मि एत्थ दीवे केच्चिरं त न याणामि ॥ ४२९ 30

१ भात्थीच्छे. २ पमुचिरे ३ सविसेसं. ४ इ ५ पइड ६ निसुणे. ७ °चाइं
८ °यओ ९ पाउणीया. १० पमुह. ११ पुणनव १२ °सागाय

नम्मयासुंदरीसमुम्मियं चिय भणिउमाढत्तो–'भो भो ! अत्थि इह दीवे कोइ मिच्छाइगिओ'। समओ एस पोयवणियाण, एयं मोत्तूण न गच्छइ। ता ठवेह एयस्स समीवे पवहणाइं।' ठवियाइं च तेहिं। तओ सहुपिओ' समागओ हरयतीरे। दिट्ठाइं च मसिणधूलीए अचिरागयाए नम्मयासुंदरीए पयाइं। ताइं च सपुत्ताइं पिव भमतो सविसेसं' पलोइऊण भणिउमाढत्तो– 'भो भो वाणियगा ! एह एह, दंसेमि किं पि कोउगं।' समागयाणं च दंसियाइं, भणियं च वीरदासे[प. १५४]ण–'न ताव एयाइं पुरिसपयाइं, जओ एएसिं पच्छिमभागो भारिओ इव लक्खिज्जइ। किं बहुणा ? एयाइं नम्मयासुंदरीए संतियाइं पयाइं।' तेहिं भणिय–'अहो अच्छेरयं ! कत्थ नम्मयासुंदरी ?' वीरदासेण भणियं–'जइ अहमओ भवामि ता एयाइं पि भमाइं भवंति। एगागिणी य एसा, जओ पुरिसपयाइं नत्थि। चिरआगया यं नज्जइ जओ पइओ' दंडओ एस। ता एह ताव सम्मं निरिक्खिमो' त्ति भणंतो चलिओ दइएण। नाइदूरभमणेण निसुओ' भिण्णगुम्मपरिवद्धाए पुरओवत्थं' पढंतीए सद्दो। पच्चभिन्नाया, 'मा संखोहं गच्छिहि' [त्ति !] महया सद्देण भणिय–'निसीहि'। सा वि कहिं इत्थ पुत्तमप्पो त्ति विम्हिया अप्पाणं संठविउं सम्मुही समुट्ठिया। तओ दट्ठूण वीरदासं पम्मुहं' पि दुक्खं सयणजण दंसणे पुणण्णवं'' होइ त्ति दुक्खभरभारिया चलणेसु निवडिऊण पिउच्छकंठे रोविउं पवत्ता। तओ–

खणमेक्कं रुयमाणी पडिसिद्धा [सा न] वीरदासेण।
उग्गिलियहिययदुक्खा जेण सुहं कुणइ नियपुत्त ॥ ४२४
दोहि वि करेहिं सीसं गहिऊणुद्धीकया सुयदेण।
आलिंगिऊण गाढं निवेसिया निययअंकम्मि ॥ ४२५
भणिया–'पुत्ति ! कहिज्जउ काऽवत्था परिसी इमा तुज्झ।
साहिज्जउ पुत्तो असंभवो एस कह जाओ ? ॥' ४२६
आसमरिसिसावाओ'' सिट्ठो तीए असेसवुत्तंतो।
'इह ठाणम्मि पसुत्त मोत्तूण गओ पिओ जाव ॥ ४२७
सहसवि[बि]रस्स पुरा सुमणा एत्थ पवणवेगे दीवे।
असुणियतणुगहणछुहा भवियाणियजामिणीदिवहा ॥ ४२८
गग्गरिया इव भणिया "हा पियपम ! हा पिय !" त्ति पलवंती।
भीमम्मि एत्थ दीवे केइ दिणे तं न याणामि ॥ ४२९

---

१ वाहमीओ. २ समुत्तिण्णे ३ सविसेसं ४ इ ५ पइए ६ निसुओ. ७ °वढाई ८ °वण्णो. ९ सामुहिया १० वमुह ११ पुणणवं १२ °सासार

कुव्वयंदिपपेरंते आगासमयण केणइ सुरेण।
भणियं "न एत्थ भणा कस्स कए रुयसि ण सुद्दे! ॥" ४१०

सुणियं च मए सव्वं नूणं अवउज्झिया अहं तेण।
कत्तो अवराहाओ एय पुण नेव जाणामि ॥ ४११

5 — परिमुक्कजीवियासा भाविय संसारविलसियं विसम।
जिणवरभणिय धम्मं करेमि ता ताय! पगग्मा ॥ ४१२

भणवरयमेव सुयइ महपोरो एस चउद्दिनिग्घोसो।
सामयवयणा भणेगे भमति पासेसु भयवणया ॥ ४१३

कोकंति' कोत्थुयंभणा निसाए पेम्मंति मसुपरंभाया।
10 पूरुपुरंति' बग्धा उप्पज्जइ नो भयं मज्झ ॥ ४१४

ताव चिय होइ भयं निवसइ हियपम्मि जाव जीवासा।
सा वि मए परिचत्ता तत्तो कत्तो भउप्पत्ती ॥ ४१५

झायती' धीरमिणं भाविंती विविहभावणाजालं।
दूरियअट्टदुहट्टा तायाइं एत्थ चिट्ठामि ॥ ४१६

15 ताय! ममावि कहिज्जउ कइ [प १५ B] तए आणिया अहं इत्थ।
अवम्मयं महंतं ताय! इमं मासए मज्झ ॥' ४१७

तो भणइ जुम्मणम्मो —'पुत्ति! तुहाणहिई' इह पएसे।
तह सुहियाए जाया किं न हु अवम्मयं एयं ॥ ४१८

सा संपज्जइ सुद्धी हुति सहाया वि तारिसा चेव।
20 तारिसया जियलोए नरस्स भवियव्वया होइ ॥ ४१९

न कयम मज्झ सुंदरि! मणोरहो आसि पोयवाणिज्जे।
अस्थि परे चिय विहवो सुहाइं संतोससाराइं ॥ ४२०

तह पुण्णोदयस्स व जाया एयारिसी मई कह वि।
गंतुं वाणिज्जं करेमि अन्नतरणं इण्हि ॥ ४२१

25 चलिओ मित्तेहिं समं संपत्तो जाव इह पएसम्मि।
दिट्ठा सायरतीरे ताव पडाया पवणविहुया ॥ ४२२

तं दट्ठुं" भणिओ सुंदरि! एयम्मि भूयरमणम्मि।
दिट्ठाइं तुह पयाइं नायाइं परिचयगुणेणं ॥ ४२३

तेसिं अणुसारेणं संपत्तो सुयणु! तुह समीवम्मि।
30 दिट्ठा सि तुमं संपइ निहि व दारिद्दविएण ॥ ४२४

---

१ कुव्वय' २ सुणए ३ कोकंति ४ कोल्लुय' ५ ऊरुपुरंति ६ झायंती ७ तायाइं ८ तो ९ 'णम्मो १० तुहाणहिई ११ कई. १२ 'सुणाण. १३ दट्ठुं

चिंतेमि तओ इट्ठी सा तारिसरूवकत्तिगुणकलिया।
केण इमा मह धूया छवणीया परिसमवत्थं ॥ ४४५
हा हा! खलो अणज्जो निल्लज्जो निग्घिणो[1] महापावो।
को नाम दुट्ठ पुरिसो जेण इमा पाडिया दुक्खे ॥ ४४६
नूण न अत्थि ठाण नरए मोत्तूण तस्स पावस्स। 5
जेण जणवच्छलगुणा एसा दुहसंकडे छूढा ॥ ४४७
कह से चलिया चलणा कह वा हिययं भट्ठं चि न हु फुट्टं[2]।
कह सो जीवइ लोए जेण कयं एरिसं पावं? ॥ ४४८
हा बाले! हा वच्छे! सुलक्खणे! सरलसुंदरसहावे!।
संपत्तं कह णु तए सुंदरि! एवविहं दुक्खं? ॥ ४४९ 10
अज्जेव तुम जाया जाओ परमूसवो इमो अम्ह।
दिट्ठा सि तुमं वच्छे! जीवंती कह वि व अज्ज ॥' ४५०
भणिय च सुंदरीए–'सीईभूयाइं मज्झ अंगाइं।
जाया य जीवियासा तुह मुहकमलम्मि दिट्ठम्मि ॥ ४५१
वसइ मम जीवलोओ विमलीभूयाइं दिसिमुहाइं। 15
अमयम्मि व सेया हं तुह मुहकमलम्मि दिट्ठम्मि ॥' ४५२

तओ महुरवयणोदएणं निव्वावियदुक्खानलो नीया वीरदासेण महइमहसम-लयामवणे। अब्भंगिया कल्लाणतिल्लेण, उव्वट्टिया सुरहिसोमालेहिं उवट्टणेहिं, मज्जाविया तित्थेहिं उदएहिं, अलंकिया पहाणवत्थाईएहिं, भोइया विविहरससणाहं सरीरसुहकारिणीमाहारेण। किं बहुणा? महाविज्जेणेव विसिट्ठपत्थाएहिं 20 तहा तहा पडियरिया जहा थेवेहिं चेव वासरेहिं जाया साहावियसरीरा। तओ भणिया तेण सहायमणुस्सा–'भो! संपत्तो अम्ह मणोरहाइरित्तो महालाभो नम्मयासुंदरिलंभेण, ता देह पच्छाहुत्तं पयाणयं।' तेहिं भणियं–'मा एवं भणाहि। जओ आगया बहूणि जोयणसयाणि पत्तासण्णं बब्बरकूलं वट्टइ। अन्न च एस नम्मयालाभो उत्तमो [प १६ A] सउणो। अओ चेव तत्थ गयाणं 25 विसिट्ठो लाभो भविस्सइ त्ति। अओ सव्वहा गंतव्वा बब्बरकूलअत्ता।' एवं भणिओ दुक्खिअमसारयाए तहाविहभवियव्वयानिओगओ पयट्टो वीरदासो।

थेवदिवसेहिं पत्तो पहिअजवोऽणुकूलपवणेण।
पत्तो बब्बरकूले पोयट्ठाण मणभिरामं ॥ ४५३

---

1 निग्घिणो 2 मरइ 3 फुट्टा 4 बहू 5 दुक्खाव 6 दुक्खा 7 बब्बर

कयवयदियहपेरंते आगासमएण केणइ सुरेण।
भणियं "न एत्थ मया कस्स वि कए रूसियं तं सुन्दे ! ॥" ४१०
सुणियं च मए सव्वं मूयं अपउच्छिया अहं तेण।
कत्तो अवराहाओ एय पुण नेव जाणामि ॥ ४११
परिसुक्कजीवियासा माविय संसारविलसियं विसमं।
दियहरसमियं मम्म करेमि ता ताय ! एगग्गा ॥ ४१२
अयवरयमेव सुव्वं आघोरो एस जलहिनिग्घोसो।
सावयजणा कुरंगे भमंति पासेसु भयभमगा ॥ ४१३
ओकंति[1] कोत्थुयंगणा निसाए केकंति मक्कुपसंपाया।
पूरपूरंति[5] वग्घा उप्पज्जइ नो भयं मज्झ ॥ ४१४
ताव चिय होइ भयं निवसइ हिययम्मि जाव जीयासा।
सा वि मए परिचत्ता तत्तो कत्तो मउप्पत्ती ॥ ४१५
झायंती[6] वीरजिणं भावंती विविहभावणाजालं।
दूरियवज्जइसुक्खा तायाइं एत्थ चिट्ठामि ॥ ४१६
ताय ! ममावि पयट्टउ कई [प १५ B] तए भाविया वई इत्थ।
अवकारयं मईयं ताय ! इमं भासए मज्झ ॥' ४१७
तो भणइ सुसवप्पो – 'पुत्ति ! सुराकहियं' इह पएसे।
तइ सुरियाए भाया किं न हु अवगम्मय एयं ॥ ४१८
सा संपज्जइ सुद्धी इंति सहाया वि तारिसा चेव।
जारिसया जियलोए नरस्स भवियव्वया होइ ॥ ४१९
न कयाइ मज्झ सुंदरि ! मणोरहो आसि पोयवाहिजे।
अत्थि परे चिय विहवो सुदर्वे संतोससाराइं ॥ ४२०
तइ पुणजोइयस्स व भाया पयारिसी मई कह वि।
गंतुं बब्बरकूलं करेमि सत्थजयं इण्हि ॥ ४२१
चलिओ मित्तेहिं समं संपत्तो जाव इह पएसम्मि।
दिट्ठा सायरतीरे ताव पडाया पवणविहुया ॥ ४२२
तं दट्ठुं ओयरओ सुंदरि ! एयम्मि भूधरमयम्मि।
दिट्ठाइं तइ पयाइं नायाइं परिचयगुणेणं ॥ ४२३
तेहिं अणुसारेणं संपत्तो सुयणु ! तइ समीवम्मि।
दिट्ठा सि तम संपइ निहि व्व दारिद्दविएण ॥ ४२४

---

१ कयवय° २ सुणइ ३ ओकंति ४ ओकंप° ५ पूरपूरंति ६ झायंती ७ मयाइं ८ गो ९ °चप्पो १० सुराकहिंए ११ दई १२ °पुणय. १३ अप्प°

होयइमवं सामिय ! अम्हाण पाहुणेहिं तुम्मेहिं ।
अम्हं रायाएसो कायव तुम्ह पाहुन ॥' ४६८
ता भणइ वीरदासो—'करियव सामिणीय तुह वयण ।
सवि(दी)यमेय सव कयं च तुम्मेहिं सहुइ ॥ ४६९
अम्ह वि रायाएसो पडिवखेयव' इमं तुम मद्दे ! ।' 5
भणिऊण ताडिमप्पइ अट्ठसय रूव(वी)दम्माणं ॥ ४७०
गंतूण चेडियाहिं' कहिय हरिणीए वीरसंठवियं ।
उवणीयं अट्ठसयं दम्माण पाहुड ताहिं ॥ ४७१
सामियहियपाकूयी कुविया हरिणी विचिंतई 'नूणं ।
आगंतुं' सो नेच्छइ करेइ मम माणपरिहाणि' ॥ ४७२ 10
दोहम्मिणि त्ति लोए मज्झ पसिद्धी भणागए होही ।
ता पेसिऊण दवं कोक्केमि समेव गेहम्मि ॥' ४७३
पेसेइ तओ चेडिं —'भणिऊण पणमप्पिऊण त वणियं ।
न हि मइ चयेण कज्जं तुमम्मि गेहे [प १६ अ] आगयम्मि ॥ ४७४
नो खलु रायाएसो "सुदाइ गेण्हेज त तओ वित्तं । 15
किंतु विप्पएण मामिणि ! आराहिया मण तस्स ॥" ४७५
पडिमणइ वीरदासो—'आराहियमेव मइ मणं तुमए ।
सब्भावसारमेव निमंतणं कारयंतीए ॥ ४७६
भणियं च—
वायी सहस्समइया सिणेहनिज्झाइयं सयसहस्सं । 20
सब्भावो सज्जणमाणुसस्स कोडिं विसेसेइ ॥ ४७७
ता मा काहिसि मद्दे" ! अम्होवरि अम्हा मण किंपि ।'
इय भणिऊण सदवा विसज्जिया सा गया तुरिय ॥ ४७८
किं पुण सो नागच्छइ ताओ' भमाउ वयणकुसलाओ ।
अज्जो वि पेसियाओ चेगाओ छेयचेडीओ ॥ ४७९ 25
तम्मि समयम्मि दिट्ठा आसन्ना नम्मया अणयवयणं ।
सुद्दु सुद्दु निज्झायंती सिणिद्धलोलेहिं नयणेहिं ॥ ४८०
तीए सरीरसोहं दहूण सविम्हियाउ सव्वाओ ।
भणोम वयणाई पलोइउं मे वि लग्गाओ ॥ ४८१

---

१ 'मवा. २ 'भवेभवं ३ चोडियाहिं ४ 'पाहुणा. ५ नामन्तु. ६ 'हत्थे ७ कोक्केमि ८ वेडी. ९ वाता. १० 'माणुसस्स ११ मिरे १२ ताओ १३ 'मोय' १४ अइ.

हत्थारिल्लग मेडं संबोसियपाडयस्स मज्झम्मि ।
निम्मविया य सहसा गुणरुयणी भिषगपुरिसेहिं ॥ ४५४
हीसे मज्झे सिल्ला निम्मविया नम्मयाइ पाओगा ।
चिट्ठइ य छुहोसीणा छुहा वा नम्मया तत्थ ॥ ४५५
अह अस्थि तत्थ दीवे नयरं नामेण बब्बरं रम्मं ।
मणिकणगरयणपुण्णं बब्बरलोयस्स कयतोसं ॥ ४५६
तत्थऽत्थि हरिणलंछणलच्छिकिरणुज्जलो जसपयासो ।
नामेण हरसेणो सुपयासो पुहइवीढम्मि ॥ ४५७
सो पुण हिमो पयाणं तरणी इव नियमण्डलगयाणं ।
दीवंतरागयाणं विसेसओ पोयवणियाणं ॥ ४५८
पोयट्ठाणपुराण मंतो दोन्हं पि नाहनूरम्मि ।
बहुयणकयपरिओसं वेसाण निवेसणं अत्थि ॥ ४५९
चिट्ठइ य तत्थ गणिया हरिणीनामेण नयरसुपसिद्धा ।
नरवइकयसामित्ता गणियाण सयाण सत्तण्ह ॥ ४६०
भिन्दइ सा वि निच्चं तासिं सयासिमेण दासीणं ।
सा वि पयच्छइ रन्नो भागं तइय पत्तस्स वा ॥ ४६१
अत्थि यं रायपसाओ तीए सव्वेहिं पोयनाहेहिं ।
अट्ठुसयं दम्माणं दायव्वं रायमाडीए ॥ ४६२
नरनाहकयप्पसाओ गव्वं सव्वो जणो वहइ पायं ।
पणंगणयलसहावो किं पुण पभणयाणाण्णो ॥ ४६३
सोहग्गरूवगव्वं समुव्वहंती तओ विसेसेण ।
उम्मत्ता इव हिंडइ हीलंति न[य]रजणं सव्वं ॥ ४६४

[धीरदासस्स हरिणीवेसागिहे गमण]

निसुयं य तओ तीए बहुरीवाउ आगयं वहणं ।
सामी उ धीरदासो तस्स वि अणप्पवावाओ ॥ ४६५
गोमसमयम्मि ताहे महग्घवत्थाण जुयलयं घेत्तुं ।
पहियं चेडीजुयल निमन्तयं पोयसामिस्स ॥ ४६६
भणिओ य सप्पणामं कोसल्लियमप्पिऊण सो तेण ।
'विन्नवइ भद्द ! हरिणी अम्हाणं सामिणी एव ॥ ४६७

---

१ कम्पि° २ हार° ३ °कमीह° ४ दोनं. ५ वहई ६ वे. ७ वहइ° ८ °न्नाहयं. ९ होकंती.

होयव्वमओ सामिय ! अम्हाणं पाहुणेहिं तुम्हेहिं ।
अम्हं रायाएसो कायव्वं तुम्ह पाहुण्णं ॥' ४६८
ता भणइ वीरदासो—'करियव्वं सामिणीए तुह वयणं ।
भणि(णी)यमेव सव्वं कयं च तुम्हेहिं दट्ठव्वं ॥ ४६९
अम्ह वि रायाएसो पडिवज्जेयव्वं इमं तुमं भद्दे ! ।' 5
भणिऊण तासिमप्पइ अट्ठसयं रूव(वी)यम्माणं ॥ ४७०
गंतूण वेडियाहिं कहियं हरिणीएँ वीरसंलवियं ।
ठवणीयं अट्ठसयं दम्माणं पाहुडं ताहिं ॥ ४७१
आणियमहियपाहुडपा कुविया हरिणी विचिंतई 'नूण ।
मागंतुं सो नेच्छइ करेइ मम माणपरिहाणिं' ॥ ४७२ 10
दोहग्गिणि त्ति लोए मज्झ पसिद्धी अणागए होही ।
ता पेसिऊण दूयं कोवेमि तमेव गेहम्मि ॥' ४७३
पेसेइ तओ चेडिं—'भणिऊण वयणमप्पिऊण तं भणियं ।
न हि मह वयणेण कयं तुममिम गहे[प १६ B]आगंतम्मि ॥ ४७४
नो खलु रायाएसो "गुहाइ गेण्हेज्ज तं तओ वित्तं । 15
किंतु विणएण भासिणि ! आराहिया मए तस्स ॥" ४७५
पडिभणइ वीरदासो—'आराहियमेव मह मणं तुमए ।
सब्भावसारमेव निमंतणं कारयंतीए ॥ ४७६
भणियं च—

चाओ सहस्समहिया सिणेहनिव्भाणय सयसहस्सं । 20
सब्भावो सज्जणमाणुसस्स कोडिं विसेसेइ ॥ ४७७
ता मा करिहिसि भद्दे ! अम्होवरि अण्णहा मणं किंपि !'
इय भणिऊण सहत्था विसज्जिया सा गया तुरियं ॥ ४७८
किं पुण सो नागच्छइ ताओ" भणाउ वयणाइसलाओ ।
सओ वि पेसियाओ चेमाओ चेडियपेसीओ ॥ ४७९ 25
तम्मि समयम्मि दिट्ठा आसन्ना नम्मया वयणपयं ।
बहु बहु निज्झायंती सिणिद्धलोलेहिं नयणेहिं ॥ ४८०
तीए सरीरसोहं दट्ठूण सविम्हियाउ सव्वाओ ।
असोय वयणाइ पलोइउं सं पि सुगाओ ॥ ४८१

१ °माण. २ °णवेयव्वं. ३ °योगियाहिं ४ °पाहुडा. ५ °समप्पु. ६ हर्ष ७ कोवेमि ८ वेही. ९ वाया. १० °मागुसस्स ११ भिरे १२ वाओ १३ °लोय° १४ °

भणंति य–
'ता रूववई नारी आसन्न जा न होइ एयाए ।
सहइ गहनाहतण्हा सरयंहा जा न मज्झियइ ॥' ४८२
पुणरवि सविणयमेव भणिओ पोयस्स नायगो ताहिं ।
5 'अज्ज ! पसीयसु हरिणि' हरिणीवयणं इण्हसु कन्ने ॥ ४८३
नयणेहिं को न दीसइ कम्म समाणं न हुति उल्लावा ।
हिययामयं अ पुण जणेइ त माणुसं विरलं ॥ ४८४
दिट्ठो सि न तं सुंदर ! निसामिया तुह गुणा अणण्णसमा ।
तुह दंसणूसुयमणो तेणाह सुह संजाया ॥ ४८५
10 न धणेण मज्झ कज्जं किं पुण नासेइ मज्झ गुणभामो ।
जइ न इच्छसि नियपयपुप्फेहिं गई मम पवित्त ॥ ४८६
नासइ तुज्झ वि नियमा गरुयत्त मइ गिइ भणितस्स ।
ज संतविही ठोगो विदुमो(?) तिहुवरो एस ॥' ४८७
एय महुप्पयारं भणियं सोऊण तासि दासीण ।
15 'वणरंजयरम्मगमणे धणवइ ! को नाम दोसो त्ति ॥' ४८८
इय मित्तवयणसवणा कामम्मकामो वि पुरिससुगणहिओ ।
सहस त्ति वीरदासो पत्तो गेहम्मि हरिणीए ॥ ४८९
अब्भुट्ठिऊण तीए पारद्धा आसणाइपडिवत्ती ।
पल्लंकम्मि निवुत्थं पडियं एगागं चेडीए ॥ ४९०
20 'जणस्स वंभमोहणि ! नवपढमसिउ[ऊ]मयरद्धस्स ।
आयारिमेयवसिओ न कज्जकरणक्खमो एस ॥' ४९१
जसुमियसम्माणाए हरिणीए पुच्छिया रहे' चेडी ।
'साहेहि फुड भद्दे ! भावत्थमिमस्स पढियस्स ॥' ४९२
तीए भणियं–
25 'एय समीवे रमणी" दिट्ठा अम्हाहिं तस्स पत्ताहिं ।
उवसिरंभतिलोत्तमगोरीयं[']॥ ४९३
तरुणमणमोहकारणसुयणम्मयणमयधूवदेहसोहाए ।
तीसे पासम्मि धुवं न सहसि तं हरिणि ! हरिणि व ॥ ४९४
तं मोत्तूण न कत्थइ मणभमरो रमइ नूणमेयस्स ।
30 ता किं उवयारपरिस्समेण बज्झेण एयस्स ॥ ४९५

१ °णाह. २ पसीयस. ३ हरिणी. ४ वाय्य ५ °भमो. ६ निवुत्थं. ७ °पवन° ८ वाया° ९ °भमो. १० भो ११ रमणीहिं १२ °तिलोत्तिम°

लद्धावसरा पेच्छं दाहिणपासि भणेइ – 'हे सुयणु! ।
सुरारयणममणुयं कज्जलं एरिसे मज्झ ॥' ५११

भणइ य नियचेडिं तो – 'दंसेहि इमं सुवण्णयारस्स ।
पयाए घडणीए सुर खिप्प घडावेहि ॥ ५१२

उट्ठिउकामो एसो आगवयं अम्हो तुरियतुरियं ।'
इय भणिय पुव्वचेडी पट्ठविया गहियसंकेया ॥ ५१३

[हरिणीचेडीहिं नम्मयासुंदरीए हरणं, तीए पलायणं च]

चेडीसंजुसमेया पत्ता सहस त्ति पोयठाणम्मि ।
दिट्ठा य सुदनिसमा असहाया नम्मया ताहिं ॥ ५१४

'भद्दे! सो तुह भणिओ हरिणीभवणम्मि संठिओ संतो ।
जाओ अपडुसरीरो तेण तुमं खिप्पमाहूया ॥ ५१५

तुह पच्चयजणणत्थं सुरारयणं इमं तु पट्ठवियं ।'
एवं भणमाणाहिं समप्पिया मुद्दिया तीसे ॥ ५१६

सोऊण इमं वयणं संभंता नम्मया विचिंतेइ ।
'न घडइ तावस्स इम अलिय जंपंति एयाओ ॥ ५१७

अहवा पयइअणिच्चे संसारे एरिसं पि संभवइ ।
अन्नह सुरारयणं कीस इम पेसिय तेण ॥ ५१८

तह वि न जुत्तं गंतुं असहायाए इमाइ सह मज्झ ।
मन्नेमि ता सहायं परियणमज्झाओ कं पि ॥' ५१९

जोएइ निहालेइ य पुणो पुणो नियमणूसं कं पि ।
भवियव्वयानिओ[...]या न य दिट्ठो को वि कत्थावि ॥ ५२०

विम्हयवसविमूढा ठाउं गंतुं च नेव चाएइ ।
तो ताहिं पुणो भणिया – 'न एसि कह ? तुंच ता अम्हे ॥' ५२१

चिंतइ पुणो वि एसा अगयाए मूण रूसिही नाहो ।
आणइ गुणागुणं सो नेव किमन्न चिंताए ॥ ५२२

पुव्वकयासुहकम्मेहिं चोइया नासिमम्मओ ठाउं ।
संचलिया सा बाला बलवं खलु कम्मपरिणामो ॥ ५२३

ताहिं परिवेढिया सा नाया केणावि नेव वच्चंती ।
भूमीगिहम्मि छूढा पिहियं दारं च तो ताहिं ॥ ५२४

---

१ °णा २ सिव° ३ °ममणुया ४ तुह ५ कि. ६ दसेय ७ तेण

दिट्ठम्मि अंधयारे हरिया एयाहिँ इय परिसाए।
मुच्छानिमीलियच्छी पडिया सहस त्ति धरणीए॥ ५२५

करकइ त्ति रुद्दसमा विमुक्कपुक्क सरेण करुणेण।
पणमवि चिरं परुन्ना न सुया कयावि धन्नेणं॥ ५२६

'हा हा! अकज्जमेयं किं राया नत्थि कोइ इह नयरे।
हरियाऽकमणवराहा निब्भयचित्ताहि दासीहिं॥ ५२७

एसा णु मिच्छपल्ली किं वा चोराण एस आवासो।
अमहमकयावराहा हरिया मयाहिँ रंडाहिं॥ ५२८

किं नत्थि कोइ रक्खो सोयाँ वा नायपच्छमो को ऊ।
जेणेवमणवराहा हरिया इ चोरनारीहिं॥ ५२९ 10

सुरपयडम्मि दिवसे हरिया इ पिच्छ पावविलयाहिँ।
सो एस छत्तंहंगो खाओ रायम्मि जीवंते॥ ५३०

हा तायय! कत्थ गओ मा मा अभरय म गवेसेसु।
अम्मामि एत्थ अहय इहा नओनमे घरए॥ ५३१

त ताय! कत्थ चिट्ठसि पया तुह सुरिया कडमिमाहिँ। 15
अम्हाण वि जीएय इमत्थ होम तुह ताय!॥ ५३२

तुह सुदाइसमओ मुहा इ ताय! त्ताणमाणा वि।
मा रूसि[दि] त्ति सामो मीया एयाहिँ मइ चलिया॥ ५३३

हा! निमिहा कम्मगई पत्तो बीओ न कोइ तुह सत्ते।
विहिया खलेण तायय! रुद्दा मइ वि दिसिमाया॥ ५३४ 20

तुह दसणेण तायय! छुट्टा पुत्र पि घोरदुक्खाओ।
ता एहि एहि पुणरवि तुरिय मइ दंसण दसु॥ ५३५

जामं भणंती तायय! त किर अघरएछरो मज्झ।
त अलिय पिय जायं तुह विरहे जीरमाणीए॥ ५३६

हा ताय! मज्झ हियय बज्जसिमायाहिँ निम्मियं नूणं। 25
जं भत्त पि तुह विरहे न जाइ मयसिरं महमा॥ ५३७

हा ताय! अह मूढा तुमाउत्तं विपाणमाणी वि।
तुह करभूमणमुक्का पडिया दुक्खदइ पार॥ ५३८

करमासि तम्मि दंते मया अहं ताय! मुद्दपरिमाया।
संपइ इयदुक्खचा न पाविमा कइ मरिस्मामि॥ ५३९ 30

१ दमोव. २ कोरा. ३ को. ४ °बमिरन्मि ५ को कर खबक° ६ मिवरा. ७ वीमो ८ जायं

अह मग्गाओ भीया सहसा सीहस्स पडइ उच्छंगे ।
तह मोइया वि तुमए इमम्मि दुरसंकडे पडिया ॥ ५४०

नूणं सुमिणरसाओ अज्ज वि न हु निरवसेसओ होइ ।
उवणयमेरिसदुक्खं पुणरवि जं दारुणं मज्झ ॥ ५४१

संगीकयमरणाओ किं काही मज्झ आवई एसा ।
न हु रिउ स महाभुमावो छिज्जिस्सइ मह कए ताओ ॥ ५४२

पाणेहिंतो' वि पिया तस्साहं आसि सुयं[पृ० १८ A]सुया वि ।
मह विरहदुक्खिओ सो पाविस्सइ किं न यायामि ॥' ५४३

एयाणि य अन्नाणि य पलवंती पुणु पुणो वि मुच्छंती ।
करुणसरं रुयमाणी अच्छइ परए नरयतुल्ले ॥ ५४४

दासीहिं पुणो गंतुं हरिणीहरस समप्पिया तुरा ।
भणिय च—'तुम सामिणि ! अम्हाहिं कओ सुहापसो ॥' ५४५

सो भणइ धीरदासो—'भयच्छि ! [ग]च्छामि नियपमावासं ।'
नम वि भणडीए पयो सो पोयठाणम्मि ॥ ५४६

[धीरदासस्स नम्मयासुन्दरीगवेसणा, गिरिं पइ पयाणं च]

पढमं चिय परिखिवई दिट्ठिं सो नम्मयापडकुडीए ।
न य दीसइ त्ति पुच्छइ—'कत्थ गया नम्मया कहह ? ॥' ५४७

पडिभणइ परियणो सो—'आयामो अत्थि पडकुडीमज्झे ।
अवरस सा न गच्छइ निरूविया तो न अम्हेहिं ॥' ५४८

'नूणं मज्झ पयाहिं हरिणीगेहम्मि सा गया होही ।'
मंतूण तत्थ पुच्छइ तामो पयमंति—'नाऽऽयाया ॥' ५४९

ताहे मइवियहो(इ?) वमभिस्सन्दो पुणो मण(म)इ तुरियं ।
भणइ य परियणमिणे—'गवेसिमो नम्मयं तह ॥' ५५०

सव्वो अमेसियी सबाहिरब्भंतरे पुरे तम्मि ।
पुच्छंतेहि वि नूणं पउत्तिमेत्तं पि नो पत्त ॥ ५५१

तो गंतूण नरिंदो भणिओ—'दावेहि पसायं देव ! ।
जो मह दंसइ भूयं तस्स पसाओ अहं सामि ! ॥ ५५२

खेवियमेत्तं च तुहा तुज्झ पयच्छामि विविहं कणयं ।
दुवियकस्वेण पुरे कारिज्जउ घोसणं देव ! ॥' ५५३

१ निसिनिस्सइ २ पमोईसमे ३ दीसव ४ निरविया. ५ समभिस्सन्तो ६ सामि-
सिया. ७ व

तिमि प दिमाई रमा क्वाविओ पवहणो उमयकालं।
पोसणएण समाण न य लद्धा कत्यइ पउत्ती ॥ ५५४

सहस त्ति वीरदासो मुच्छाविहलंघलो महीवीढे।
पडिओ निरासचित्तो मिलिओ य तओ सयणवग्गो¹। ५५५

चंदणजलेण सित्तो पवीइओ विविहवीयणाईहिं। 5
कहकह वि लद्धसन्नो सोहे पुक्करिउमारद्धो ॥ ५५६

'हद्धी [मह] अपावो इमियपलोयस्स मज्झपारम्मि।
जीवियभूयं भूयं सहस च्चिय नासयंतेण ॥ ५५७

अवहरियं नयणजुयं खलेण उद्दालिय च सव्वस्सं।
छिन्न च उत्तिमंग जेण हिया नम्मया मज्झ ॥ ५५८ 10

हा पुत्ति! कत्थ चिट्ठसि कत्तो गच्छामि कत्थ पुच्छामि।
दच्छिस्सं कत्थ गओ तुह मुहपउमं कहसु वच्छे! ॥ ५५९

पवं महानिहाणं सहसा भूएहिं मज्झ अवहरियं।
दिट्ठा वि सुमरदीवे न दीससे जइ तुमं मज्झ ॥ ५६०

अम्मंतरम्मि कस्सइ अवहरियं किं मए महारयणं। 15
अवहरिया सि किसोअरि! तेण तुमं मह अउन्नस्से ॥ ५६१

दाइस्सं कस्स मुहं माहिस्सं कस्स नियमदुपरियं।
महेण व जम मए कराहिय हारियं रयणं ॥' ५६२

इय विविहं पलविंतो मणिओ मित्तेहिं ईसि हसिऊण।
'पुरिसो त्ति तुमं मुवसि पलवसि रंड व्व किं एवं ॥ ५६३ 20

किं पलविएण इमिणा पत्ती कत्तो वि नम्मया तुज्झ?।
उज्झसु कायरभावं करेहि धीरत्तण हियए ॥ ५६४

अवि य –

सिरपिट्ठणरुण्णयणं सुव्वइ अह कायराण ववहारो।
धीरा छलविणट्ठे उवायवत्ताणि भावंति ॥ ५६५ 25

मा। प १८ B मिहि कुड सुंदर! चेट्ठामो ताव इत्थ दीवम्मि।
ताव म हु होइ पयडा सुचिरेण वि नम्मया तुज्झ ॥ ५६६

ता गंतूण सनयरं आगच्छामो पुणो वि पच्छन्ना।
अह म वियाणइ लोओ छुणा ममामिहाणेहिं ॥ ५६७

---

१ इम्मो २ वदमेिठर्ण ३ नम्मयो ४ मरई ५ अउवस्स ६ इम्मइ
७ भावंति. ८ दीवंति ९ म
मम ७

चिंतेमो। किं तु सो तुह वाणियगो अम्ह संतियं किं[1] पि आहरणं न देइ तेण तुममवरुद्धा सि। जया सो दाही तया तुमं पि मुंचिहिसि[2]। मा भणेसि "सो मम दव्वं न याणइ[3]" जाणेइ चेव। किं तु वणियाण ममयाओ तमयाओ घरणीओ परणीओ वि सयासाओ अत्थो अवहच्छिओ होइ। तेण दायव्वं पि दुक्खेण देंति। जइ तस्स तुमं पिया ता सिग्घमेव दाही। तुमं पि मुंचिहिसि।5 एस परमत्थो।' तओ नम्मयाए चिंतियं–

'एसा जंपइ महुरं हियए हालाहलं विसं वसइ।
को पत्तियइ सढाए पावाए चप्फलगिराए॥ ५७९
न कयाइ मज्झ ताओ न देइ आहरण[4] मुद्द पि।
एयमणियस्स उचियं करेमि पडिउत्तरं किं पि॥' ५८० 10

एवमालोचिऊण[5] भणियं नम्मयासुंदरीए–'मोहणि! जइ एवं ता मुंचाहि म सेव सकेय तुह [आ]हरणं दुगुणं तिगुणं वा दवावेमि। देमि तुह दाडिम[ह]स्यं, अम [प ११A] वा तुमं सवइ कारेहि।' तओ तीए भणियं–'मुंचामि जइ ते इच्छा। नाइ सवहेहिं पत्तियामि' त्ति भणती उट्ठिऊण निग्गया हरिणी। न सुयं नम्मयाए। तयाइदेहम्मओ(सइयदियहे भरउ?) ताव छुहाए त्ति15 मारिंती न पत्ता चेव तीए सगासं इयासा नोवणीयं च भोयणं। पुणो चउत्थे दिवे 'मा मरिहि' त्ति संकाए समागया भणिउ च पवत्ता–'निब्भग्गे! करेहि भत्तग्गहणं। जीवंतो जीवो कल्लाणमायण भवइ त्ति।' ताहे 'अणुकूलो मम एस धम्मो सउणो। नूण भविस्सइ मे जीवमाणीए सामसंपत्ती। एसा वि वयणवियवयणा सिसिरहियया होइ' त्ति कलिऊण वयासुयासुवियारिणीए20 'मंम पगतहियया लक्खिज्जसि ता करेमि तुहाएसं जेण अम्ह पि मे हियं समए चिंतियं' ति चिंतीयं[6] अट्ठमभत्ताओ पाणधारणनिमित्तं सुयं नम्मयाए।

एवं अट्ठमभत्ता पुणो पुणो पारणं करेमाणी।
तम्मि घरयम्मि चिट्ठइ[11] दुक्खमाणी नरयसारिच्छे॥ ५८१
हंसी पत्नरछूढा सरइ जहा भमिरयं कमलसंडं। 25
तह नम्मया वि सुमरइ निरंतरं नमणिअमयाण॥ ५८२
न तहा बाहइ[12] तीए नियअंगे उट्ठिया महापीडा।
जह पियविस्स हियए मार्विंतीए विरहदुक्खं॥ ५८३
पवासमावासा वग्घीए कयइ(ए) जहा हरिणी।
तह कंपमाणहियया भएण एसा वि हरिणीए॥ ५८४ 30

---

१ कि. २ मुंचिहिसि ३ जायाइ ४ वडियं ५ °माळोचिऊण. ६ चिंतयंता. ७ °महएम्मे ८ सम ९ से १० वीतीए. ११ चिहुर १२ वाहद १३ चमा

ताहे पेच्छेस्सामो[1] चिपरीति[2] नम्मयं न संदेहो ।
परियाणियपरमत्था जं जुत्तं त करीहामो ॥' ५६८

सोऊण मित्तवयणं उवायमयं अपिच्छमाणेण ।
जुत्तमिणं ति कलिया पडिवन्नं वीरदासेण ॥ ५६९

विणिओइऊण खिप्पं नियमंडं[3] गहियपउरपडिभंडा ।
चलिया पडिपहेणं संपत्ता नम्मयानयरं ॥ ५७०

सिट्ठा य बंधवाणं वत्ता भत्तेहिं[4] जा महाभत्ता ।
सुणो वि वीरदासो धणं[5] परुणो सयणसहिओ ॥ ५७१

रोयंते चिरं सयणा सोयत्ता संठवंति अन्नोन्नं ।
'हा ! निग्घिणो ह्यासो पुत्तो सो रुद्ददत्तस्स ॥ ५७२

नत्थि धयम्मे पत्तो[6] एयाण कुले य निच्छओ चेव ।
दिट्ठसयस्स(?) वि वयं पयारिया तेण पावेण ॥ ५७३

अहवा सो चेव खलो निक्को केणावि असुहकम्मेण ।
परिसमिस्सीरेयणं उज्झइ कयमन्ता मूढो ॥ ५७४

मा गेण्हह स नामं न कज्जमम्हाण तस्स वत्तीए ।
लोएमो तं बालं निद्दोसं आवयावडियं ॥ ५७५

सा परघरंसंपत्ता सहिही नूण कयत्थणा भीमा ।
काही न सीलभंगं पाणच्चाए वि नियमेण ॥ ५७६

अवि य—

जवि कंपइ कणयगिरी उवेइ सूरो वि पच्छिमदिसाए ।
तहइ जलम्मि अग्गी न हु खंडइ नम्मया सीलं ॥ ५७७

खय न हु पुव्वकयं कम्मं तीए महाणुभावाए ।
उवसग्गरिमाणयाओ उवेंति जं सुद्धसीलाए ॥' ५७८

एवं च नम्मयासुंदरीदुक्खसंतावानलज्झमाणमाणसो[7] सव्वो वि नम्मयापुर जणो दुक्खेण कालं गमंतो चिट्ठइ ।

[हरिणीए नम्मयासुंदरिं पइ कवडसमासणं]

सा वि पुण नम्मयासुंदरी तम्मि य चारगगिहे रुयमाणी विलवमाणी, पीयंदिवसे चेडीहिं उवणीयं भोयणं [अ]णिच्छमाणी, बहुदुक्खभरियाए हरिणीए [भणिया]—'वच्छे ! भुंजाहि भोयणं । न किंचि अम्हे तुहसुंदर[8]

१ पेच्छेसामो २ चिपरंती ३ दियमंड. ४ जग ५ घोरंतु ६ नत्तु. ७ पेच्छमो ८ निहओ ९ °सिल्ली १० परघर° ११ °घर १२ कमेह १३ सुह° १४ °मारण १५ °दीव १६ °सुंदर.

चिंतेमो। किं तु सो तुह वाणियगो अम्ह संतियं किं पि आहवइ न देइ तेण तुममवरुद्धा सि। जया सो दाही तया तुम पि मुचिहिसि। मा मन्नेसि "सो मम दव्वं न मग्गई" आवेइ चेव। किं तु वणियाणं जणयाओ तणयाओ जणणीओ घरणीओ वि सयासाओ अत्थो अच्चवल्लहो होइ। तेण दायव्वं पि दुक्खेण देंति। जइ तस्स तुमं पिया ता सिग्घमेव दाही। तुमं पि मुचिहिसि। एस परमत्थो।' तओ नम्मयाए चिंतियं–

'एसा संपइ महुरं हियए हालाहलं विसं वसइ।
कज्जे पत्थियइ सलाए पावाए चप्फलगिराए॥　　५७९
न कयाइ मज्झ ताओ न देइ आहरणं मुहुत्तं पि।
एवमणियस्स उचियं करेमि पडिउत्तरं किं पि॥'　　५८०

एवमालोचिऊणं भणियं नम्मयासुंदरीए–'मोहणि! जइ एव ता मुंचाहि म केण अजेव तुह [आ]हवं दुगुणं तिगुणं वा दवावेमि। दमि तुह दाहिण[इ]त्थं, अह [प १९A] वा दुक्करं सव्वं कारेहि।' तओ तीए भणियं–'मुजाहि जइ ते इच्छा। नाहं सव्वेहिं पत्तियामि' त्ति भणती उडिऊण निग्गया हरिणी। न मुत्तं नम्मयाए। तयइदेहम्मओ(तइयदियहे मरउ?) ताव छुहाए त्ति मार्गिती न पत्ता चेव तीए सगासं इयासा नोयमीय च मोयणं। पुणो चउत्थे दिवे 'मा मरिहि' त्ति संकाए समागया भणिउं च पवत्ता–'निम्मग्गे! करेहि कवलग्गहणं। जीवंतो जीवो कल्लाणमायणं भवइ त्ति।' ताइ 'अणुकूलो मम एस वाइओ सउणो। नूणं भविस्सइ मे जीयमाणीए सामसंपत्ती। एसा वि अणुवत्तियवयणा सिसिरहियया होइ' त्ति कलिऊण चत्ताजुत्ताजुत्तवियारिणीए 'मम पगंतहियया लक्खिज्जसि ता करेमि तुहाएसं जए अम पि मे' हियए दुमए चिंतियमं' ति विंतीए अट्ठमभत्ताओ पामभारणनिमित्तं मुत्तं नम्मयाए।

एवं अट्ठमभत्ता पुणो पुणो पारणं करेमाणी।
तम्मि घरयम्मि चिट्ठइ रुयमाणी नरयसारिच्छे॥　　५८१
हंसी पंजरछूढा सरइ सया अविरयं कमलसंडं।
तह नम्मया वि सुमरइ निरंतरं सयणविजणयाणं॥　　५८२
न तहा बाहेइ तीए नियभंगे उट्ठिया महापीडा।
जह पिययस्स हियए मार्गितीए विरहदुक्खं॥　　५८३
पंचासयावासा वग्घीए कंपइ(ए) जहा हरिणी।
तह कंपमाणहियया भयम्मि एम्मीं वि हरिणीए॥　　५८४

१ कि. २ मुचिहिसि ३ भाणइ ४ कविसं ५ °माणोचिऊण. ६ निवचा. ७ महाइणो ८ पम ९ के १ वीतीए. ११ चिट्ठइ १२ बाहइ १३ एमा

निगगुणगणगरिमाई पुरओ ताई पुणो परिगुणंती ।
चिट्ठइ मोक्खासाए परिभाविंती इम हियए ॥ ५८५

'कइया होज्ज दिणं तं जत्थाहं साहुणीण मज्झम्मि ।
धम्मज्झाणोवगया करेज्ज सिद्धंतसज्झायं ॥' ५८६

5 [नम्मयासुंदरीए गणियत्तणे हरिणीकओवएसो]

अभया भाणिऊण पडिगए पवहणवणिए 'सिद्धं मम कज्जं (कज्जं?) ति पहुट्ठियया समागया नम्मयासुंदरिसमीवं हरिणी, भणिउं पवत्ता– 'हला! पेच्छ तेण वणिएण जं कयं। न दिन्नं मम देयं । तुम पि मोत्तूण गओ। चिरयाउ तस्स ववहारो जो तिहुयणमोहिणिं नियमाउत्तं परिच्चयइ । ता भद्दे! 10 मा तुमं तस्स कारणे सिज्जिहिसि । चेट्ठ निहुया मम गिहे इमिणा मम परिय णेण सद्धिं विलसंती । नाहं तुह माराओ पीडेमि । मम वयणकारिणीए न ते किं पि असुहं भविस्सइ।' तओ 'मूर्यं मम पउत्थिमपाविऊण निरासीभूओ पडिगओ ताओ । होउ तस्स कुसलं ममाए मदमगाए न याणामि' किं पि अणुमवियरं' ति चिंतिऊण पडिभणियं–'क्व ममानिवुई तुह समीव 15 द्वियाए! तुममेव मम हियाहिय चिंतेसि' त्ति वुत्ते भीणिया भूमिगिहाओ, गिहमज्झे मोक्कलचारेण चेट्ठइ त्ति । अभया पुणो वि भणिया हरिणीए– 'सुंदरि! कुलओ माणुसीभावो, खणभंगुरं तारुण्णं, एयस्स विसिट्ठसुहाणुभ वणमेव फलं। तं च संपुण्णं वेसाणमेव संपज्जइ, न कुलंगणाणं। जओ पइणामवि मोयणं पइदियहं ईसमाणं न कीइए, तहा दुरणप्पा[ए]ए, जहा नवनवं 20 दि[५ ११] णे दिणे। एव पुरिसो नवनवो नवनवं मोमसुहं जणइ य।

अन्नं च–

वियरिवइ सच्छंदं पेज्जइ मज्ज च अमयसारिच्छं।
पवक्खो विव सग्गो वेसाभावो किमिह बहुणा! ॥ ५८७

तुज्झ वि रइरूवाए पुरिसा होहिंति किंकरागारा ।
25 वसियरणभाविया इव दाहिंति मणिच्छियं दव्व ॥ ५८८

एयाओ सव्वाओ अहं मे दिंति नियविहवस्स ।
तं पुण महं इहयरी वेज्जाहि पउरथयं भायं ॥' ५८९

इय दासीपुत्तीए नाणाविहजुत्तिउवनिउणाए ।
भणिया वि न सा भिन्ना अलेमं छट्ठसत्तमिथि व ॥ ५९०

---

१ कडइ' २ सद्धिं ३ भाणिओ ४ जन्मपिट्ठं

भणिउं च पवत्ता-
'जं जस्स जणे रूढं उब्भइ तस्सेव सामि ! तं(त) कम्मं ।
न सहइ चलणाभरणं सीसम्मि निवेसियं कह वि ॥ ५९१

भणियं च-
जं जसु घडियउ त तसु छज्जइ उड्डइ पाइ कि नेउरु पज्जइ ? । 5
सुइ वि शुक्कइ सुक्कउ न क्षणइ कय वि धम्मयरत्तणु गिहिवइ ॥५९२

तुम्हाणं चिय सोहइ एसायारो न ताउ अम्हाणं ।
लज्जाए मह हियए फुडइ व इमं सुमतीए ॥ ५९३

जं जस्स कुले रूढं त तस्सा सुंदरं न पडिहाइ ।
मणइ जणे धम्मयरो सुइ सुयण मरं मज्झ ॥ ५९४ 10

बुत्ता सि मए सामिणि ! सव्वं काहामि जं तुमं भणसि ।
एसचली कम्मो मे मा गणियव्वं समाइसमु ॥' ५९५

पुणरवि भणेइ धुत्ती-'एसो धम्मो जयम्मि सुपहाणो ।
जं बहुनराण लोयम्म कीरइ अंगप्पयाणेण ॥ ५९६

अहवा धम्मे दिज्जइ नियसरीरेण अज्जिओ अत्थो । 15
एसो वि महाधम्मो जइ कज्जं तुज्झ धम्मेण ॥' ५९७

पडिभणइ नम्मया त-'धम्मो पाविज्जए ण विभवेण ।
उप्पज्जइ इह सामिणि ! सुणेहि इत्थं पि दिट्ठंतं ॥ ५९८

चतुरीयदीयाओ न होइ अंबरंमि उग्गमो लोए ।
एवेंजियचवाओ एव धम्मो वि ना होइ ॥' ५९९ 20

पुणरवि हरिणी जंपइ-'मूढं अइपढिया सि तं बाले ! ।
न मुणसि अत्थेण विणा कह पूरिज्जइ अठरपिठरी ॥ ६००

अत्थस्सेसोवाओ किलेसरहिओ सरीरसुहलक्खणओ ।
विहिणा अम्ह सिद्धो तम्हा इत्थं समुज्जमसु ॥' ६०१

भणिय च नम्मयाए-'अत्थोवणओमि जइ तुमं भणसि । 25
करेमि छण्हसोत्तं करेमि गंमि व धूवं वा ॥ ६०२

जाणामि रसवइविहिं पक्कभविहिं च बहुविहं काउं ।
दसेहि कं पि कम्मं एगं गणियत्तण मोत्तु ॥' ६०३

---

१ इम २ सामिणिय ३ सुरीरत्थ' ४ मवव ५ एवं' ६ हरिणी ७ मिम.
८ 'ओवाओ ९ लसयइ' १ छण्हसोत्तं

होउ सरीरे पीडा नाहं पीलेमि अप्पणो सीलं ।
अकलंकियसीलाए मरणं पि [न] बाहए मज्झ ॥ ६१८

[1] बाहई पुण ज एसा अयाणमाणी मणोगयं मज्झ ।
संतावइ अप्पाणं इमे वि आणाकरे पुरिसे' ।।' ६१९
भारं भारं पुच्छइ हरिणी – 'किं रमसि अम्ह मग्गम्मि ? ।' 5
'न हि न हि न हि' त्ति जंपइ सा वि दई हम्ममाणा वि ॥ ६२०
[2] भणइ हरिणी – 'पहणह मारह पूरेह निम्भिणा होउ ।
मुयइ जेण इयासा छिंदती अप्पणो गाई ।' ६२१
इयं चोइएहिं तेहिं वि तह तह [सा] निद्दय इया बाला ।
जह सरवा मुच्छ खणेण सुनिरुद्धनीसासा ॥ ६२२ 10
'मा मरिहि' त्ति पुणो वि हु सित्ता सलिलेण दाविओ पवणो' ।
कहकह वि लद्धसन्ना पुट्ठा तं चेव सा भणइ ॥ ६२३
'नीसमउ' त्ति विमुक्का मज्झण्हे तह पुणो दढं पहया ।
अवरण्हे वि तहेव य पहया आ पाविया मुच्छं ॥ ६२४
इय कित्तियं च भणइ तीए पायाइ निग्घिणमणाए । 15
बहुहा कयत्थिया सा संपुन्ना तिन्नि जा मासा ॥ ६२५

[करिणीकय नम्मयासुंदरीए दुक्खमोयणं]

अह अत्थि तत्थ वेसा करिणी नामण महियो किंचि ।
दई कयत्थणं त जाया करुणापरा धणियं ॥ ६२६
ता एगंते तीए संलवा नम्मया – 'सुम भद्दे ! । 20
किं सहसि आयणाओ' एयाओ घोररूवाओ ॥ ६२७
कीरउ हरिणीवयणं कुहिजसि दुक्खरं तुमं किमि[३ ४ ५]ह ? ।
कीरउ सुहिओ लोओ जेण इमा हरिणिया भद्द(?) ॥ ६२८
तंबोलकुसुमपमुहो भोगो सवो वि सुहगे अम्ह ।
ता कीस तुम मुद्दे ! एव वयसि अप्पाणं ? ।।' ६२९ 25
भणइ नम्मया सो – 'पियमहि ! नेहेण कहसि मह सिक्खं ।
ता साहेमि फुडं तुह पच्छन्नं नत्थि सहियाण ॥ ६३०
जावज्जीवं गहिओ नियमो म सुयणु ! पुरिससंगस्स ।
नियवायापडिवन्नं जीवंतो को जए चयइ ? ॥ ६३१

१ बाहइ २ दुमिलो ३ इह ४ चएग? ५ महिला ६ जायणाउ ७ हट्टे

कस्स व न होइ मरणं जियलोओ कस्स सासओ होइ ? ।
अंगीकयमरणाए पियसहि ! जं होइ तं होउ ॥' ६३२

पुणरवि पुच्छइ करिणी – 'सुंदरि ! किं होइ तुज्झ सो वणिओ ? ।'
इयरी पभणइ – 'सुयणु ! पियपिययमो मज्झ सो होइ ॥' ६३३

'जइ एवं सुविसत्था चिट्ठसु मोएमि अज्ज दुक्खाणं ।'
इय संपिऊण पत्ता करिणी हरिणीसमीवम्मि ॥ ६३४

पभणइ – 'सामिणि ! एसा मारिज्जइ कीस बंदिणी दीणा ? ।
किं वसइ तुज्झ हियए एसा वणियस्स तस्स पिया ? ॥' ६३५

सा भणइ – 'सच्चमेयं पयाए मोहिएण वणिएण ।
नाहं खणं पि मुक्का जा एसा वेरिणी मज्झ ॥' ६३६

करिणी पभणइ – 'सामिणि ! मा कुणसु मणम्मि एरिसं संकं ।
जेण सहोयरभूया एसा भणिज्जिया तस्स ॥ ६३७

कयपुरिससंगनियमा वंसवया निच्छिएण' हियएण ।
अब्भुवगच्छइ मरणं न य करणं पुरिसभोगस्स ॥ ६३८

तिहि मासेहिं न मिलइ चिय एयस्स अवरहा कंठे ।
एसो' वाहिज्जंती मरइ चिय सव्वहा एसा ॥ ६३९

ता इय ईसादोसं उवरिं एईए कुणसु कारुन्नं ।
कुणमाणी परकज्जं पावउ पावे तुह पसाया ॥ ६४०

अन्नाहि पणियाहि भंडागारं न पूरियं तुज्झ ।
किं पूरिस्सइ एसा अंगीकयवयपरिन्नाया ? ॥ ६४१

सुव्वइ इत्थीवज्झा बहुदोसा सव्वधम्मसत्थेसु ।
ता मा कुणसु कलंकं मा इ विमणि कुणसु एयं ॥' ६४२

सीसे सोऊण गिरं' भयवं उवसंतवेरमच्छरा हरिणी ।
भाइरइ' तक्खणं चिय नम्मयमेयं च मामीया ॥ ६४३

'जइ ता पयपुमेहिं गम्मइ' कुणंति तुज्झ निम्मग्गे ? ।
ता चेइ मज्झ गेहे रसवइकिच्चाइं कुणंती ॥' ६४४

हियए अणुग्गहं सा मन्नंती भणइ 'होउ एवं' ति ।
तो ठीएँ अज्जभावा पारद्धा रंधिउं भत्तं ॥ ६४५

सा आहारं साहइ जह सव्वो परियणो भणइ तुट्ठो ।
'ताइं चिय हत्थाइं भजइ अमिएण सित्ताइं ॥ ६४६

---

१ वणिकयत्थ. २ पत्तो ३ तिहि ४ उवसंत' ५ भाइरइ ६ पट्ठो

को वि अउव्वो साओ संवाओ अज्ज सव्वस्थूण ।
जइ अम्हाणं भीरू तिप्पि न हु पावइ कहिंपि' ॥' ६४७
नाणाविज्जयपक्कभरंजिया हरिणिया विष्पिसेइ ।
'पढम पिय किं न मए ठविया एसा इह निमेए ॥' ६४८
संरोहिया य तत्तो कंपाभाया पयाइदवाहिं । 5
भणिया – 'मज्झप्पभिई अमय ते पिहुसु जहिच्छं ॥' ६४९
चिंतेइ न[प. ३१ A]म्मया वि हु 'सायं मसुहस्स कालहरणं मे ।
नाया जीवियआसा करेमि ता निउया धम्म ॥' ६५०
तत्तो य उभयसंझं हियए ठविऊण जिणवरं वीरं ।
वदइ नायाणुमा करेइ ठविय च सज्झायं ॥ ६५१ 10
भावेइ भावणाओ वेरग्गकराइं गुणइ कुलयाइं ।
सवमणो मणक्कलो' भावायं को वि नो कुणइ ॥ ~ ६५२
परिहेइ वडियाइं घाएीमसिमडियाइं' मलिणाइं ।
परिकम्मेइ न अंगं लिंपइ य मसीए सविसेस ॥ ६५३
सुवइ थोव थोव तहा वि पियस्स निउरगुणेण । 15
गेन्हइ उभयपमग उभयाम कुमइ सो पहुसो ॥ ६५४
विसहइ सीय ताव 'मा कती [होउ] मह सरीरस्स ।'
तह वि हु तणुलायमं न होइ से भमहा कह वि ॥ ६५५
जइ वि सरीरं सुरय तावेइ तहा वि माणसं दुक्खं ।
रोयइ कलुम कलुणं सुमरंती कुलहरं बहुसो ॥ ६५६ 20

[हरिणीमरण, नम्मयासुंदरीए वेसाण सामिणिकरण च]

अह अभया कयाइ हरिणी उग्गाइ सलवियणाए ।
अभिभूया विलवंती पत्ता मरस त्ति पमच ॥ ६५७
तो भणइ परियणो सो – 'महामई सेहिया हयासाए ।
तेण मसमले वि मया तारुममरम्मि वट्टंती ॥' ६५८ 25
रुभा केमइ न लजा न विहियममं' पि पयकरणिज्जं ।
दासीसुएहिं केहि वि पक्खित्ता सा ममाणम्मि ॥ ६५९
जाणाविय च रन्नो हरिणी हरिया कयंतचोरेहिं ।
तेणावि ममाइइं पंचउल जाणग नियपं ॥ ६६०

---

१ कहिंपि २ हरिभया. ३ मणुक्कले ४ घाडीमसिमुंडियाइं ५ परिकलमइ
६ विहिय कज्जं

भणियं – 'मा तुम्हाणं परिहासइ रूवलक्खणेहिं सुया ।
सीसे करेह टिक्कं' हरिणीठाणम्मि वेसाए ॥' ६६१

कयसिंगारो मिलिओ वेसावग्गो तहिं निरवसेसो ।
अहमहमिगाए पयउलगाए देइ पयाहिणं ॥ ६६२

तेसि निरूविआणं संपत्ता सिट्ठिगोमरं कह वि ।
सहस त्ति नम्मयासुंदरि उ मउमलिणपुंसवणा ॥ ६६३

रूवसरूवं सीसे दट्ठूणं विम्हियाहि तो बुत्तं ।
'धूली(लि?)धरियं रयणं भो ! एवं किं न पेच्छेहं ॥ ६६४

उक्खयरूवसमाहो अत्ता न हि अत्थि महिलिया एत्थ ।
कीस निरूवइ अग्गि दीवेण कम्मि महियम ? ॥' ६६५

भणियाओ चेडीओ – 'उवट्ठियमज्झियं इमं कुणह ।
परिहावेह य तुरियं वत्थाभरणाणि हरिणीए ॥' ६६६

विहियं च चेडियाहिं अणिच्छमाणीए नम्मयाए तं ।
'हरी किमेयमवरं उवट्ठियमिम' त्ति चिंतेइ ॥ ६६७

ठविऊण हरिणियाविट्ठरम्मि पंचउलिएहिं तो तीए ।
मंगलतूररवड्ढं कयं सिरे रायियाटिक्कं ॥ ६६८

भणियं च –

'जं किंचि हरिणियागयं भवणं दव्वं तहेव परिवारो ।
आहवे चिय सव्वं त दिण्णं तुह नरिंदेण ॥' ६६९

इय जंपिऊण ताहे पत्ता पयउलिया नियं ठाणं ।
इयरी वि देवया इव चिंतंती चित्तए एवं ॥ ६७०

'एयाहि सहायाहिं [प ११०] होही सव्वं पि सुंदरं मज्झ ।
तम्हा करेमि इण्हिं सहाओ सुप्पसन्नाओ' ॥' ६७१

आय(वाह ?)रिऊणं ताहे सहाओ गोरवेण भणियाओ ।
'जं नियविहवमाणं दिन्नओ आसि हरिणीए ॥ ६७२

सो सव्वो वि इयाणिं मए पसाएण तुम्ह परिमुक्को ।
जं पुण रम्मो देयं त दिज्जइ हरिणिपवेसाओ ॥' ६७३

परितुट्ठाओ ताओ सहाओ नियसिरेण पयकमलं ।
फुसिऊण बिंति' – 'सामिणि ! कम्मयरीओ वयं तुज्झ ॥' ६७४

---

१ दिन्नं २ निरूविआणं ३ °भमइ ४ वेच्छेरा ५ °पणो ६ °पुरं मि वि. ७ °रणं ८ तुम्हतुम्हाओ ९ °ऊण १० बिंति

मणिया य विसेसेण करिणी—'सहि ! पच्छहा अह तुज्झ ।
जाणासि य मह चित्त सा चेट्ठसु मज्झ ठाणम्मि ॥ ६७५
सव्वं हरिणीकिच्च करेज सेवागयाण पुरिसाण ।
अहयं तु तुह पसाया छम्मा' चिट्ठामि गिहमज्झे ॥' ६७६
'एवं' ति तीय भणिए संतुट्ठा नम्मया हियमज्झे । 5
नियधम्मकम्मनिरया सुहझाणगया गमइ कालं ॥ ६७७

[असंतुट्ठकामुकस्स राइणो कज्जे पजपणं]

अन्नदिवसम्मि एगो कयसिंगारो नवम्मि तारुन्ने ।
संपत्तो तीय गिहं अइघणय कामुओ' पुरिसो ॥ ६७८
पुच्छइ—'सा कत्थ गया तुम्हाणं राणिया मचिरठविया ?।' 10
करिणी भणइ—'अह सा पत्तमियाएसि नो मुद्ध ! ॥ ६७९
सो पभणइ—'नवदिणयरसमाणतेयं मणोहरं अंगं ।
तीए कमलच्छीए दिट्ठं चेट्ठइ मणे मज्झ ॥ ६८०
सव्वंसेण वि तुज्झा न तुमं तीए फइदि सा सह ।
अच्छइ सा कम्मि गिहे संपइ दंसेहि मा म वि ॥ ६८१ 15
तीए कज्जेण मए दुक्करकम्मेहिं अज्जिओ अत्थो ।
ता मह दंसेहि सयं पुज्जति मणोरहा जम्म ॥' ६८२
करिणी पुणो वि जंपइ—'सुमए पच्छादिया तया दिट्ठा ।
संपइ सहावरूवा गामिछुय ! कीम मुद्धो सि ? ॥' ६८३
सो भणइ—'नत्थि भई मा सट्ठाण जामि तो अह इंहि ।' 20
करिणी भणइ—'न अम्हे पारमो कुणसु जं रुयइ ॥' ६८४
गच्छंतेण य मग्गे कम्मयरो को वि पुच्छिओ छम्मं ।
'अणयसयहण सविओ कहहि मा गणिया कत्थ ? ॥' ६८५
कहियं च तेण छम्म—'कहिं वि अच्छइ अह न याणामि ।
सा कुलनारी मूण परिवालइ अप्पणो सीलं ॥' ६८६ 25

तओ सो आमामंगमसुप्पाइयमहाकोरानलडज्झमाणमाणसो तीए सीलमह परंडमोवायमलहंतो, रायाणमुवमप्पिउम अपिउ पवत्तो—'देव ! निवेएमि किंपि पियकारय देवस्स अवस्सुय ।' राइणा भणियं—'किं तय ?' ति । तओ सो पावकम्मो नम्मयारम्मणोइओ पअरिउमारद्धो—'अत्थि इह नयरे एगा नारी ।

1 मिहसा 2 °आम 3 कामुओ 4 मह 5 सुरसमणिरहम.

सो तिलोयमाईमणेच्छराईगममयरी, सुरवहसाखेण निवडिया न कस्स वि अप्पाणं दसेइ । मन्ने पयावइणा तुह निमित्तमेव रक्खिज्जइ । ता किं देव ! रूवेण जोव्वणेण रज्जेण जीविएण वा जइ सा तरुच्छि व सयलजुवइजणी मए रइयमहानरिंदरायं ११ ▲ ह्लामी अंतेउरं नाउं करेइ ? । राइणा भणियं– ५'का सा ?' इयरेण भणियं–'जा सा हरिपीठप्पसमिभिहा ।'

सुओ एस वइयरो नम्मयासुंदरीए, चिंतियं च 'सच्च' केणावि पढियं–

आसासिज्जइ पक्को मऊगयपडिबिंबदंसणसुहेण ।
त पि हरंति तरंगा पिच्छह निउणत्तण विहिणो ॥ १८७

जाणामि जा न पारं दुक्खसमुद्दस्स कह वि पत्तस्स ।
10 ताव्ऽन्नपरंमुह उवट्ठिय दारुणं वसणं ॥ १८८

सुरो हरो चंडो निक्कम्मो नारओ महापावो ।
एसो बब्बररायो गहिओ कह छुट्टए इमेण ? ॥' १८९

ता इन्हि किं करेमि ? कत्थ गच्छामि ? कस्स साहेमि ? कं सरणं पवज्जामि ? सव्वहा नत्थि मे जीवमाणीए सीलरक्खा ।

15 हा हा कयंत ! निग्घिण ! जई ता हं दुक्खभायण रइया ।
ता कीस इम रूव निम्मविय वेरियं मज्झ ? ॥ १९०

सुहिय कीरइ रूव दुहियमरूव वि एत्थ जुत्तमिणं ।
छोहीए पक्कं रक्खइ नाहु(वह) खप्परे कणगं ॥ १९१

दुमस्स य पावस्स [य] वासो एमत्थ एस कीस कओ ? ।
20 सग्गुणसंपउत्ते मए विसलेवममुत्तं ॥' १९२

एवमणेगहा विलविऊण परिभाविउं पवत्ता 'मरणमेवोसहमिमस्स दुक्खस्स, मज्झ य सीलरक्खा होइ । तं पुण विसाएसेण वा विसेण वा न वि संभवइ । अन्नं च सुयपुव्वं मे साहुणीण समीवे अक्खाणयं–

[धणेसरकहाणय]

25 वसंतपुरे नयरे धणवइसिट्ठिसुओ धणेसरो आसि । सो अन्नभिन्नए कालगए तहाविहकम्मदोसेण गहिओ दारिद्दविडिया चिंतिउं पवत्तो–

'चिरकालिपयेरगो कयाइ उप्पाविया पणस्संति (?) ।
इय भासइ दासिरं कयाइ वेसंतरगयस्स ॥ १९३

---

१ वा. २ माईमिव° ३ °अंतेडर. ४ रायणा. ५ कम्मं ६ विहिणा ७ ताव ८ कय ९ वेरियं १ वासो ११ °मिमस्स

अन्नं च –

उच्च नीयं कम्मं कीरइ देसंतरे धणनिमित्तं ।
सहवड्ढियाण मज्झे लज्जिज्जइ नीयकम्मेण ॥' ६९४

एवमालोइऊण संठविऊण कुडंबं दूरदेसे पत्तो एग गामं । 'न पयाणएहिं दालिद्दं छिज्जइ' त्ति ठिओ तत्थ । भणिओ गामीणेहिं – 'गोरूवाइं चारेहि त्ति । लहिहिसि मासंते पइगोरूवय रूवयं' ति । सो वि [च]उवासायंतरा माणाओ चारिउं पवत्तो । तस्स य पच पंच रूव[य]सयाइं पइमासं मिलंति । पचहिं मासेहिं जाओ महाधणो । तओ मुत्तूणं गोवालत्तं लग्गो वाणिज्जे । दुवालसवासेहिं जाओ अणेगधणकोडिसामी, चिंतिउं च पवत्तो –

'किं तीए लच्छीए नरस्स जा होइ अन्नदेसम्मि ।
न कुणइ सुयणाण सुहं खलाण दुक्खं च नो कुणइ ॥' ६९५

तओ सो गमणमणो चिंतेइ 'अंतरा महंतमरण्णमत्थि । तत्थ य णेगे भिल्लपुलिंदगणो चोरा परिवसंति, ते मंडं पि सत्थमभिद्दवंति । ता न एसा सपया निव्वाहिउं तीरइ' त्ति काउं गहि(P 22 B)याइं [व]भो महग्घमोल्लाइं पंच महारयणाइं । ताइं कुमचेलंचले चंधिऊण कमेण पत्तोऽरण्णवासम्मं । सुयं च 'इत्थारण्णे णेगाओ' चोरपल्लीओ । कप्पडिओ वि चयंतो उग्गावि-मनग्गोविओ कीरइ । रूवगो वि गठिबद्धो न छुट्टइ । तओ धणेसरो रयणाणि एगत्थ ठविऊण तेहिं समाइं पंच पत्थरखंडाइं कच्छुडियाए गोविऊण, 'वंचेयव्वा मए तक्कर' त्ति निच्छियमणो, – 'एस भो! रयणवाणिओ गच्छइ' त्ति उच्चसद्द घोसंतो पविट्ठो महाडविं । घोसणाणंतरमेव गहिओ तक्करेहिं, पुच्छिओ य – 'कत्थ पत्थिओ सि?' भणइ – 'रयणाणि विक्केउं ।' 'कत्थ रयणाणि ते? दंसेहि' त्ति वुत्ते धणेसरेण कच्छोटियाउ कड्ढिऊण दंसिओ गंठी, भणियं च – 'महग्घाणि रयणाणि न तुम्हे गिण्हिउं तरह ।' 'किमग्घंति मुद्ध' त्ति पुच्छिएण सिट्ठं – 'एगेगा धणकोडी ।' तओ पथमिमाणं परुप्परं चोरेहिं 'नूण गहगहिओ एसो' त्ति कलिऊण भणिओ तेहिं – 'तुममेव एएसिं जोग्गो सि । गच्छ मणिच्छियं' ति । इयरेण भणियं – 'जइ केइ गाहगा अन्ने वि जाणह ता सिग्घ पेसिज्जह ।' तओ हसिऊण पडिनियत्ता चोरा । धणेसरो वि तं चेव घोसंतो चलिओ । अग्गओ पुणो वि भिल्लेहिं पुच्छाविओ । ते वि तहेव 'गहगहिउ' त्ति भणिऊण गया । एवं पए पए पुलिंदाईणं दंसंतो पत्तो महाकंतारपारं । बीयदिवसे तहेव घोसंतो पडिनियत्तो । तहेव उग्गाइओ गहगहिओ त्ति मुक्को

१ छलिज्जइ २ कुडंबं ३ मूल्य. ४ महलं ५ नयाओ ६ °वदे ७ °वंतरा. ८ भेसिज्जह ९ महाडविं १० °भिल्लोय ११ नई १२ च १३ °मिचत्तो

य। तम्मिमाई' कूरट्ठिया चेव चोरा निहालयंति जाव सत्तमदिणे रयणाणि घेत्तूण गओ। सुहेण पत्तो सट्ठाणं, मोयाविया मामी संवुत्तो' त्ति।

तो जहा तेण पवेसरेण रयणाणि रक्खियाणि तहा अहं गहेल्लेणि के(चिट्ठे ?)ण सीलरयणं रक्खेमि त्ति। मा [कयाइ] कीवती कहिं पि इत्थरं
5 पि पावेज्जा। किं तु जइ कह वि एसो राया इह एइ ता मम सरीरं पासइ तक्खणमेव भंजइ मे सीलं, ता न तीरइ गहिल्लत्तणं काउं, परमत्थगया विहाणसेण मरिस्सं। अह अन्नो कोइ एही ता सव्वावसरा अवहत्थियलज्ज-विणया अंगीकयसरीरसंतावा गहेल्लचेट्ठयेमेव पवज्जिस्सं। माया वि कारणे कीरमाणी न दोसमावहइ' त्ति निच्छियमणाए।

10 [नम्मयासुंदरीए राइणो निमंतणं गहेल्लचेट्ठयकरणं य]

अमया रूवाइगुणावज्जियमाणसेण राइणा पसिओ समागओ नम्मयासमीवं देववासिणो। परिमाणियमज्जाए कया तस्स पडिवत्ती पुच्छिओ य—'किमा-गमणपओयणं?' तेण भणियं—'राइणा तुह दंसणुक्कंठिएणाइमायरेण समप्पिओ "हरिपीठायङ्गचियं राणिय सिग्घमाणेहि" ता तुरियं कीरउ गमणेण
15 पसाओ।' नम्मयाए भणियं—

'न इच्छंती हिमए तुमए त चेव मज्झ आरहई।
दुक्खं उवज्जीया वीयं पुण्ण करहिणा छविय ॥ १९६
मत्थि विय पुमाइ अम्हाणं नत्थि एत्थ संदेहो [प. ३१ A]
जं संभरिया मज्झं महिणइणा इहसणेणं ॥' १९७

20 भणिया करिणी—'भद्दे! तुमं तए सुमासिय—
जइ किज्जइ विहुरंजउ संपिज्जइ मप्पाणु।
तो धरि गहिल्लिय! तेण सहु सो देगवइ पराणु ॥' १९८

करिणीए भणिय—'सुंदरमयं, पुज्जंतु मणोरहा।' नम्मयाए भणियं—'सक्कसमा ते जीहा। पुणो परिसमासीणायं मम दिज्जाहि' त्ति भणंतीए
25 करिणो देववासिणस्स मज्जणभोयणाइओ उवयारो। अप्पणा वि कयमज्जणाइ सिंगारा परिहियविसुद्धवत्थाभरणा देववासिओवणीयसिबियारूढा चलिया नयराभिमुहं। अंतराले दिट्ठं पडिच्छंदं वहमाणं। तओ भणियं—'भद्दमुहा भाई, उत्तारेह मं जेणेत्थ सरवरंमि पाणियं पियामि।' तओ 'जमाणवे-सि' त्ति भणंतेण उत्तारिया देववासिएण, पत्ता विमलजलभरियं सारणि'।
30 तत्थ पाऊण पाणियं इहियपेच्छयसंपत्तिमरियणाइए सव्वावसरा केसुसमीमिलेण

---

१ तम्मिमि २ संवोत्तो ३ गहेल्लं ४ °अंतरा ५ °चेट्ठय° ६ °चोत्तेणो
७ जइ ८ पाइणाइ ९ °मंद. १० सारणी. ११ अंतरा° १२ °पमुहम्°

कठ त्ति निवडिया सहसा । तओ कयमसुहासाए—'अहो ! राइणा ममेयमा मरणं' पेसियं' ति मन्नतीए सबमालिंगिय सरीरं । एत्थंतरे 'हा सामिणि ! किमेयं ?' ति भणमाणो समुद्देमागच्छंतो—'अरे रे ! रायगिहिणि' अप्पणो मारिय कउमिच्छसि' त्ति जंपमाणीए पउमो कडमेण दंडवासिओ । 'अहो ! गहो' त्ति कओ सयेण कोलाहलो । विगरालीकयलोयणा निडालियभीडा ५ सिंताखं हणंती पहाविया सयसमूहसमुह—'अहो ! रायमारिय गहिंडिमुछमह त्ति संपछइं रायउल जेण दसेमि दुम्मासियेफलं ।' एयमालजालाइं पलवंतीए दंडवासिओ रायमगार्स साहिउं पयत्तो—'देव ! सघमेय—

भमइ परिपिंतिजइ सहसा कडुगुएण हियएण ।
परिणमइ अमइ चिय कज्जारंभो विहिवसेण ॥ ६९९ 10

तओ सा मराई सयमेव देवसंगमसुया मम विमत्तिय सोऊम पहलरोमं चकंचुयं" चयक्किय तणुं तुरियं" कयसिंगारं मइ वयणेण समारूढा सिबिय ति । तयणतरं "पवक्खा लच्छी न हि न हि रंभा तिलोत्तिमा मयणभरणि"" त्ति दिसि दिसि समुट्ठिया जणसमुल्लावा । मए पुम चिंतियं एयासिं संतिय रूवठायवं घेतूण देवस्स कए विहिया निम्मविय त्ति । तओ देव ! न याणामि 15 किं तीए चक्खुदोसो ? किं चलं पियंतीए उत्तेडियं किमपि ? सडातीरेण गच्छंती चस त्ति निवडिया विगंधे जंबालिमज्झे । तओ गहगहिया इव सयेण कोलाविसंती पेडइ ।' तओ राइणा संभवण मणिओ—'गच्छ गच्छ सिग्घं ति, तिहुयणभूयवाइयमाणेहि" । अहं पि एम सत्य पत्तो चेव ।' तओ दंडवासिएण समीहूओ चेवागओ तिहुयणो । मणिओ रमा—'निरूवेहि को 20 एम गहो ? केणोवाएण नियत्तइ ?' तिहुयणेण उग्गाहिया फुडपुरियया, निरूवियाइं गहलक्खणाइं । सुचिरं परिभाविऊण संलत्त — 'देव ! एम उत्ताओ नाम गहो" । पुरिसित्थिया[णा]मिह माणुमसंगमपाविऊण खणमुप्पज्जइ । अण्णो मंतनंताय, [प २११] एयस्स इच्छामंगो न कायबो । वं मग्गेइ त चेव दिज्जइ, न य पडिकारिज्जइ त्ति तओ कालेण सयमेव उवसमइ त्ति ।' तओ नम्म 25 यंसुंदरिमागमेपचोइएण भूयवाइएण मणिएण रमा उग्घोसाविय मयाहिएण वरे नयरे—'जो एयाए रायमहइलाए गहस्स वि अवराहं कए मंगुल मंणिस्सइ करिस्सइ वा, तमहं महादंडेण दंडिस्सामि' त्ति ।

---

१ °माकमत्र. २ नमुर° ३ मिहिसी ४ °योयमो ५ निमारंमी ६ मचित° मंचडर ८ °उक ९ दुम्मासियं° १ महम. ११ °मंचुर्य १२ तुरिय १३ °माले १४ दिमंति १५ मंबाड° १६ माले°ई १ गामा° १८ माओ १९ समाइ २ नागम

अह सा पययहेउं मणस्स गहपेहिय पयासेइ ।
हियइ परं परेणं पप्फोडती कुलाहयं ॥ ७००

कण्णाइं खप्परहत्था भिक्खउं मग्गइ कहिँचि जइ लहइ ।
छुहापिडिअ सहसा मइ हिंडंतहिँ डिंभेहिँ ॥ ७०१

पेक्खलह दट्ठूण लिपइ अंगं पुणो पुणो घणियं ।
सीसे[2] खिवइ कयारं छारेण य गुडइ सरीरं ॥ ७०२

खरपीरपीरियाहिँ वेढइ अंगाइँ दुगुणदिगुणाइं ।
दट्ठूण य निम्मल्लं सुइ माली(लीं) सिरे कुणइ ॥ ७०३

जं जं रच्छापीरं तं तं सव्वं[3] पि नियइ कडीए ।
कलयइ गया य नयइ कलयइ फेक्कारव कुणइ ॥ ७०४

गायइ[4] हसइ य कलयइ अभक्ख करेइ घोरघाहाओ ।
नारीए पुरिसस्स य नियडइ चलणेसु पइसंती ॥ ७०५

दिवसम्मि भमइ नयरे सुमयरे छुमवेडले वा वि ।
रत्तिं गंतुं छम करेइ जिणचंदप्पाइय ॥ ७०६

रे जीव ! मा किलम्मसु एयाए तवणेज्जकिरियाए ।
जि जिय सहिँति दुक्ख ति जिय सुरमायणं होंति ॥ ७०७

सीलरयणं महग्घं किच्छेण वि जइ हरिअ रक्खेउं ।
ता होज्ज मज्झ तुट्ठी तिहुयणरज्जोवलंभे य ॥ ७०८

जइ जत्थ व तत्थ व जइ व तइ व रे हियय ! निवुइं[5] लभसि ।
ता दुक्खइ तुह जम्मंतरे वि दुक्खं चिय न होइ ॥ ७०९

रे जीव ! भवे आसिर जत्थ व तत्थ व सुही य सयनिंद ! ।
जेण व तेण व संतुट्ठ जीव ! सुणिओ[6] सि तं अप्पा ॥ ७१०

जं सोढं जीव ! तुमे दुक्खं सुमम्मि तम्मि दीवम्मि ।
माधेसु इमं सव्वं किचियमाणो इमो तस्स ॥ ७११

हरिणीगेहम्मि तुमे सोढाउं[7] कयत्थणाउ भीमाउ ।
ताओ संभरमाणो मा झूरसु जीव ! एयाहे ॥' ७१२

एवं अणुसासंती[8] अप्पाणं आभिभिं[9] गमेऊण ।
पुणरवि पभायसमए जिणमुणिगुणसंथवं कुणइ ॥ ७१३

---

१ कप्परहत्थ भ° २ सीसे ३ मज्झ ४ गायइ ५ निव्वुयं ६ सुणिओ
७ सोढाओ ८ °सासंती ९ आभिंभी

पुणरवि तहेव नयरे वियरइ कयगीयनच्चपयासो।
मज्झदिणे परदारे गायइ एयारिसं गीयं ॥ ७१४

'पमणइ छोगो गहिलिया सुस्सूरया ण अह गहिलिया।
बोधमि निरवज्जमिक्खयं जा नासइ सयलं पि दुक्खयं ॥' ७१५

[नम्मयासुंदरीए जिणदेवेण सह मिलण] 5

एय तीए गीयं निसुयं आसन्नमदिरगएण।
सुस्सावएण केणइ अत्थं विम्हियमणेणं ॥ ७१६
एयमउव्वं गीयं सम्मं हिययम्मि भावयंतेण।
निरवज्जसद्दसुणया 'नायं न णु नम्म[प २४ A]या एसा ॥ ७१७
कारणवसेण केणइ एरिसनेवच्छधारिणी एसा। 10
तो निच्छयनाणत्थं पुच्छिज्जइ छन्नमासाए ॥' ७१८
इयं चिंतिऊण पुच्छइ – 'रे गहि! तं कस्स संतिओ तस्स(?) ।
एएसि कं च देव अवयरिओ किमिह पत्तम्मि? ॥' ७१९

तीए वुत्तं –

'सव्वजगजगडणपरो जण इओ मोहदाणवो चंडो। 15
तस्संतिओ गहो' हं लीलाए एत्थ निवसामि ॥ ७२०
त चेव महादेव घरे धीरं जमुत्तम धीरं।
एएमि मत्तिसारं किं न मुणसि सावओ तं सि? ॥ ७२१
अवयरमकारम पुण नाह साहेमि तह वि नाओ सि।
बचति अणिट्ठमणा महवे सागारिया लोया ॥' ७२२ 20
भणिय च सावएण वि – 'जइ वि न साहेमि तह वि नाओ सि।
हिंडसु अह भणइ किं मम्मं तुम्ह पुत्तीए ॥' ७२३
इय संपंतो सहसा ओसरिओ सावओ तओ ठाणा।
चिंतइ 'न हु सव्वगहो कारिसयं चेट्ठियं एयं ॥ ७२४
साहिउकामा वि इमा न कहइ सव्वं भयस्स संकाए। 25
ता पहरिकं गंतुं पुच्छिस्सं एत्थ परमत्थं ॥' ७२५
तो अणुमग्ग तीए हिंडइ केणइ अमज्जमाणो सो।
इयरी वि गहियभिक्खा विणिग्गया सोयए काउं ॥ ७२६

---

१ °चाराम २ °मपेक्खा ३ °चेट्ठिय° ४ दुष ५ किंमि ६ तम्हो ७ °विचंभि
८ सहावे

नयरस्स नाइदूरे[1] भिक्खुजाये समागमविहीए।
नागेसरयम्मि पत्ता उवविट्ठा गोइए जीवं॥ ७२७

रे जीव! मा परिज्जसु निव्वेयं माणसे मणागं पि।
दुक्करं पि सुह चिय भावेजसु सम्ममेवं च॥ ७२८

5 एयाइं[2] रच्छापीवराइं भमिऊण देवकुसाइं।
रक्खेजसु जेहिं दढं सयावायाण सुह देहो॥ ७२९

जं पि य अंगे रूवं हरियं कम्मविसेसेण एयं।
सुट्ठु सुयंधं नामसु सीलंगं कुणइ जं सुरहिं॥ ७३०

एय पि अंतपत्त(पंतं) [अन्नं] भावेज अमयरस[स]रिसं।
10 एएण उवग्गहिओ जं देहगिहे सुमं वससि॥ ७३१

भणउ जणो एस गहो तं चिय भावेसु एस मोक्खो पि।
एयपसाएण तुमं जओ विमुक्को सि मिच्छाओ[3]॥ ७३२

सोऊण दुक्खमेयं पाविज्जइ जा न निग्गमोवाओ।
एवं पि सहजीए मे होही सुंदरं सव्वं॥ ७३३

15 भणियं च—

ता निंति किं पि कालं भमरा अवि कुडयवच्छकुसुमेसु।
कुसुमंति जाव भूया मयरंदुद्दामनिस्संदा॥' ७३४

इय भाविऊण सुइरं सम्मं वेरग्गमग्गगहिया य।
सुमणगुरूण जिणाणं संथवणं काउमारद्धा॥ ७३५

20 'निम्महियमोहमल्ला पंचवभूया जयाण सव्वेसिं।
जम्मजरमरणरहिया जयंतु तित्थेसरा सव्वे॥ ७३६

भवियजणाण जिणाणं जेसिं पयपंकयं सुपंकाणं।
पणयंति दुरंतयं दूरंदूरेण दुरियाइं॥ ७३७

निट्ठवियकम्मरिउणो[4] केवलवरनाणदंसणसमिद्धा।
25 सासयसुहसंपत्ता जयंतु ते जिणवरा सव्वे॥ ७३८

सव्वेसिं सिद्धाण आयरियाणं च गुणस[मि]द्धाणं।
तह य उवज्झायाणं नमो नमो होउ मे निच्चं॥ ७३९

मोक्खपहसाहगाणं पाए पणमामि सव्वसाहूणं।
जिनमग्गे सुट्ठियस्स य नमो नमो समणसंघस्स॥' ७४०

---

1 नाइदूरे. 2 सव्व° 3 एयाई 4 मिच्छाओ 5 °णाय° 6 °रिउणो

एव सज्झीभूयहियया जाव कवलगहणं काउमारद्धा, एत्थंतरे सो वि सावओ उवायं पविसंति[मा]लोइऊण कयदिसालोओ दारंतरेण समागओ नागयरासन्नं[1] । 'मीयरयो' त्ति काऊण भणिया — 'इओ निसीही ।' नम्मयासुंदरी निसीहीसद्दसवणाओ सुगरालोयणरंगी[2] य भरिउ य जीविया हरिसभरनिब्भरा संवुत्ता । तओ — 'सागय निसीहियाए, बीममह ताव महासावग ! इह सिप्पिउडे 5
तरुच्छायाए जाव इमप्पाणं संठवेमि[3] ।' ताहे अणवसरो त्ति नाउं निसन्नो सहावियसिणिद्धतरुणंबसहीए । नम्मया वि तुरियं तुरियं कयकच्चयकवलाहारा कालोचियविहियसरीरसंठवणा — 'एहि एहि' त्ति भणंती निग्गया संमुही । महुभरनिरुद्धकंठा निवडिया य तस्स चलणेसु रोविउं य पवत्ता । सावगेणावि महुरवयणेहिं आसासिऊण भणिया — 'महाणुभावे ! किं तं रोइसि ?' त्ति ।10
नम्मयाए रुयमाणीए चेव सिट्ठं — 'बहुकालाओ धम्मबंधवो तुमं दिट्ठो, नं य छोयावरा(यविंदा ?)ओ वीर[मायीए ?] मए वयणमित्तेणावि तुह विणय पडिवत्ती कया ।' सावगेण वुत्तं — 'सुद्धे[4] ! मा एयनिमित्तं खेयमुव्वहसि । जं चेव सा तुमए एरिससाहम्मियपक्खवायमुव्वहंतीए, साहिओ तए नियभावो[5] गुरुक्खराए वाणीए । मए वि लक्खिओ चेव कम्मभरा इत्थागओ !15
त्ति[6] । ता होसु सुविसत्था । सुणाहि मम वत्त — अहं मरुयच्छनिवासी जिणदेवो नाम वीरजिणसासणाणुरत्तभित्तो[7] मित्तो वीरदासस्स । सो वि इत्थ आगंतुकामेमेहिं पयमरियंसुगउहिं संपत्तो पोयठाणं । दिट्ठो[8] य मए तस्स चिरपरिपवासपत्तो अंसुजलोल्लियकवोलो[9] वीरदासो । पुच्छिओ य मए — 'कओ मए ! किं च सोयाउरो[10] लक्खिज्जसि ?' निवेइयं च तेण — 'मए बब्बरकूलगएण20
हारिया नम्मयासुंदरी । गविट्ठा सा बाहिरब्भंतरे नयरे बहूणि दिणाणि । न से पउत्तिमेत्तं पि उवलद्धं, न अन्नेसु चिट्ठंतसु सा पावडा होइ त्ति कलिऊण समागया वयं । एयं मे उव्वेयकारणं, गेहं गंतूण पुणो वि भायसहिएण सिग्घं तत्थ गंतव्वं । तुमं पुण कत्थ पत्थिओ सि ?' मए भणियं — 'अहं पि तत्थ दीवे गमिस्सं ।' 'जइ एवं गच्छिहिसि[11] तुमं तत्थ [न]म्मयं त अत्थेण सामत्थेण25
सहस्सेण वा मोयाविज्जासि ।' मए भणियं — 'जा तुह मायभूया सा किं मम भूया न होइ ! अच्छह तुब्भे वीसत्था जाव ममागमणं ।' अह पुण 'तं दिट्ठ ममोइय मोत्तूण न पडिनियत्तामि' त्ति कयपइन्नो चलिओ [प. २५ A] म्हि ।

---

1 चमिमंमी° 2 °रासइ 3 तत्थी 4 सेंदुत्त 5 मिमिर 6 मलोमि
7 तत्त 8 दाविओ 9 मे 10 बोर्ल 11 सुरे 12 °मोहर 13 °भावे
14 म्पि 15 मिचे 16 °भरीय° 17 मिद्दा 18 °कसाओ 19 कावामारो
20 सरवर° 21 बच्छिहिसि

अंतरा य मम पोओ पडिकूलपवणेण दीवंतरं नीओ । विरहुक्कंठापाउक्कल-पवणो पाविओ । तेण चिरेणेह पत्तो म्हि । अमसिया मए तुमं इत्थ, न कत्थइ उवलद्धा सि । अज्ज पुणाइसमावणिज्जरूवा वि 'अपत्तअभिरुय माए'म्हि' त्ति सोऊण, इओ इत्थ मणवज्जसरो वि संकिएण पुच्छिया सि । तुम पि 5 साहेहि एत्तियदियहेहिं किं सुहमणुभूयं, किं वा गहियवेइएणं हिंडसि ?' । एवं पुट्ठाए सिट्ठं नम्म[या]ए हरिणीओ आरब्भ बहुमायदिवसावसाण नियच-रियं । तं सोऊण समुट्ठियसिय(?)रोमेण भणियं जिणदेवेण—

'धन्ना सि तुमं वच्छे अइदुक्करगारिए महासत्ते ! ।
सोमालसरीराए जं विसहियमेरिसं दुक्खं ॥ ७४१
10 सच्चो वयणप्पवाओ मरइ अउइ न जीवए को वि ।
न तइ सारिज्जत पाणेहि न खंडियं अंगं ॥ ७४२
धीराण तुमं धीरा जीए वह दारुणं महावसणं ।
सम्ममहियासिय सिय(?) न पालभरणे कया वंछा ॥ ७४३
तं धन्ना धन्नयरी धम्मीणं धम्मिणी तुमं चेव ।
15 जीए वसणसएहिं धम्मतरंडं न परिचत्तं ॥ ७४४
सीलवईणं मज्झे पढमा लेहा लिहिज्जए तुज्झ ।
जीए नि[य]पुत्तीए मेच्छाओ रक्खिओ अप्पा ॥ ७४५

[जिणदेवकय नम्मयासुंदरीमोयण]

संपइ सुणाहि सुंदरि ! आया तुह मोयणम्मि मह बुद्धी ।
20 विणयसमीरूणं न हु सिज्झइ परिसं कज्जं ॥ ७४६
कल्लं च मए निसुयं एसा इह्ना एवं नरिंदस्स ।
नयरा दूरं बंदी रक्खिज्जइ रायपुरिसेहिं ॥ ७४७
गरुयम्मि वि पच्चूहे एईए पिच्छियं कुणइ जो उं ।
देइ तस्सुं च पहारे मो पावइ दारुणं दंडं ॥ ७४८
25 ता हरिउं न हि तीरसि बएण बहुणा वि सुयई न हु मुच्छा ।
नवरं तु पच्छन्नाई दरमेसो पोयवम्मियाणं ॥ ७४९
तेसु सुरिएसु वसइ एसेकाइ ताम्म दुक्खसेसेण ।
वेसुमणराइकारिसु गाढ कोयाउरा होइ ॥ ७५०
ता हं सुयणु ! पहाए रायपरामभवणारे मरे ! ।
30 अविसत्थभयेगाइं पयंडमयगाइं पंतीए ॥ ७५१

[illegible]

घेतूण लउडयं सो खाई फोडिस्स निद्दया होउं।
मा म पोक्करमाणं गणेसु फग्गुण पि कइत ॥' ७५२
उल्लवइ नम्मया तो – 'नाहं एयारिसी महापावा।
एयपियमत्थविणासं काहं जा निययबप्पस्स ॥' ७५३
जिणदेवेण वुत्तं – 5
'एवं कयम्मि वच्छे! कोवानलडज्झमाणमवगो।
सुषीहिं धुव मिच्छो ता होही सुंदरं सव्वं ॥ ७५४
विष व त पवित्त जस्स वओ इच्छइ मोयणं तुज्झ।
तुह लाभाउ न अन्नो गरुययरो मज्झ घणलाभो ॥ ७५५
ता कुणसु मज्झ वयण मा चिन्तं कुणसु मणहा पुत्ति!।' 10
एव कयसंकेओ जिणदेवो उट्ठिओ सत्तो ॥ ७५६

कयं च दुइयदियहे जहाइट्ठं नम्मयाए। तओ दोहिं वि करेहिं सो पोट्टं पिट्टंतं कुणमाणो पोक्करिउमारद्धो पयसामी जाव द्वारपयट्टलो मिलिओ नयरलोगो। उग्घोसिओ य अभओ सुकमालियाहिं – 'अहो! मग्गो मग्गो संभवियाणं। अहो! मूढो राया जो एय महारक्खसिं दीवाओ न 15 निद्धाडेइ।' एवंविहे जणुल्लावे निसामितो राया चिंतेइ 'न एसग्गहो उवसमइ, किंतु मडिग्गयरा दोसपुट्ठी भविस्सइ। इओ दीववरेसु अप्पसिद्धी। नासमिस्संति पवहणाणि ता अणमयिम निद्धाडणमेवोचियमेयाए।' एत्थंतरे चउजणपरिवेढिओ महया सद्देण पोक्करंतो समागओ रायसमीव जिणदेवो, पणिउं च पयत्तो – 'देव! पोयवणियाणमवरं च्छरो चि पसिद्धीओ वयं कय 20 उवयण भीसणं महोयहिमोगाहिऊणेहागया। एत्थ पुण एस ववहारो, केरिसीए ईंच्छाए पडिगच्छामि? वेगाई पवसयाई लामकए आणियाणि मे एत्थ। पिच्छउ देवो एसा पुरच्छाए नई वूढा।
कयउ रिण पभूय संगहियं धयमियं मए भूरि।
लाभेण होउ इण्हिं मूलं दावेह नरनाह! ॥ ७५७ 25
ससिअसइ[सु]भधवलो वियरइ महिमंडले जसो तुम्हा।
सो पहु! अवस्स नामइ एयाए कहाइ भीमाए ॥ ७५८
आइयर[इ!] जस्स एमा दाविज्जउ तेण मज्झ धयमोल्लं।
मह विमती एमा मा कीरउ निप्फलो मामि! ॥' ७५९

---

१ संतुवि २ वर ३ वेर्स ४ मि ५ पेटम ६ 'पुढरो ७ अवाग्गे ८ मिलो. ९ पवाहणाणि १० मायमिउं ११ 'वणियाणमवव' १२ पमितिहिओ १३ सुर' १४ पिच्छओ. १५ मिकरा

परिभमइ परियणो तो–'हा पीडा सत्थवाह ! तुह अज्ज ।
तत्तो अब्भहियतमा वड्ढइ मह माणसे भद्द ! ॥ ७६०
गहगहियाएँ इमाए कुवियाहि वि किमिह कीरई काउं ।
एयाए अवराहे को दाविअउ मर्ग तुज्झ ॥ ७६१
5 आइसइ पुण एसा मह देव किमित्थ अप्पमप्पिएहिं ।
दिण्णा मए तुहेसा दाउं न तरामि धयमोक्खं ॥ ७६२
जइ मंद धयमाणो हुज्ज हुंकस्स गामिओ नियमा ।
तइ एसा तुह दिण्णा मा कुण अम्हाणमवराहं ॥' ७६३
आह पुणो जिणदेवो–'गहगहियाए पओयण किं मे ।
10 किंतु म सण्णा गमिउं मठा वि दंता गयमुहम्मि ॥ ७६४
मार्य च मए महिलइ ! एएण मिसेण नियपईवाओ ।
चाडेउमिम इच्छसि छड्डणमोक्खं' तइ वि देसु ॥' ७६५
हसिऊण भणइ राया–'अइ एव सत्थवाह ! मह रज्जे' ।
उस्सुक तुह मंद एसा वाया मए दिण्णा ॥' ७६६
15 'अइ एवं तो निपय कोवफलं पावइमि' एयाए ।'
इय भणिउ जिणदेवो दीहरउं करे चेत्तु ॥ ७६७
भणइ जणयपसन्तं पइसंती सा वि तं इम भणइ ।
'किं एम पूरओ मे परिहिहइ राइणो दिण्णो ! ॥' ७६८
तो जिणदेवो जंपइ–'अज्ज वि कोडिल्ल धयधपे वडुए ।
20 परिसआमरणाई तो परिहिस्सं तुह पहूणि ॥' ७६९
एवं दंसियकोवो चेत्तु' वाहाएँ दिण्णउकोसो ।
जणपवयजणयस्स गओ लहुं नियघमावासं ॥ ७७०
बाहुम्मि धी[प. ११ A]पिऊणं–'सहसु दुमपक्कमाई' पोसंतो ।
निमकिवम्मि' पयत्तो धम्मो वि कहस्सिओ सत्तो ॥ ७७१
25 परितुट्ठो जिणदेवो ताहे तं पडहडीय छोडूण ।
पल्लासय पयकमठं अब्भगढपहूणं इच्छइ ॥ ७७२
मज्जावेइ [य] विहिणा परिहावइ सुंदराई वत्थाई ।
अप्पुयेइ महुरवयण करेई मोयण सुहयं ॥ ७७३
भणइ य एसो'–'भत्ता सहसा मह मज्ज सुयणु ! संजाया ।
30 मम्मामि तुज्झ कामे विहुयपरज्ज मए पयं ॥' ७७४

१ °मोढं- २ रज्जे ३ पार्यसिमि ४ पावमा ५ चेत्तु पहार. ६ °मिलाहि. ७ °बंल्ल. ८ सुहयं ९ पया

चिंतेइ नम्मया वि हु 'जम्मंतरधम्मपवो इमो नूणं।
नरया उद्धरिऊणं जेणाहं ठाविया सग्गे ॥' ७७५
एवं पमोयसागरपडियाण परोप्परं दुविन्हं पि।
सुहसंलावपराण गोलीणो वासरो सं त्ति ॥ ७७६
तत्तो जिणदेवेणं सवेगेण पउणीकओ नियपोओ। 5
रयणिद्धिहिं चिय सहिय आरूढो नम्मयासहिओ ॥ ७७७
'पच्छायावी कयाइ सुओ वि कई पि मा हु तु(सु?)णेजा।'
इय संकाए सहसा सुक्को पोओ महावेगो ॥ ७७८
कम्मम्मि समणुकूले सव्वं जीवस्स होइ अणुकूलं।
तत्तो य तक्खणेण अणुकूलो मारुओ लग्गो ॥ ७७९ 10
उवसंतसयलविग्घो जिणदेवो वासरेहिं थेवेहिं।
संपत्तो भरुयच्छे बधवजणकयमहाणंदो ॥ ७८०

[नम्मयासुंदरीए सयणाण सह मिलण]

पट्ठाविओ य तुरियं लेहो नम्मयपुरम्मि सयणाणं।
सामेण नम्मयासुंदरीवि(ए?) वद्धावणनिमित्त ॥ ७८१ 15
परिओसनिब्भरा ओलंघि(?) उ(तु?)रंगेहिं पवणजवणेहिं।
सहदेव-वीरदासा सबंधवा तत्थ संपत्ता ॥ ७८२
सम्माणिया य सव्वे जिणदेवेणावि हट्ठतुट्ठेण।
मिलिया य नम्मयाए तुट्ठा उक्कंठियमणाए ॥ ७८३
काउं कंठग्गहणं परोप्परं रोविय च तह करुणं[11]। 20
उग्गिलियमणोदुक्खा जिणदेवेणावि ते भणिया ॥ ७८४
'कज्जे मणइकंते हमे को इत्थ किर गुणो होइ।
अज्ज खु नम्मयासंगमम्मि नणु होइ साणंदा ॥' ७८५
कयवयणधोवणाइं सव्वेसिं सुहासणेसु पट्ठाणं[12]।
जिणदेवो तुच्छ[13] सहदिट्ठसुय कहइ तेसिं ॥ ७८६ 25
सह हरिया दासीहिं सुचिरं सेहाविया य हरिणीए।
सह सामिणं पत्ता तासिं करडग्गहो य कओ ॥ ७८७

---

१ मम २ मिर्व ३ रैयनिद्धुहि ४ वासरो ५ कम्ममि. ६ समण ७ मारुओ ८ कहो ९ हत्थ १० सिलिया. ११ करुण. १२ °सेणमि १३ पट्ठाणं. १४ तोसंत

दुक्खेण परिभाया दुक्खं मोयाविया य मेच्छाओ ।
जिणदेवेण सविम्हयमच्चायं जा गिहागमणं ॥ ७८८
तो नम्मयाइ दुक्खं सव्वसु वि बंधवेसु संकन्तं ।
ऊससियरोमकूवा सव्वे पलवंति तो एवं ॥ ७८९
5 'भो' सोमालसरीरे ! कह एवं विसहियं तुमे दुक्खं ।
कण्णविवरे पडियं अम्हे सोउं न हि तरामो ॥ ७९०
सुरठालिया वि सुरपालिया वि सयया[प ११ B]म सुहट्ठा वि ।
हा ! कह कम्मवसेण वसणसमुद्दम्मि बुड्डा सि ॥ ७९१
किं नाम सा इयासा हरिणी सुइ पुव्ववेरिणी आसि ।
10 इयनिंदियपरियणाए जीए सहाविया तं सि ॥ ७९२
एरिसनिग्घिणहियया दीसइ नारी न कह वि जियलोए ।
सा ह अणज्जा पावा संभाया एरिसी कह णु ॥ ७९३
कह बालिसभावाए सहिया तइ तारिसी तए पीडा ।
कह नियजणरहियाए पाणा संधारिया तुमए ॥ ७९४
15 कह बालिसभावाए तुमए संपाविया इमा बुद्धी ।
जगणियतणुदुक्खाए कवडगहो' व कओ तुमए ॥ ७९५
धन्ना सि तुमं वच्छे ! अम्ह वि पुन्नाइं अत्थि पुन्नाइं ।
जमखंडियवयनियमा मिलिया अम्हाण जीवंती ॥' ७९६
इय सोऊणं महुरा बहुसो उववूहिऊण गुणनिवहं ।
20 तं ठविया रुयमाणी सा बाला अंकवालीहिं ॥ ७९७
अह जिणदेवो भणिओ—'सज्जण ! जिणदेव ! साहु साहु कयं ।
जमवत्थिऊण वणियवित्तं अ मोइया एसा ॥ ७९८
सुयणाण तुमं सुयणो उत्तमपुरिसाण उत्तमो तं सि ।
धम्मीण धम्मिओ तं साहम्मियवच्छलो तं सि ॥ ७९९
25 तह सुंदर ! सव्वगुणा एगेण मुहेण वण्णिमो कह णु ? ।
जलहिम्मि व रयणाण जेसिं न पाविज्जई अंतो ॥ ८००
साहम्मियधुरधवलो तं खलु सव्वस्स पूयणिओ सि ।
इय गिण्हसु एयाओ बत्तीस हिरण्णकोडीओ ॥' ८०१
इय भणिरो सहदेवो पडिओ चलणेसु बंधुणा सद्धिं ।
30 जिणदेवो वि पयंपइ—'मा बंधव ! एवमाइसह ॥ ८०२

---

१ जो. २ वाहिय° ३ °साहो ४ इच्छा ५ इच्छिं ६ जरहम्मि. ७ °माइसह

तुह नंदिणि चि भणिउं न मए मोयाविया इमा किंतु।
साहम्मिणि चि काउं जिणसासणपक्खवाएण॥ ८०३
साहम्मियवच्छल्लं महाफलं वण्णियं जिणमयम्मि।
जेणं पढिज्जइ धणवइ! जिणागमे एरिसा गाहा॥ ८०४
साहम्मियवच्छल्लम्मि उज्जुया उज्जया य सज्झाए। 5
चरणकरणम्मि य तहा तित्थस्स पभावणाए य॥ ८०५
जिणसासणस्स सारो जीवदया निग्गहो कसायाणं।
साहम्मियवच्छलया तह भत्ती जिणवरिंदाणं॥ ८०६
एगत्थ सव्वधम्मो साहम्मियवच्छलत्तमेगत्थ।
बुद्धितुलाएँ ठवियाइँ दो वि तुल्लाइँ भणियाइँ॥ ८०७ 10
जो मंदमई पुरिसो न कुणइ साहम्मियाण वच्छल्लं।
जिणसासणस्स तत्तं न मुणइ सो छेयमाणी वि॥ ८०८
एवं च महापुण्णं समज्जियं मोयणेण एयाए।
तुम्ह धणं गेण्हंतो हारेमि न संपयं इत्थ॥ ८०९
दीणारेणेक्केण वि पडियारा न चेव लब्भंति। 15
एव न होंति दोण्ह वि धणवइ! अत्थो य धम्मो य॥' ८१०
आह तओ सहदेवो—'जइ तुमए मोइया [प २०४] नियधूया।
भण तत्थ किमम्हाणं तुज्झ निर्यं चेव तं मज्झं॥ ८११
अम्हेहिं किं न कआ उत्तममाहम्मियस्स तुह पूया।
साहम्मियवच्छल्लं महाफलं भममाणेहिं॥ ८१२ 20
मोयंतेण सधूयं निरीहचित्तेण अज्जियं पुण्णं।
इन्हिं पि तं निरीहो ता कह नामइ सयं तुज्झ?॥' ८१३
एव बहुप्पयारं विविहउत्तीहिं बोहिओ संतो।
अगाढिय(?)दक्खिणओ जिणदेवो गाहिओ वित्तं॥ ८१४
संपूइया य दोण्णि वि जिणदेवेणावि तं सपरिवारा। 25
जाओ परमाणंदो दोण्हं सवेसि सयणाणं॥ ८१५
ठाऊण केइ दियहे परिवढ्ढियगुरुपमोयदंसणाए।
आपुच्छिय जिणदेवं सहदेवो पत्थिओ नयरं॥ ८१६
विसज्जइ नम्मया तो जियदेव निराडिऊण पज्जयसु।
'दिज्जउ मम आएसो वच्चामि सयामि वा ताय!॥' ८१७ 30

1 विरुवि. 2 निम. 3 अवाह. 4 तुम्ह 5 हारेमि 6 अबिरं 7 °ईहे
मम 1

सो वि तयं पडिभणइ – 'वत्थालंकारभूसियं काउं ।
पुत्ति ! पयट्टसु मग्गे होउ विणीया गुरुजणस्स ॥' ८१८
घेत्तूण नम्मयं तो सहदेवो पडिगओ सनयरम्मि ।
नम्मयधम्मदिणम्मि य वद्धावणयं तओ विहियं ॥ ८१९
नाणाविहकोसल्लियहत्था पत्ता समत्थपुरपुरिसा ।
आसीवायपयत्ता अक्खयहत्था य नारिगणा ॥ ८२०
पणमंति नम्मयाए पाए केई वियासियमुहकमला ।
कुणइ पणामं केसिंचि नम्मया नमणजोग्गाणं ॥ ८२१
सो खत्तियस्स जोग्गो सम्माणं तस्स उचियं कुणइ ।
सहस त्ति धीरदासो सयणपरिओसं वियड्ढंतो ॥ ८२२
भुंजाविया य महिमा पणमिया जिणहरेसु सव्वेसु ।
पडिलाभिया य मुणिणो फासुयएसणपयमा(गा)ईहिं ॥ ८२३
काली य नम्मया वि हु जिणवयणं पढिंदियं तिसंझं पि ।
आवस्सगकरणेणं करेइ समणीण सन्निहिया ॥ ८२४
सरियअणुहूयदुक्खा अणुसमयं वड्ढमाणसंवेगा ।
संजमगहणेक्कमणा चेट्ठइ गुरुसंगमा पत्ता ॥ ८२५

[सुहत्थिसूरिणो नम्मयपुरे ओसरण]

अह अन्नया कयाई चउदसपुव्विस्स थूलिभद्दस्स ।
सीसो दसपुव्वधरो तवनिहिओ उज्जयविहारी ॥ ८२६
संपइरायस्स गुरू गामागरनगरपट्टणपसिद्धो ।
विहरंतो ओसरिओ सुहत्थिसूरी तहिं नयरे ॥ ८२७

जो सोमो वि पियकरो, सूरो वि तवे अमंदो, समुद्दो वि खाररहिओ, मंदरागो वि अडवणजिओ । तहा सूरो इव पयावी, चंदो इव सोमदंसणो, सायरो इव गंभीरयाए, मंदरो इव धीरयाए, पईवो इव अन्नाणतिमिरमोहियाणं, कप्पपायवो धम्मोवएसफलदाणे, सारमोसह मोहमहारोगस्स, घणाघणो कोवदावानलस्स, कुलिसपाओ माणमहीहरस्स, पवियारओ मायाभुयंगीए, पवणो लोहमेह(प. १ B)मंडलस्स । तहा संजओ वि अबंधणो, सगुणो वि सयलसयणपयडो, समिंदियहाणो [वि] अणोहरियमयहरणो वि । अवि य –

धम्माधम्मविहण्णू पंचनभूओ जियाणं सव्वेसि ।
परहियकरणेक्करसो सुगणाहारो विमलनाणो ॥ ८२८

---

1 °ओमाल 2 सम्मानं. 3 उचियं 4 निमज्जं 5 °महुमे 6 °पुलिणका. 7 °राया-एण 8 अमंदो 9 °पाइओ 10 कापा 11 पमीह° 12 अगह 13 नियाण

सोउं तस्सागमणं सक्कोठदच्छो' खमेण संचलो ।
सयलो नरनारिगणो वंदणहेउं मुणिवरस्स ॥ ८२९
सिट्ठी वि उसुमदत्तो पमोयसमुल्लसियबहलरोमचो ।
सयणसुहिपुत्तजुत्तो सविड्ढीए समुच्छलिओ ॥ ८३०
चलिया य नम्मयासुंदरी वि अम्मपीपुरस्सरा तुरियं । 5
उच्छलियमहामोया रविउग्गमणे कमलिणि व ॥ ८३१
तिपयाहिणिं' करित्ता पचगपणामपुव्वय सव्वे ।
वंदंति समणसीहं कयकरयलसंपुडा एव ॥ ८३२
'जय मुणिमहुयरसेवेज्जमाणलक्खणसणाहपयपउम ! ।
दसणमेत्तपणासियनयजणनीसेसपावमल ! ॥ ८३३ 10
संघसरोवरवररायहंस ! मिच्छत्तकोसियदिणेस ! ।
दुक्खत्तोमत्तबंधव ! धवलजसापूरियदियंत ! ॥ ८३४
बहुकालाओ अज्ज अंकुरिओ पुण्णपायवो अम्ह ।
ज दिट्ठो सि महायस ! अइदुल्लहदंसणो नाह ! ॥' ८३५
एवं गुरु थुणता वंदिया सेसमुणिवरे विहिणा । 15
उवविट्ठो गुरुमूले भदारुजणो जहाठाण ॥ ८३६
उवविट्ठाण य गुरुणा नवजलहरगहिरमहुरघोसेण ।
पारद्धा धम्मकहा भयरसनिस्संदसुंदेरा ॥ ८३७
'भो भो ! सुणेह सम्मं चउगइसंसारसायर घुल्ला ।
विसहंति जेण जीवा तिक्खाइ दुक्खलक्खाइ ॥ ८३८ 20
जह अबयो पुरिसो पवंचिओ निरयहिं धुत्तहिं ।
पडइ गहिरंधयूवे कंटयमज्झम्मि जलमेव वा ॥ ८३९
एव अमायंचा जीवा धुत्तहिं रागदोसहिं ।
कयसंमोहा बहुसो नारयतिरिएसु हिंडंति ॥ ८४०
पाणवहामयगिराचोरेयाबंभपरिग्गहामत्ता । 25
अजियंपडुपावमला पडति नरयावडे कवि ॥ ८४१
निस्सीमारंभपरिग्गहेसु गिद्धा असंति गिद्ध व ।
मसबसमोणिपाई क वि नरा जति तो नरए ॥ ८४२
तत्थ य छिंदणभिंदणउक्कत्तणतासणाइ वि महंति ।
पचति कुंभियाए वेयरणिजलम्मि बुज्झंति ॥ ८४३ 30

1 तुमेह 2 तुम्हिट्ठीए. 3 तेणी 4 °संपुडा. 5 दुरुमां 6 तुझेरं 7 अजिय° °यरकम्मा 9 हमंति

वेयरं । न य उक्कडं तस्स भयएसो होइ । ता एयाए तुह धूयाए सुकुलजम्मो विमलरयम्मो रूवलायमन्नुत्तया भोगोवभोगसपया—एयमयगय[1] पुव्वो(भो)वय ममप्पं । ज पुणो मणुणो विरागो, सुमदीवे चागो, वेसाहि हरण, तहाविह रास्समायणाकरण—एय महापलं पावोदयपायवफलं ति ।' पुणो पणमिऊण परितोसेण पुच्छियं—'भयव ! कह पुण दुग्गमेयमेयाए उवज्जियं ? ति नाउ 5 मिच्छामि, तो विसेसेणाणुग्गह काऊण कहिउमरिहति मे भगवंतो त्ति ।' तओ भयवं तस्स अन्नेसिं च लोयाणमणुग्गहनिमित्तं साहेउमारद्धो । अवि य—

[नम्मयासुंदरीए पुव्वभववण्णणा]

अत्थि कलिंगय(र)विसए गामो सिरिमेलउ त्ति नामेण ।
तत्थ सिरिपालनामो एगो कुलपुत्तओ होत्था ॥ ८५४ 10

तस्स य सुरूवकलिया सिरिप्पमा भारिया सिणेहवई ।
गरुयाणुरायकलिया ताणं कालो सुहं जाइ ॥ ८५५

अन्नदियहे सिरिपालो समागमित्तेहिं एयमुल्लविओ ।
'गंतूण अमुगगाम खडेमो अजरयमीए ॥ ८५६

जो कोइ तत्थ ला[p १८B]भो तस्सद्ध[2] तुज्झ सेसमम्हाणं । 15
दिवसाहि अहाभोग विभजिस्सामो य तो अम्हे ॥ ८५७

किं तस्स जीवियव्वं नरस्स रंड इ विगयववसाओ ।
सो चारमेहिं निच्चं न हु गिज्झइ वविहतीहिं(?) ॥' ८५८

सोऊण समुल्लावं सिरिप्पमाए पिओ निओ भणिओ ।
'मा नाह ! कुणसु वयण एएसिं पावमेत्ताणं ॥ ८५९ 20

धणधन्नसमिद्ध(घ)रं मोत्तूण कुणंति रोरियमणग ।
धणसामिपहारहया मुयंति सभे(गे?)हमोगाणं ॥ ८६०

पेच्छई छीरं बरओ मज्जारो न उण लउडयपहारं ।
पेच्छति परेसि धण नियर्य मरण न पेच्छंति ॥ ८६१

जे हुंति नरा दुस्था धरिउ न तरंति अमहा जीयं । 25
ते खलु चोरियजूयं रमंति हरिउं व मरिउं वा ॥ ८६२

त पुण धणसउभो विलससु नियसंपयं सया सुहओ ।
सहायवेणं सय[13] भलाहि चोरईकरयेम ॥' ८६३

---

1 वेयइ 2 दुलगायगं 3 पुन 4 हवत्तिर्य 5 तस्सव 6 पच्छइ 7 पत्तीर 8 मज्जारो, 9 मिवय धम्मं 10 ... 11 तरहे 11 सहायमेडेण 12 मर्य 13 चोरई

छोहमहागहगहिओ सिरिपालो भंडणेइ निययइय।
'नाहं करेमि एयं दइए! तं नेहु सुविसत्था॥' ८६४

अच्छिया घरणीए रयणीए निग्गओ सगेहाओ।
सहस त्ति ताण धाडी पडिया हियइच्छिए गामे॥ ८६५

सघड्ढा गामभडा पयट्टमाओहण महाघोरं।
मग्गा य तहा धाए अणुलग्गा पिट्ठओ कुविया॥ ८६६

दट्ठूणं इम्ममाणे निययजोहे कोववलणपज्जलिओ।
चलिओ तेसिं सम्मुहो सिरिपालो साहससहाओ॥ ८६७

सो एगोऽणेगेहिं समन्तओ वग्गघायबज्जरिओ।
पडिओ मेइणिवीढे संपत्तो दीहरं निद्दं॥ ८६८

आयण्णिऊण एयं सिरिप्पहा मुच्छिया गया धरणिं।
कहकह वि लद्धसन्ना कासि पलावे बहुपयारे॥ ८६९

तत्तो वि सुमणु(पु?)ना अट्टवियट्टा वणंतरे भमिरी।
कालिंजरगिरिमूले संपत्ता आसमं एगं॥ ८७०

दिट्ठा य तावसीहिं दयापहाणाहिं महुरवयणेहिं।
बोलाविऊण भणिया — 'भद्दे! किं इत्थ रुवेसि॥ ८७१

जइ रुयसि जइ वि विलवसि तिलं तिलं जइ वि कप्पसे अप्पं।
तह वि न वलंति पुरिमा विहिया उद्दालिया जे उ॥' ८७२

तो सा भणइ — 'भयवइ! न कयाइ वि मग्ग(ग्गे) खंडिया आणा।
ता कीस सो पउत्थो मए तहा वारिओ संतो?॥' ८७३

तावसीए भणइ —

'जइ वि न गं(हं?)च्छइ गंतुं वारिज्जइ जइ वि निहुयपुहिं।
तह वि हु वयइ पुरिसो पगड्ढिओ कालपासेहिं॥ ८७४

किं तस्स सोइयव्वं धम्मिणि! चिंतेहि अप्पणो धम्मं।
जम्मंतर वि जत्तो दुक्खाण न भायणं होसि॥ ८७५

एत्तो च्चिय वणवासो मूलं सामि होइ दुक्खाणं।
पियविप्पओगदुक्खं सुविणे वि न दीसए एत्थ॥ ८७६

न सुणंति फरुसवयणं आणं न सुणंति कस्सइ कयाइं।
न सुणंति कन्नडवयणं वणवासी महइ [प १९५ A] धन्ना॥ ८७७

---

१ दट्ठूण. २ कालिंजर ३ वयण° ४ कयाइं

बज्झइ मणो महायस ! दुच्चरियमहानलेण एएण।
विज्झवसु तं सुसंजय ! म मीमसु(सीचसु ?) वारिधाराए॥ १०६
अयाणमोहियाए बालिसभावाइ खमसु मे दोसं।
बालकओ अवराहो कोवं न जणेइ सुयणाणं॥ १०७
खम खमसु महेरिसि ! तुम खमिऊ मत्थासि तं चिय न अन्नो।
नहि' चंदमंडलाओ पडति अंगारधाराओ॥' १०८
एवमणेगपयारं खामिंतिं पासिऊण मुणिवसभो'।
उवसंतो उवसग्गो त्ति पारए झाणमइगुरुअं॥ १०९
पभणइ – 'सुसाविगे ! मा बीहसु माहूण होइ न हु कोवो।
सहयारपायवाओ न निबगुलियाण उप्पत्ती॥ ११०
किं च निसामेहि फुडं उवसग्गं चअरेमि जिणभणियं।
विणसाहुचेइयाइं आसायंतो जणो मूढो॥ १११
जणेइ महामोहं धम्मंतसंसारकारणं घोरं।
जेण न पावइ धम्मं नारइतिरियाइदुरियाणं॥ ११२
हासउञ्चिय पि कम्मं वेयइ दुक्खेण कह वि रोयंतो।
भवभमणस्स वि विमए विसेसओ जिणमयवयएसु॥ ११३
एक्कसि कए वि दोसे अणुहवइ जिओ अणंतदुक्खाइं।
जिणसाहुचेइयाणं पडणीओ होज मा कोइ॥ ११४
जइ वि तुह नासि रो(दो ?)सो तहा वि तुमए उवज्जियं पावं'।
इय [पच्छ]यावपराए नवरं उवसामियं बहुयं॥ ११५
तो होऊ इओ सुंदरि ! जिणमुणिभत्ता विसुद्धसम्मत्ता।
झोसेसि जेण सव्व पावं एयं पि अम्मं पि॥' ११६
उप्पाइयसम्मत्तो सो साहू मम्मयाइ देवीए।
काऊण धम्मलाभं भणिओ नियवंछियविहारं॥ ११७
देवी संवेगपरा भवभमणभएण भावियसुभावा।
सव्वं मुणिवरभणियं आयरइ अहण्णिय तुट्ठा॥ ११८
पंचपरिग्गहाणं मम्मा दंसेइ समणसमणीण।
तक्करवग्घाइभया सा रक्खइ निच्च सभिहिया॥ ११९
तम्हाछुहाउ ५ ३ ▲]भिमूयं संघ दट्ठूण अडविमज्झम्मि।
निम्मइ गोउलाइं विउलाइ भत्तपाणड्ढा॥ १२०

१ पहाण° २ भणि ३ बसभा ४ सुसाबगे. ५ कय ६ °बाउर° ७ खामेमि
सव ११

सुगुरु[1] मग्गतीए पत्त तुह दंसण मए सामि! ।
अब्भुट्ठियाएँ वयमारयरणबुद्धिं धरंतीए ॥ १३४
अणुचिट्ठिऊण जणए करेमि ता तुम्ह तुरियमाण चि ।'
भणइ गुरू वि–'अविग्घ मा पडिबंध करेज्जासि' ॥' १३५
भज्जरइ गिहं पत्ता सा चिय गुरुजण विणयसारं । 5
'दिट्ठो नायाइमओ सुहत्थिसूरिस्स तुम्मेहिं ॥ १३६
ज किंचि मज्झ अंगे मयपयंकाएहिं आहिँ जं रइयं ।
तं सव्व चिय नज्जइ समकम्ममेयस्स संजाय ॥ १३७
अणुहूयबहुदुहाए सुमरियनियपुव्वजम्मकम्माएँ ।
ता एयपायमूल जुत्त मे समणगुणधरण ॥' १३८ 10
पडिभणइ गुरुजणो तं–'पुत्ति! तुम सुट्ठु बल्लहा अम्ह ।
किं तु तुह तम्मि वसमे अम्ह सिणेहेण किं सिद्धं? ॥ १३९
सोऊण दुस्सहाइं तुमए सोढाइं दुक्खलक्खाइ ।
मत्त(सव्व?) अम्हाण पि हु पहु(ब)ण्णो इंदि संवेगो ॥ १४०
किं तु वय गुरुकम्मा लहुम(न तरा)मो दुद्धरं वय धरिउं । 15
धन्ना य तुमं इक्का अंगीकाउं [प १ ३] इमं महसि ॥ १४१
पत्ता[विज]हि वच्छे! अम्ह वि य बोहय करेज्जासि ।
मावियजिणधम्मयणाण बयगहणनिवारणमजुत्त ॥' १४२
इय पडुइयदियएहिं दिक्खामहिमा गुरूहिँ पारद्धा ।
घोसाविया य अमरी कया य अट्ठाहिया महिमा ॥ १४३ 20
पडिलाभिया य विहिया समणा समणी य फासुदव्वेहिं[7] ।
सम्माणिओ य सम्म समाणधम्माण समुदाओ ॥ १४४
दिन्नमवारियसत्त मग्गणयगणस्स वड्ढिओ तोसो[8] ।
विहिया य विसेसेणं पूया नियसयणवग्गस्स ॥ १४५
सोहणदियम्मि तत्तो न्हायालंकारसरीरिरीयवया । 25
चलिया सिबियारूढा दुम्मंती[10] मह(मागह)गणेण ॥ १४६
[...] मंगलगीयाईं, दिसि दिसि सुव्वंती.।.
पत्ता वसहिसमीवं उयरिक्का [त]ओ [य?] सिबियाओ ॥ १४७
होऊण गयणा[ई?] काउं तिपयाहिणं[11] मुणिवरस्स ।
पमणसि कयजलिणा वणगीजमया मुणिपई[12]व ॥ १४८ 30

---

1 सुगुरुं 2 मग्गंतीए 3 °आमि 4 °मइ 5 °कसमय 6 दुक्खदायं 7 °फासुयदव्वा 8 °पव्वरण 9 °देसेहिं 10 वासो 11 °उत्मारोरीरिया 12 दुसंती 13 °पहिं° 14 °पिय. 15 °पयस

'भयवं! एसा अम्हं अइप्पिया नम्मया वरा धूया ।
संसारभउब्बिग्गा इच्छइ संजममग्गं[1] घेत्तुं ॥ ९४९
एयं सीसिणिभिक्खं तं[2] गेण्ह[ह] दिज्जमाणमम्हेहिं ।
तुम्ह सरणागयाए अ भुत्तमिमीए[3] त कुणह ॥' ९५०
आह गुरू– 'भुत्तमिण जया एसा पुरा सुकयपुण्णा ।
तुम्हे वि मूढं[5] जया जाय कुले वड्डिया एसा ॥' ९५१
दिन्ना य तओ दिक्खा तीए पच्चक्खमेव सयणाणं ।
जिणभासिएण विहिणा सुहत्थिनामेण मुणिवइणा ॥ ९५२
अभिनंदिया य विहिणा तत्तो सयणेहिं सव्वहियएहिं ।
दिन्नो आसीवाओ– 'नित्थारगपारगा होसु ॥ ९५३
देवगुरुपसायाओ संपुण्णमणोरहा तुमं जाया ।
अम्हाण वि संपत्ती एरिसिया होज्ज कइया वि ॥' ९५४
उववूहिऊण बहुसो पुणो पुणो वंदिऊण भत्तीए ।
वड्डियहरिसविसाओ सयणगणो पडिगओ गेहं ॥ ९५५
इयरी वि वसुमईए पवत्तिणीए समप्पिया गुरुणा ।
दुविहपयारं सिक्खं पगिण्हई विणयनयनिउणा ॥ ९५६
वसइ सारिंती अणुग्गाइं दुन्नि वारिया संती ।
चोइज्जंती वि खरं न चेव पडिचोयणं कुणइ ॥ ९५७
दिवसेण वि विउलाए विणीयवयणा करेइ सा विणयं ।
समणगुणड्ढ(ड्ढि)यं गुरुणीए कुणइ किच्चं ॥ ९५८
छट्ठट्ठमदसमं तवइ तवं गुरुयणस्स आणाए ।
सोसेइ निय देहं सुमरंती पुव्वदुक्खाइं ॥ ९५९
पवा(मा)यसया तुरियं अहिणा[इ] विविहसुत्तपयमाला ।
एक्कारस अंगाइं पवित्तिणीए पसाएण ॥ ९६०
मरणाचियसुयत्था संवरणाऽऽसवमवाम य दुहाणं ।
संजाया गुरुगोरवपयं विसेसेण समणीणं ॥ ९६१
पावियसुहपरिणामा जा नम्मयसुंदरी तव भवइ ।
एत्थंतरम्मि वसुमइपवत्तिणी [प. ११ A] पाविया सग्गं ॥ ९६२

---

१ संजमग्गं २ त ३ °मीए. ४ मुह. ५ मूढो ६ तुव. °वयण ८ तत्तो.
९ गुणदेहि° १० व्वाडी° ११ पविणिपिरा १२ सुहम्म

[नम्मयासुंदरीए पवत्तिणीपयठवणा]

जोग्ग त्ति[1] जाणिऊण ठविया गुरुणा पवत्तिणी एसा ।
समयंती आयइ समणीसंघस्स सयलस्स ॥ ९६३

तो गुरुणाणुन्नाया साहुणिजणउचियउज्जयविहारा ।
गामनगरेसु विहरइ बोहंती धम्मिए लोए ॥ ९६४

सम्मत्त नियचरियं सवित्थरं साहिऊण संविग्गा[2] ।
समयंमि साविगाण य विसमओ देइ उवएसं ॥ ९६५

साहूसु साहुणीसु य – 'वयमंगमवि मा करेज्जासु ।
दुक्खेहिं दारुणेहिं अइ सा पत्तेहिं न हु फलं ॥ ९६६

मच्छायमोहियाए पुव्वभवे मुणिवरो मए पगो ।
काउस्सग्गम्मि ठिओ लुब्भइ सवउ(न य य)त्ति कोउय ॥ ९६७

उवसग्गिओ महप्पा खुभिओ मणय पि नेव झाणाओ ।
बद्ध च मए पावं जस्स विवागो इमो जाओ ॥' ९६८

वयपरिणामवसेहिं किसियंगी सा चिरम कालेण ।
तारिसिया संजाया सयणा वि जहा न लक्खंति ॥ ९६९

जे आसि सिरे केसा अइकुडिलसंगमच्छइच्छाया ।
ते कासकुसुमधवला विरल च्चिय केइ दीसंति ॥ ९७०

आयंससमच्छाया आसि कवोला वि जे सहुयाणा ।
तवसोसियदेहाए जाया खामा दढ ते वि ॥ ९७१

सोमालसंग(स)ठाओ अंगुलिओ आसि हत्थपाएसु ।
परिसुक्क[ड्ड]धविय ब अमरूव गया ताओ ॥ ९७२

सेयपडपाउयंगी तणुए[3] धूल व सुणइ न हि कोइ ।
सद्दो वि सारमहुरो न अप्पमाय गओ तीए ॥ ९७३

[नम्मयासुंदरीए कूवचन्द्रगामे पइ विहरणं]

इओ य जप्पभिइं[4] जाणिओ[5] अणएहिं नम्मयापरिच्चागवुत्तंतो तप्पभिइं चेव अवहत्थिओ रुद्दचंद्रोदत्तो[6] । रिसिदत्ता वि अभायपुत्रावराहा न कोइ तस्सि करेइ त्ति माणेण न तसिं घरमभिसरइ । चिरस्स ममागएण महेसरदत्तेण एगमाणेण साहियं सयमाणं जहा – 'सुमईवे रक्खउसेण रहया मम दइया, अहं पि किच्छेण वारियमइ सम्गिऊण पसाओ तेण जीविओ इन्हि ।' एय

---

1 जोग्गत्ति 2 संविग्गा 3 तणुए 4 जप्पभिइं 5 जाणिओ 6 रुद्दचंद्रोदत्तो

सोऊण माया सोमादरा रिसिदत्ता, रोयमाणी कहकह वि धीरविया सयणव
ग्गेण। तह वि तीए माणाइसएण न नामाविओ एस वइयरो वयणगिहे।
महेसरदत्तो वि कयकलत्तपरसंगहो अपरिचत्तसावगधम्मो नम्मयासुंदरिसुमरि
रेण एयपसंगपाए कालमासं गेण्हइ। परोप्परगमणागमसमोसरणाओ कूवचंद्
5 नयरे न केणावि वियाणं नम्मयासुंदरीए आगमणं पच्चयसा। एवं च काले
वच्चमाणे अन्नया पवत्तिणीए सामच्छियाओ साहुणीओ—'सइ मे रोयई
ता कूवचंदेण विहारं करेमो।' ताहिं भणियं—'भयवई' पमाण।' 'तो ताई
तुम्हे तत्थ गयाओ मम नामं मा [प ११ ब] कहेज्जाह, "पवत्तिणी पवत्तिणी"
त्ति अहं भाणियव्वा तओ अमायत्तण्डमे(से ?)णए मे वच्छेइ किं नामविव
10एणं ?' तओ 'समाणवेहिं' त्ति परिवारेण पुणे सुहविहारेण पत्ता तत्थ। वहूण
वंदियाओ महेसरदत्तेण, दिन्नो नियगिहाम[मि] उवस्सओ। ठियाओ तत्थ
वंदियाओ मणिसारं। रिसिदत्ताए दंसियाइं चेइयाइं, कयमुक्कंठियाए
पवत्तिणीए विसेसेण वंदण। विहिया विहाणेण धम्मदेसणा, आणंदिओ
सावियाधम्मो। एवमणायपरियाए विहरमाणीओ सज्झायंतीओ चेट्ठति। तत्थ
15महेसरदत्तो वि तासिं किरियाकलावाणुरंजियमणो तासिं सज्झायंदुविमेगचित्तो
निसामेइ, विसेसओ पवत्तिणीए। चिंतेइ 'नम्मयसुंदरिसरिच्छा एसे [स]रो।
नूणमेसा तीसे माउच्छा माउच्छीदुहि[या] वा भविस्सइ। कहमन्नहा सर
समाणत्तं ?' ति। अन्नया कयाइ पवत्तिणी मुहुरवाणीए सरमंडलपगरणं
परावत्तिउं पवत्ता। अवि य—

20 'सो जयउ जिणवरिंदो जस्स मुहा म(मु)णचंदबिंबाओ।
अरमरणवाहिहरणं सिद्धंतमहामयं झरिय॥ १७४
जयइ सरमंडलं तु जणिइ परिपम सुद्धिसन्तोहिं।
पुरिसाण महेलाण य गुणा य दोसा य नज्जंति॥ १७५
सत्त सरा पढमो सज्जो रिसहो तहेव गंधारो।
25 मज्झिम पंचम रेवय नेसाओ सत्तमो होइ॥ १७६
सत्त [स]रट्ठाणाइं तत्थ य सज्जं तु अग्गजीहाए।
रिसभ उरेण कण्ठेण तइयय नीसवेइ सरं॥ १७७

१ °चत्ता° २ °समणीया ३ °पसाण. ४ रोयइ ५ भयवइ ६ कहेज्जाह.
७ पवित्ती ८ अमायं° ९ वत्तियाइं १० दुवं° ११ विरहम° १२ सुद्धि°
१३ विच्छ. १४ एस १५ पवित्ती १६ सज्जा १७ सज्ज १८ कण्ठेण.

मज्झिमसंबीढाए मज्झिमं¹ तु नासाएं पत्रम आए।
रेवय दतोडुवइ² मडुइफ्खेदे(वे)ण्य नसाय ॥　　१७८

सज्ज रवइ मयूरो रिसहं पुण कुक्कुडो सरं रवइ।
हंसो गंधारसरं मज्झ तु गवेलया रवइ ॥　　१७९

पंचमयं परपुट्ठा छट्ठं पुण सारसा य कुंचा य।　　5
सत्तमय तु गयंदा सत्तसरा जीवनिस्साओ ॥　　१८०

सज्जं रवइ मुइंगो गोमुह रिसहं च नदइ गभीरं।
संखो वि य गंधारं मज्झिमयं झल्लरी रसइ ॥　　१८१

चउचरणगोहिया पंचम तु आडंबरो य रेवयय।
सत्तमय पुण भेरी भणिया अजीवनिस्साओ ॥　　१८२ 10

सज्जेण सुहपवित्ती बहुपुत्तो पच्छहो³ य सुपईण।
रिसहेण धम्मयत्तो भणिओ सेणावई चेव ॥　　१८३

विविहधणरयणभागी भणिओ गधप्पिओ य गंधारे।
पवियक्खणो कवी वि य पयम्मि सर समक्खाओ ॥　　१८४

मज्झिमसरप्पलावी सुहजीवी बहुधणो य दाया य।　　15
पंचमसरमंता पुण पुहई[इ]बई⁴ हुंति धरा य ॥　　१८५

छट्ठे कुम्छिप्पवित्ती कुससयकुमोयणा कुओमीया।
कलहकरलहणाढमदुहजीवी सत्तमे भणिया ॥　　१८६

पयईकसिणो सज्जं अवस्स मावेइ जइ वि य समत्थं।
असमत्थेमच्छकाळो गुज्झम्मि य लक्खणं रच ॥　　१८७ 20

रिसहं मरगयगोरो [प ११ A] अवस्स मावेइ परमगोरो वा।
तेण य सिरम्मि तस्स य विवरीयं लक्खणं भवइ ॥　　१८८

धवलो गंधारसरं अवस्स मावेइ किंचि मावेय।
तेण य तं विवरीय दाहिणओ लक्खणं होइ ॥　　१८९

कणयपहो मज्झिमयं अवस्स मावेइ जइ वि न विस(सम?)त्थं।　25
तेण उठरम्मि बिंब तविवरीयं वियामेजा ॥　　१९०

आलोहियधवलवंओ अवस्स मावेइ पंचम सो उ।
होइ य सिरम्मि पिप्पो ऐकयवहलमप्पमो तस्स ॥　　१९१

छट्ठ फलोयवह(?) अवस्स मावेइ चित्तवओ य।
तेणावि रत्तवमो अवस्स लिंगे ममो होइ ॥　　१९२ 30

१ °ज्झिम° २ मज्झिमं. ३ °ममह ४ हसं ५ गहओ ६ °वइ ७ कुच्छीव° ८ °कुलोवम ९ °जीव १ सिरम्मि

सयमयं सुद्ध(ह?)गामो पढमतिमिरो य कुणइ निवतीए ।
ताण य रूवउवरिल्ला होंति मसा पउमदेसेसु ॥' ९९३

[महेसरदत्तकयपच्छायावो]

एय च पढिऊण मइ आगमसठिओऽणहिओ ।
सुणइ महेसरदत्तो चिंतइ तो मणयं ॥ ९९४
'मासि मए सुयपुव्व एमा सरमरलं वियायेइ ।
सिद्ध च तीए अहयं जाणामि जिणागमपसाया ॥ ९९५
कोहेग्गिसुयगमयफियस्स पच्चुप्पमयलमयस्स ।
सुइगोयरं न पत्त पडिमग्गममग्गमग्गस्स ॥ ९९६
पच्चुट्ठो गुणनिवहो असंतदोसा पइट्ठिया चित्ते ।
पुव्वरियहियस्स न विवरीया पाउणो आया ॥ ९९७
एक्किक्को तीए गुणो दीसइ अन्नासु नेय नारीओ(सु) ।
अप्पा हु अप्पण चिय हा ! मुद्धो दुट्ठचित्तेण ॥ ९९८
सो तारिसओ विणओ सि(सि) चिय महुरक्खरा समुल्लावा ।
कत्थ मए सहियव्वा दूरीकयमाणयओण' ॥ ९९९
हा हा ! पाविट्ठो हं अय तहा मीसणम्मि दीवम्मि ।
एगागिणी अणाहा मुक्का निक्करुणचित्तेण ॥ १०००
महविरहमीरुहियया मए समं' पत्थिया किर वराई' ।
सो मे कओ महंतो ही दारुणो मयं पावं ॥' १००१
एवं चिंतियंतो संभरियासमसियेहसब्भावो ।
सहस त्ति महीए मुच्छाविहसंघलो पडिओ ॥ १००२
तक्खणमिलिएहिं सवणेहिं सहस त्ति सिसिरनीरेण ।
जलसित्तपवणाओ किंचेण सचेयणो होइ ॥ १००३
वारं वारं हत्थ गच्छइ मुच्छं निवज्जमाणाणं ।
नीसेसमवणाए हाहारवभरियमयणाणं ॥ १००४
नाइक्खइ निययदुक्खं पुच्छंताणं पि नियबंधूणं ।
मोणवयणो चट्टइ एवं हिययम्मि झायंतो ॥ १००५
'अप्पा हु अप्पण चिय लज्जइ सरियहिं जहिं कम्मेहिं ।
कह तामि बंधवाणं पुरओ धीरेति अक्खाउं ॥' १००६

१ मोहणं २ वच्चासु ३ 'बंधाण' ४ मिवाण' ५ सर्व ६ वराई

बाहरिया य सवेगं संपत्ता तो पवत्तिणी भणइ।
'किमियमयंडे पत्त' सावग! वसण समुप्पन्नं ॥' १००७
काऊण य एगंत पभणइ–'भयवइ! उवट्ठिय मरणं।
देहि पसाय काउं पज्जंतालोयण मज्झ ॥ १००८
[बो]हिमज्झत्तं भवस्स य पुणो नियय दुक्खपमणज्ज'। 5
तं पि गुरु[११]ण नियमा माहिज्जा मरणसमयम्मि ॥' १००९
इय भणियम्मि निमज्जा पवत्तिणी माहिय तओ तेण।
सयलं जहट्ठियं साव नम्मया उज्झिया सुया ॥ १०१०
'सरमंडलसज्झायं मज्झ सुमतस्स मज्झ संभरिमं।
सा वि पढती एव विभायं तेण तं चिंधं ॥ १०११ 10
भज्जे! जाणामि मइ असमिक्खियकारओ महापावो।
दुक्कम्मिण सरंतो पावे पविउ न यामि ॥ १०१२
ता देहि अणसणं मे कमेसु सव्वेसु जिणनमोकारं।
मा हुज्ज पसायाओ पाविज पुणो वि जिणधम्मं ॥' १०१३
भणइ पवत्तिणी तो–'बालुछावेहि सावग! इमेहिं। 15
सिज्झइ न किंचि कज्ज परमत्थवियारण कुणसु ॥ १०१४
न हि मरणमित्तमज्झं एवं तुह संतिय महापावं।
सुज्झइ नियमा तवसंजमेहिं जिणवीरमणिएहिं ॥ १०१५
अन्न च–
नूणं पुराणमसुहं कम्मसुहम तया तुह पियाए। 20
उवसमो से नूण समुट्ठिओऽसंभर अग्गी ॥ १०१६
पंडिय! सुसिक्खिओ व गुरुजणउवएससा(मा?)वियमणो इ(य)।
नूण तीए कम्मेहिं चोइओ निदओ जाओ ॥ १०१७
किं बहुणा भो सावग! तवेयं मा करेसु तवसिए।
दुक्खसुक्खए य नियए मोत्तव्व सव्वजीवेहिं ॥' १०१८ 25
भणइ महेसरदत्तो–'भगवइ! तं भणसि अवितह सव्वं।
तह वि न सरामि चरिउं पावे तीए अदिट्ठाए ॥' १०१९
विभायनिच्छया तो ईसि हसंती पवित्तिणी भणइ।
'उवउत्तेसि न दिट्ठा तहावि तुह इयिओ नेहो ॥ १०२०
नणु होमि नम्मया हं न मया निरुवक्कमाउया नूण। 30
सावय! तुज्झ पमाया सामपसिरी मए पत्ता ॥ १०२१

१ भीहे २ °भवत्त ३ °वालो ४ पचावाओ ५ भणइ ६ भी.
११

मायइ धणस्स नासो चणस्स पुव्वंतरायदोसाओ ।
तेण परिदालिद्दं रूसइ लोगो मुहा सव्वो ॥ १०२०

अन्नाणंधा जीवा करेंति कूराइं ताइं कम्माइं ।
नारयतिरियंतस्स य अणुमग्गं जाइं धावंति ॥ १०२१

भो भो ! महाणुभावो वीरजिणिंदस्स सासणे लीणा । 5
काऊण समणधम्मं दुक्खाण जलंजलिं देह ॥' १०२२

पभणइ महेसरो य – 'अ पत्त धम्मरे तुमे दुक्खं ।
त सोढं पि न सक्को किं पुण सोढुं मणो मज्झो ॥ १०२३

तस्स वि अह निमित्तं हा ! धिट्ठी निग्घिणो महापावो ।
पाविओ किं कयाई मोहिं बोहिं च जिणधम्मं ॥' १०२४ 10

पभणइ पवत्तिणी य – 'वारं वारं किमणुसोयसि ? ।
नत्थि असज्झं किंचि वि सावग ! जिणभणियदिक्खाए ॥ १०२५

सुव्वइ दढप्पहारी चोरो अघवहुरकम्मो वि ।
सामण्णाओ पत्तो सुद्धिं सिद्धिं च सुकयाओ ॥ १०२६

एसी सुहत्थिगुरुणी निम्मलसुयनाणलोयणो एत्थ । 15
नीसेसपाणिपरिणामजाणओ तस्समीवम्मि ॥ १०२७

आलोइऊण पावं पालिज्जसु निम्मलं समणधम्मं ।
सोहिउवाओ एसो मा धरसु मणम्मि संदेहं ॥ १०२८

सुत्ता तुमए भोगा भुत्थिय समारंभमनेगुण' ।
सुचे पवत्तिणाओ सपइ गिहधम्मधाओ त ॥' १०२९ 20

रिसिदत्ता वि रुयंती पुणो – 'जइ पच्छा जइ अंबे ! ।
लग्गसु ममाणुमग्गं मग्गे पेव्वाणनयरस्स ॥ १०४०

भमइ रुयंतं सुयं नहो वि हु किंचिमो य पडिहाइ ।
जलयम्मि भमइ लोगो महिं रत्तु पच्छइउप्पेण ॥ १०४१

सुन्दाणमइ बोहणनिमित्तमहमागया इह पुरम्मि । 25
सुयइ मरणसु अओ इहं धम्मम्मि उज्झा ॥' १०४२

नम्मयपवत्तिणीए पवत्तियाइं दूवे वि जयगइये ।
सो पिय मओ मित्तो उ पासाओ निवसेइ ॥ १०४३

[सुहत्थिसूरिकया धम्मदेसणा

इय पवरम्मि पुणो सुहत्थिगुरु ४ ११० अी महामुणी तत्थ । 30
आयामिमा य रम्मं उज्जाणं नइगरम्मि ॥ १०४४

---

१ सुरा २ भन्नो ३ अणुणं ४ कमाणु ५ सिद्धि

आओ नयरावंदो पए पए मयए सयसपूहो।
मूर्य इमम्मि नयरे कल्लाणमुवट्ठियं किं पि॥ १०४५
जं एसो सुरमहिओ संपइरायस्स वल्लहो मयय।
संपत्तो अज्ज इहं अवकरवसजनिसिनाहो॥ १०४६

5 रायाइ नमोसओ नियपयउविएवं सयलविहवेणं।
अभिवंदिउं मुणिंदं निक्खंतो इ त्ति नयराओ॥ १०४७
अभिवंदिऊण विहिणा मुणिनाहं साहुसत्थपरियरियं।
उववट्ठो सयलजणो नियनियउचिएसु ठाणेसु॥ १०४८
पारद्धा धम्मकहा नवजलहरगहिरमहुरसदेण।
10 सव्वेसिं सत्ताण अणुग्गहट्ठं जहमहत्था॥ १०४९
'माणुस्स कम्मभूमी आरियदेसो' इमम्मि उप्पत्ती।
कुलं चरमतरोग्ग(ग्गं) सुदीहरं आउयं बुद्धी॥ १०५०
सुहगुरुजोमो बोही सद्धा चारित्तधम्मपडिवत्ती।
दुक्खेण जए लब्भइ एसा कल्लाणरिंछोली॥ १०५१
15 एगिंदियो अणंता मरिउं मरिउं पुणो वि तत्थेव।
उववजंति वराया कालमणंतं सकम्मेहिं॥ १०५२
उव्वट्टिऊणं विरला बिंयसियपउरिंदिएसु गच्छंति।
तत्थ य पुणो पुणो वि य मरंति जायंति बहुकालं॥ १०५३
पंचिंदिया वि होउं जलथलखयरजरविविहजोणीसु।
20 चिट्ठंति चिरं कालं जंति पुणो पुरिसजोणीसु॥ १ ५४
विरला केइ नरत्तं लहंति तत्थ वि अणारिया बहवे।
तत्तो वि हु विरलाण आरियदेसे हवइ जम्मो॥ १०५५
आरियदेसे वि ठिओ धीवरचंडालडुंबयाईसु।
कुच्छियकुलेसु जाया नाम न सुणंति धम्मस्स॥ १०५६
25 उत्तमकुलेसु जाया कमला कुंटा य पंगुला अंधा।
जीवा अभिहुयत्ता विक्खं न लहंति धिमसमिरियं॥ १०५७
सव्वंगसमलबलविपुला धम्मं न कुणंति रुवकलिया वि।
बलवंताण वि रोगाउराण धम्मे कओ सत्ती?॥ १ ५८

१ नअरो २ ज्येविदय. ३ भवबमिदरोल. ४ भाहो. ५ माहु ६ "पोवा
७ वोहा. सुवा. ९ एगींदिया १ वनहिदल ११ मिम" १२ पंचेंदिय.
१३ धीवर" १४ पंगुल.

सयगुणसगया वि हु मालवे कइ संति पचर्त्त' ।
भणे नवसारुभे तेसिं पि हु दुल्लहो धम्मो ॥ १०५९
चिरजीवीण वि बुद्धी धम्मे विरलाण होइ केसिंचि ।
गुरुसपओगविरहा गहूण न हु साफल होइ ॥ १०६०
धम्मे मई' कुमसा अमायपासंडिगोयरावडिया ।
मामिलति अमेगे अह पक कुमयारेण ॥ १०६१
कारिजति अधम्म बाला धुत्तेहिं धम्मबुद्धीए ।
मोइजंति विसक्त नूम चिरजीवियनिमित्त ॥ १०६२
गुरुणा वि कहिज्जते धम्मे मोहिं न केइ पावंति ।
पिब्बणनाणावरणस्स कम्मणो इदि उदएणे ॥ १०६३
बुद्धे वि धम्मरूवे न सद्दहंत गहूण संभवइ ।
मिच्छत्तमोहणिज्जे तिबे उदयम्मि संपत्त ॥ १०६४
सद्दहमाणा वि नरा धम्मं जिणदेसियं विगयसंग ।
न कुणंति समत्तधम्म [प २५ A] गिद्धा गिहदेसविसएसु ॥ १०६५
दुलह गुणसंदोह लद्ध पि हु ते पमायदोसेण ।
हारिंति भद्दभग्गा घमियं कणयं व फुकाए ॥ १०६६
जह सागरम्मि पडिओ कीलयकज्जेण भिंदई नावं ।
इय विसयकए जीवो हारइ पत्तं पि सामग्गिं ॥ १०६७
जह कोद्दवाण छित्ते छिन्तुं कप्पूरअगुरुसमूहं ।
वाडी करेइ एव भोगस्थी चयइ जो धम्मं ॥ १०६८
कक्कड वि दुक्खपत्त कप्पतरुं कोई पत्थइ घोरे ।
पत्ते पुन्नगुणोहे एव विसएसु जो रमइ ॥ १०६९
मत्थो अणत्थमूलं बंधुजणो बंधणं विसं विसया ।
पसमसुहामयमरिओ संजमरयणायरो मग्गो ॥ १०७०
भरमरणवारिपूरे विओगरोगाइगाहगहणम्मि ।
मा पडह भवसमुद्दे चरित्तपोयं समारुहह ॥' ॥ १०७१
वेसणमिमं सुणिया संजुद्धा तत्थ पाणिणो बहवे ।
संसारमउब्विग्गा जाया समणा समियमोहा ॥ १०७२

[महेसरदत्तस्स जणणीसहियस्स चरणपडिवत्ती]

सो वि महेसरदत्तो संपावियभावचरणपरिणामो ।
आलोइयदुच्चरिओ जणणीसहिओ ठिओ चरणे ॥ १०७३

---

१ पैनची २ सर्वे ३ "जीवीन" ४ कमसुत्तो ५ आइएण. ६ ... ७ गोह

संजाया कयकिच्चा पवत्तिणी नाणचरणठाणेसु ।
संवेगमावियाइ तिन्नि वि तप्पंति तवमुग्गं ॥ १०७४

छट्ठाओ अट्ठमाओ दह य दसमओ मासओ अद्धमासा
अंतं पंतं [च रुक्खं] तदनुपारणए किं पि भुंजंति भत्तं ।
सीयं उन्हं च सन्हं सुहमवि बहुसो मासखारे सहंते
सोसेउं पावपंकं गुरुपयकमले भिंगरूव वहंता ॥ १०७५

अट्ठेण रूवेण य दूरियाइं धम्मेण सुवन्न य संजुयाइं ।
छुट्टेण अस्सेण य ताणि नूणं मारोंति मप्पाणमहोनिसिं पि ॥ १०७६

एवं विहरंताइं कयाइं पत्ताइं नम्मयपुरम्मि ।
परितुट्ठो संभुमणो सद्धो भणिउं समाढत्तो ॥ १०७७

'धन्नाइं पुन्नाइं तुम्हे तुम्हाण जीवियं सहलं ।
सामण्णमणुत्तरं जाइं पालेह एयं ति ॥ १०७८

धन्नं कुलं मायाणं सुय एयविहं यपुन्नाए ।
सयलो वि अम्ह वंसो अलंकिओ नूण तुम्भेहिं ॥ १०७९

धन्नया सि पवत्तिणि ! रिसिदत्ता ठाविया जओ तुमए ।
एवं सामण्णधम्मे इन्हिं पुण दुक्करे चरणे ॥' १०८०

एवमणुवूहिया वंदिया य सयणेहिं हट्ठतुट्ठेहिं ।
सेसो वि नयरलोगो जाओ तद्दंसणे सुहओ ॥ १०८१

तीए तत्थ ठियाए जाओ धम्मुज्जुओ सयललोगो ।
पव्वइओ य विहिणा सयणजणो सेसलोगो वि ॥ १०८२

सा तत्थ तत्थ विहरइ धम्मगमाएज्जकम्मजोगेण ।
पडिबोहइ भवियजणं कुमुयव(व)णं चंदलेह व्व ॥ १०८३

पावेइ कह चरणं अन्न ठावेइ देसविरयम्मि ।
गाहेइ कह सम्मं उप्पायइ बोहिबीयाइं ॥ १ ८४

सासणमुब्भासंती विहरइ सा जत्थ जत्थ देसम्मि ।
जायइ लोगो गुणगहणवावडो तत्थ सव्वत्थ [प १४ B] ॥ १०८५

अह अमया कयाइं एगारसअंगधारिणी होउं ।
तवनियमसोसियंगी रिसिदत्ता गुरुअणुन्नाया ॥ १०८६

आलोइयपडिक्कंता सम्मं संघस्स खामणं काउं ।
भवपरिमयइमामंदरसिहरं समारूढा ॥ १०८७

चउसरणगमणदु(दुं)क्कडगरिहासुकडाण(णु)मोयणं काउं ।
झायंती य सुणंती पंचनमोक्कारमविरामं ॥ १०८८

---

१ सार. २ °त्थ. ३ धन्नं ४ पुन्नं ५ °पेत्ता

अइतवसमसतोणियघम्मट्ठिणहारुवारुमीमत्थ ।
मोत्तूण तणुं खणमित्र उववन्नो मासमत्तते ॥ १०८९
कप्पे सणंकुमारे अइसयरमणेज्जसुरविमाणम्मि ।
सुरविसरकयाणंदो सुरिंदसामाणिओ देवो ॥ १०९०
कडयमणिमउडकुंडलतुडियामरणेहिं भूसियावयवो । 5
हारद्धहारपरयो(च्छो) दीहरहेरत्तवणमालो ॥ १०९१
विमायपुब्वजम्मो काउं सव्वाइं देवकिच्चाइं ।
अच्छरगणमज्झगओ विलसइ पगामसच्छंदो ॥ १०९२
एव महेसरदत्तो साहू साहूण सन्निहाणेण ।
मत्तपरिकामसम्म फाऊणाराहिऊणं तो ॥ १०९३ 10
तत्थेव देवलोए सुरवइसामाणियत्तमणुपत्तो ।
अवगयपारियफलो विलसइ सम्मत्तथिरचित्तो ॥ १०९४

[नम्मयासुंदरिए सग्गगमण]

कालेण कालकालं पवत्तिणी नम्मया वि नाऊण ।
उवरियसाससहा सयलं संघ खमावित्ता ॥ १०९५ 15
समणीण साविपाण य विसेसओ वागरेइ उवएसं ।
'आसायणं मुणीण मणसा वि हु मा करेज्जाह ॥ १०९६
जो हीलइ साहुजण स हीलणिज्जो भवे भवे होइ ।
अकोसंतो बहुबन्धणाइ पावेइ पइजम्मं ॥ १०९७
जो पुण देइ पहारं समत्तजियबंधवाण साहूण । 20
वज्जग्गिघोरजालावलीसु सो पच्चए नरए ॥ १०९८
तत्थेव मत्थहाणी होइ मुणीण अघायणाओ ।
दुक्खमविप्पमोगो [अ]कालमरणं च जीवाणं ॥ १०९९
अहव असज्झो वाहे संजायइ कोइ दारुणो वाही ।
हसिया वि रोवियव्वे होंति निमित्त न संदेहो ॥' ११०० 25
एव मणिऊण फुडं कहेइ नीसेसमप्पणो चरियं ।
जेण निसुएण जाओ संवेगो समणसड्ढीण ॥ ११०१
ताहे भत्तपरिन्न सम्मं पालेइ मासपरिमाणं ।
जीवियमरणासंसप्पओगपरिवज्जियमईया ॥ ११०२
चइऊण तणुकलंक पत्ता तम्मेव कप्पम्मि । 30
सुरनाहसमाणत्त परियरमायप्पमाणेहिं ॥ ११०३

१ °गिच्चाद° २ °वि° ३ °हो ४ °भारी

तियसमउमराळीसीहेणायारविंदो भणिकम्मयविचित्ताकडुसंपयसोहो ।
पणयतियसरामारामणाउलियचित्तो न हि मुणइ म कालं अच्छरमंतरम्मि ॥ ११०४

गीयं गंधब्बियाणं मुरसुहसवण्णं नूण तालाणुविद्ध
मई देवंगणाणं नयणमणहरं अंगहाराभिरामं ।
५ गंधो कप्पूर[प १५८ A]पारीपरिमलबहलो घाणसंतोसकारी
फासो देवंगदेवीतणुममणुगओ देहसोक्खस्स हेऊ ॥ ११०५

सोक्खं एवंपयारं से संवेयंता निरंतरं ।
सत्तसागरमाणं ते काउ पालित्तु आउयं ॥ ११०६

सत्तो चइत्ता सुरसेससुक्खा इहेव वासम्मि महाविदेहे ।
१० अणुत्तरे साहुगुणे चरित्ता भाहिंति मोक्खं धुयकम्मलेसं[1] ॥ ११०७

चरियमणहमेयं नम्मयासुंदरीए अणुदिणगदियस्स पावहरस्स पगरणं ।
भवियमणुयहीनासमत्थ कणासं परिहियरसियएहिं संविहरिणगेहिं ॥ ११०८

धम्मकहा पुण एसा सम्मा इह साहिओ इमो धम्मो ।
सम्मत्ते नायव्वं सिवसुहसंपयविहेउम्मि ॥ ११०९

१५ नयमंमस्स निमित्त उवसग्गो नो मुणीण कायव्वो ।
पाळेयव्वं सीलं पाणच्चाए वि जत्तेण ॥ १११०

नाऊण गेहवासं कायव्वो संजमो सुपरिसुद्धो ।
नम्मयासुंदरिचरियं निरंतरं संभरंतेहिं ॥ ११११

सिविहपयसंपयाए कडय जइ किंचि ऊणमहियं वा ।
२० मम्मिय पमायओ वा न संसओ तत्थ कायव्वो ॥ १११२

एसा य कहा कहिया महिंदसूरीहिं नियसीसेहिं ।
कम्मरिणमहि न उणो पंडियपयवगनिमित्तं ॥ १११३

जो लिहइ जो लिहावइ वायइ कहेइ सुणइ वा सम्म ।
तेसिं पवयणदेवी करेउ रक्खं पयत्तेण ॥ १११४

२५ संतिं करेउ संती संतियरो सयलजीवलोयस्स ।
तह नमसंठियकरो कयरक्खो समणसंघस्स ॥ १११५

निम्माया एस कहा विक्कमसंवच्छर वरकाले ।
एक्कारसहिं सएहिं सत्तासीएहिं वरिसाणं ॥ १११६

मासोपासियएगारसीए वारम्मि दिवसनाहस्स ।
३० सिरिसा परमायरिसे मुणिणा गणिसीलचंदेण ॥ १११७

॥ श्री ॥ इति नर्मदासुन्दरीकथा समाप्ता ॥

॥ ग्रंथाग्र १०५ ॥

---

१ मोक्खं ? २ °हुणाण° ३ °लेस ४ मिच्छ° ५ उणो ६ संती

कंठगयपाणी सा जाया अबलतुम्बलसरीरा।
चिंतावसा चिट्ठइ तं दट्ठु भणइ सहदेवो॥ २३

'किं सुइ पिए! न गुज्झइ ज आसी एरिसा' सरीरेण?।'
भणइ इमा—'मह पियपम! भणम्मि नगु डोहलो गरुओ॥ २४

जाओ गब्भवसेण जइ किरै मज्जामि नम्मयासलिले। 5
सुभए सइ' सो पसो आसासियं कुणइ सामग्गिं॥ २५

बहुवणिउत्तसमेओ गिण्हइ नाणाविहाइँ पणियाइं।
काऊण महासत्थं चलिओ मह सोहणदिणम्मि॥ २६

अणवरयपयाणेहिं वियरंतो' अरबविल्परं पत्तो।
नम्मयैनईयँ तीरे आवासइ सोहणपएसे॥ २७ 10

दट्ठूण नम्मय सो बहुवरलतरंगरेहिरावत्तं।
मज्जणयविभूईएँ पियाएँ सह मज्जण कुणइ॥ २८

संपुण्णे डोहलएँ तत्थेव य नम्मयापुरं नाम।
रम्मनयरं निवेसिय कारावइ वरजिणायपण॥ २९

त सोउ सब्बत्तो आगच्छइ तत्थ भूरि वणिलोगो। 15
आयइ यं महालाभो पसिद्धमेव' पुरं जायं॥ ३०

अह सुंदरी वि तत्थेव वरपुरे नियगिहे' निवसमाणी।
पसवइ पसत्थदिवसे वरकन्न तीयँ सहदेवो॥ ३१

फारइ बद्धावणय परिहुट्ठो जेट्ठपुत्तजम्मे' व।
विहिय च तीयँ नाम अह नम्मयसुंदरी पसा॥ ३२ 20

कमसो परिवड्ढती जाया मीसेसवरकलाकुसला।
सरमंडलं च सव्व विजाए अह विसेसेण॥ ३३

पत्ता य जुव्वण सा असेसतरुणयणमणविमोहणय।
तत्तो परा पसिद्धी संजाया तीयँ सव्वत्थ॥ ३४

सोऊण तीयँ रूव रिसिदत्ता दुक्खिया विचिंतेइ। 25
'कह मह पुत्तस्स इमा होही भज्जा वरा कन्ना?॥ ३५

---

१ L कंठगयकमलया. २ L °सुयक ३ A B °जइ संजाया. ४ L एरिसी सरीरेण. ५ L किर. ६ L नम्मया° ७ L आसासि सुय A B आसासइ ८ L °वणियलोयसमेओ ९ C D विचिरंत १० L विअरंतो. ११ L नम्मया° १२ L °रेहिरा° १३ L °निवुइए. १४ C D निवेस. L निवेस १५ L संपुण्णडोहलाए. १६ L °नयरम्मि° १७ A B वणियलोगो° १८ L जायइ महा° १९ C D °वमेव २० L नियपुरे निवस° २१ L जिट्ठपुत्तजम्मेव.

केत्तिय कालेण तओ[1] नियनयरं जाइ नम्मयासहिओ ।
वणयाईपडिवत्तीपुव्वं पविसइ नियगेहे ॥ ४८

सासु-ससुराईणं पडिवत्तिं नम्मया विहेऊण ।
चिट्ठइ विणएण तओ अप्पवसं कुणइ सव्वं पि ॥ ४९

सो वि महेसरदत्तो धम्मम्मि दढो कयत्थमप्पाणं ।
ठाणेण तीऍ मन्नइ विलसइ नाणाविणोएहिं ॥ ५०

रिसिदत्ता वि पुणो वि हु पडिवज्जइ पुव्वसेवियं धम्मं ।
अह अन्नया कयाई सा नम्मयसुंदरी दिट्ठा ॥ ५१

आयरिसे निययमुहं पलोयमाणा गवक्खमारूढा ।
सा चिट्ठइ ता साहू तस्स तले कह वि संपत्तो ॥ ५२

सो तीऍ[1] पमायपरव्वसाएँ अनिरूविऊण परिखुहा ।
पिट्ठा मुणिस्स सीसे तो[1] कुविओ जंपए साहू ॥ ५३

'जेणाई पिट्ठाए भरिओ सव्वगपि(मि)" सो पावो ।
पियविप्पओगदुक्खं मह वयणेण समणुभवउ ॥ ५४

बहुविहदुक्खकिलिट्ठो पभूयकालं तु मज्झ वयणेण ।'
तं सोउ नम्मयसुंदरी वि सहस त्ति संभंता ॥ ५५

उयरिय गवक्खाओ निंदंती अप्पयं बहुपयारं[1] ।
गहिऊण अप्पयं पणमइ मुणिपवरपयतलम्मि ॥ ५६

परमेण विणएण खामिया – 'भयवं जगजियाणंद ! ।
संसारियसोक्खाइं" मा मह एयं पणासेहि ॥ ५७

पिट्ठी ! मह मयआ जीए पमायाउ एरिसं काउं ।
बहुविहदुक्खसमुद्दे खित्तो अइभीसणे अप्पा ॥ ५८

भंज पिय मामि ! मह भणइ" पाहुयाइं" मोक्खाइं" ।
भंज अह संजाया पाविट्ठाण वि" पावयरी ॥ ५९

तुम्हारिसा महायस ! हुंति दुहियाण उवरि परदुक्ख" ।
ता करुणारसभायर ! भयव ! अखमहि मइं मा य ॥' ६०

[illegible]

जम्हा अइसुकुमाल तुह देह न हु सहिस्सई कट्ठं ।
तम्हा देव-गुरूणं भत्तिपरा चिट्ठ अणुदियह ॥' ७४
तो भणइ इमा – 'पिययम ! मा जंपसु एरिसाई वयणाई ।
जम्हा उ तुज्झ विरहे न समत्था चिट्ठिउं अहयं' ॥ ७५
कइं पि तए समयं चलतीए अहव सुहावमय । 5
ता निच्छएण तुमए सह गंतव मए नाह ! ॥' ७६
चमेइमोहियमई पडिवज्जिय तो महसत्थेण ।
गतूण जलहितीरे मारूढा पहाणवहणेसु ॥ ७७
जा जाइ जलहिमज्झे पहाणअणुकूलवायजोगेण ।
ताव तहिं केणावि हु उग्गीय महुरसरेण ॥ ७८ 10
तं सोऊण बाला सरलक्खणजाणिया पहिट्ठमुही ।
जपइ – 'एसो पिययम ! गायई कसिणच्छवी पुरिसो ॥ ७९
अइथूलपाणिजुयलो बब्बरकेसो रणम्मि दुज्जेओ ।
उप्पयपेयच्छो साहस्सिओ य बत्तीसवारिसिओ' ॥ ८०
गुज्झम्मि य रत्तमसो इमस्स ऊरुम्मि सामला रेहा ।' 15
इय सोउं से भत्ता गयनेहो चिंतए एवं ॥ ८१
'नूण इमेण समयं वसइ इमा तो वियाणई एवं ।
ता निच्छएण असई एसा अच्चतपाविट्ठा ॥ ८२
आसि पुरा मह हियए महामई साविया इमा दइयाँ ।
किं तु कयं मसिकुच्चयंदाममिमीए कुलदुगे वि ॥ ८३ 20
ता किं खिवामि एय उयहिम्मि उयाहु मोडिउं गलयं ।
मारेमि मारहत्ती किं वा घाएमि छुरियाए ॥' ८४
इय चिंतइं जायेसो मडुविहमिच्छावियप्पपरिकलिओ ।
ता कूवयट्ठियनरो जंपइ – 'रे धरह वहणाई ॥ ८५
एसो रक्खसदीवो गिण्हह इह नीरइंधणाईय ।' 25
ते वि तयं पडिवज्जिय धरंति सत्थेण वहणाई ॥ ८६

---

१ L जम्हा. २ L °म्हा हु त° ३ O D °ई असमत्था. ४ L चिट्ठिउं अहियं ५ L सरलक्खणजाणिया पहट्ठमुही ६ L जंपइ पिययम गीयइ एसो जंपइ कसिण° ७ L अइथूल° ८ L बब्बरकेसो रणम्मि दुज्जेओ ९ L बत्तसवरिसो. १ L °वारसिओ. ११ L गुज्झम्मि रत्त १२ L ऊरुम्मि १३ L भत्ता. १४ L °नेहो १५ L इमा विया° १६ L दइया १७ L °गुच्छ° १८ L उयहिम्मि १९ L मारेमे २ L चिंतिय २१ L ता कूवयट्ठियपुरिसो. २२ L गिण्हह २३ L °धणाइ

पेच्छंति[1] तयं दीवं गिण्हंती[2] इंपयादय सव ।
सो वि महेसरदत्तो मायाए वंचए एव ॥ ८७

'अयरमणीओ'[3] दीवो सुंदरि ! ता उवरिछु पेच्छामो[4] ।'
सा वि परितुट्ठचित्ता तेण समं ममइ दीवम्मि ॥ ८८

अन्नन्नेसु[5] वणेसुं कमेण[6] पिच्छंति सरवरं एक ।
उत्तुंगपालिसंठियनाणाविहतरुवरसणाहं ॥ ८९

बहुसच्छसीयलसीयलच्छजलपुण्णं[7] सयलजलयरसणाहं ।
दट्ठूण तयं मज्जंति दो वि तत्तो वि उत्तरिउ ॥ ९०

आ वणमहम्मेसु[8] ममंति ता सव्वत्तिं[9] एमत्य ।
रमणीयलयाहरयं तं मज्झ करिय सत्थरयं ॥ ९१

दोण्णि वि सुवण्णयाई खणेणं निरावसं गया वाला ।
तो चिंतइ से भत्ता निग्घिणहियओ महा 'एत्थं ॥ ९२

मुंचामि इमं जेणं मरइ सयं चेव एगिया रण्णे[10] ।'
इय चिंतिऊण सणियं[11] सणियं उस्सक्किउं[12] थाइ ॥ ९३

वहम्मेसु भिक्खतो 'माइक्खो' उववनउवसरेहिं ।
सत्थिवाहयरीहिं पुट्ठो – 'रूयसि[13] किमत्थं ?' ति सो[14] भणइ ॥ ९४

'सा मम भज्जा माउय ! खद्धा घोरेण खुहियरक्खसेण ।
तं दट्ठुं भयभीओ भहमेत्थ पलाइउं[15] पत्तो ॥ ९५

तो एइ पहाइ मा एत्थ समागमिस्सइ रक्खसो ।'
ते वि तओ भयभीया एंति तह वि पहमाइं ॥ ९६

सो वि हु आहाराई दुक्खभंतो न भुंजइ खणेण ।
रोवेइ विसमइ सहइ उरसिरमाईणि[16] मायाए ॥ ९७

हियएणं पुण तुट्ठो ' चिंतइ नट्ठ सोहणं इम जायं ।
जं लोगज्जवाओ[17] वि हु परिहरिओ एवविहियम्मि ॥ ९८

---

1 L पिच्छंति. 2 L गिण्हती 3 L °रमणीओ 4 L पिच्छामो. 5 L अन्नोन्नेसु 6 L कमेण. 7 C D बहुसच्छ° 8 L °सियजलपुण्णं° 9 L वाव 10 वणमहम्मेसु 11 L सव्वत्ति. 11 L रूयसि सुयंति जाएणं. Blank space is found in A B for the lines from भिक्खंतो (inclusive) upto the letters पेमे (inclusive) of खेमेण° in verse 11. 12 L रूयल 13 L एगया रणे 14 L सणियं 15 L ओस्सक्किउं 16 L सक्किउं. 1 L ति सो य° 1 L पुट्ठिय° 17 L भयभीय पलाइउं. 1 दुक्खभंतो न भुंजइ 21 C D एइ भिक° 21 L °माईणि. 22 L हियएणं परितुट्ठो 23 L जं लोगअववाओ

सत्थिञ्जएहिं तत्तो पडिबोहिय मोइओ[1] इमो वि तओ ।
अरमइया कत्थेणं संजाओ विगयसोगो[2] व ॥ ९९

पत्ता य जवणदीवं सोहसि वि[3] हियपयंछियाओ वि ।
जाओ अहिओ लाभो कमेण गिण्हित्तु पडिपमिए ॥ १००

वलिऊण खेमेण पत्ता सव्वे वि कुवचंदम्मि[4] ।
सो वि महेसरदत्तो अच्छइ सयणाण रोवंतो ॥ १०१

जह—'मह दइया खद्धा रक्खसदीवम्मि घोररक्खेण ।'
ते वि तओ दुक्खत्ता झूरंति सीसे मयगकिच्चं[5] ॥ १०२

परिणाविओ य एसो अण्ण कुलबालियं अइसुरूवं[6] ।
तीए य बद्धनेहो भुंजइ भोगे अणण्णसमे[7] ॥ १०३ 10

एत्तो[8] वि नम्मयासुंदरी वि जा उट्ठियी खणखेम ।
तो न हु पिच्छेइ कंत तत्थ तओ चिंतए एवं ॥ १०४

'नूणं परिहासेणं छुक्को[9] न हु होहिई मह दइओ ।'
वाहरइ तओ—'पियपम ! देसु मई[10] दसणं सिग्घं ॥ १०५

मा कुण बहुपरिहासं बाढं उत्तम्मए मई हिययं ।' 15
जा एइ न एव वि[11] हु सासंका उट्ठिउं[12] ताव ॥ १०६

परिमग्गइ सव्वओ तह वि अपिच्छंतियी सरे जाइ ।
भमेइ य वणविवरेसुं[13] कुणमाणी बहुविहे सद्दे ॥ १०७

'हा नाह ! ममं मोत्तुं[14] दुहियमणाहं कहिं गओ इण्हि[15] ।
सोऊणं पडिसद्द[16] धावइ तो[17] उम्मुही बाला ॥ १०८ 20

विन्नती कट्ठेरकंटएहिं पाएसु गलियबहुरुहिरोहा ।
गिरिविवरे ममिऊण पुणो वि सा जाइ उयहितडे ॥ १०९

पल्लंतम्मि परो दट्ठूणं सीयं वारिसमवत्थं ।
पडिकलंठं अपयंतो उच्चायं व दूरमोसरिओ[18] ॥ ११०

---

१ L °बोहिया मायओ २ L °योग व्व ३ L वच्चे वि हु हिय° ४ L चिम्मिउ. ५ L °चंदम्मि. ६ L कुव्वंति मोसंसमयकिच्चं ७ L वरं. ८ L सरूवं. ९ L भोए अणयसमे १० A B एत्तो ११ L छक्किा. १२ L पिच्छइ १३ A B सिरओ L सिरओ १४ C D न हु हो° १५ L देहि ममं १६ L उत्तम्मए. १७ L एवं वि १८ L उट्ठिया १९ L अपिच्छंतया २० L भमइ २१ A B °विवरेसु २२ L मई मुत्तु- २३ L इण्हि २४ A B पडिसद्दे. २५ L धाइ तओ उम्मुही २६ L °उम्मुह° २७ L °महीरुहि° २८ C D कहए २९ L °मोसरिओ.

कम १४

री रे जीव! अलक्खण! मुहायें किं खिज्जसे तुम एव।
न असमभोवयं तं कओ हु पणासिउं सक्को ॥ १२३

रे जीव! सया मुणिणा आयड्ढ वं तयं इमं मण्णे।
ता सम्मभावणाए सहसु तय किं न रुम्मेयं? ॥' १२४

इय चिंतिऊण तो सा गंतूण सरोवरम्मि नियदेहं। 5
पक्खालिय संठाविय ठवण तो सदई दवे ॥ १२५

काऊण पाणवित्तिं फलेहिं तो गिरिगुहाये मज्झम्मि।
मट्टियमयजिणपडिमं काउ वंदेइ भत्तीए ॥ १२६

पूएई वरकुसुमेहिं कुणइ बलिं बहुफलेहिं पक्केहिं।
रोमंचंचियदेहा संथुणइ मणोहरगिराए ॥ १२७ 10

अवि य–

'जय संसारमहोयहिनिवुड्डसत्तूण तारणतरंड!।
जय भवभीयजणाणं सरणय! जिणनाह! जगपणय! ॥ १२८

जय दुहियाण दुहहर! रागदोसारिविरियनिद्दलण!।
जय मोहमल्लसूरण! जय चिंतामणि! जिणनाह! ॥ १२९ 15

जय निद्दापरिवज्जिय! छुहापिवासाजरामयविमुक्क!।
भयमायासोगवज्जिय! गयजम्मणमरण! जय नाह! ॥ १३०

जय हिंसाविम्हय! अपमाय! देव! सासयसुहम्मि संपत्त!।
सिवपुरपवेससरणं कुणसु दयं मज्झ दुहियाए ॥' १३१

इय जिणपुरओ वीए सुनिकाइयकम्मसणुहवतीए। 20
जा जाइ कोइ कालो ता चिंतइ अमया एसा ॥ १३२

'जइ कइ वि मरहयास गमणं मह होइ पुण्णजोएण।
तो सव्वसंगचाय काऊण वय गहिस्सामि ॥' १३३

इय चिंतिऊण रयणायरस्स तीरम्मि उब्भिय वीए।
चिंधं महामरंद व पयडइ भिन्नवहणं ति ॥ १३४ 25

---

१ L मुहाइ २ L °भोवयं ३ L °सिउं ४ L जओ ५ L समया° ६ L तहसु ७ L रुम्मेयं ८ L तो देहए दवे ९ L °गुहाए १० L मट्टियजिणबिंब काउं देइ ११ L पूरइ १२ L कुणइ बहुमण्णिमरविसमेहिं १३ L भवभीय° १४ L °दोसारि° १५ A D चिंतामण १६ L भयवेममोग° १७ C D °भयपरिमुक्क L °भयजरामोह १८ L हिंसाविं° १९ A B °जणाए, २ L जो वि कालो २१ L गुड° २२ L चिंधं महामरंद २३ A B °महत्तिरं

जो य इह पोयसामी आमसिद्दी सो य अहुसहस्सं तु ।
दीणाराण देही तुज्झं[1] मज्झ प्पसाएणं[2] ॥' १४७

एसा तत्थ ववत्था वेसाणं अत्थि रायणा समयं ।
हरिणीए तओ वेडी पट्ठविया वीरदासस्स ॥ १४८

पासम्मि तीए भणिओ सो जह—'वाहरइ हरिणी(णि)या[3] तुम्मे ।'[5]
तेण वि सा पडिभणिया—'अह वि हु रूवाइगुणकलिया[6] ॥ १४९

अन्मित्थी तह वि अहं मुआमि न सजिउ नियकलत्तं ।'
तीए वि तओ भणिय—'आगतव्वं[7] सए तह वि'[8] ॥ १५०

तो जाणिय भायत्थो अप्पइ दीणारसहसमट्ठियं ।
सा वि तय घेतूणं[9] वच्चइ हरिणीए[10] पासम्मि ॥ १५१ 10

सा तं दट्ठु जंपइ—'किमेइणा एउ पवियपुत्तो चि[11] ।
सा वि पुणो गंतूण अक्खइ हरिणीए[12] जं भणियं ॥ १५२

तं सुणियं वीरदासो चिंतइ हियएण 'किं मह इमाओ ।
काहिंति[13] जओ सीलं भंजेमि[14] न पलयकाले वि ॥ १५३

गच्छामि ताव तहिय पच्छा काहामि जं जहाजुत्त[15] ।' 15
इय चिंतिऊण गच्छइ तीए भवण अइसुरम्म ॥ १५४

तो महुरमंमुलाहिं वियड्ढमणिईहिं[16] साणुरागाहिं ।
सा जपइ सवियारं तह वि न सो चलइ मेरु व ॥ १५५

एत्थंतरम्मि कण्णे[17] कहिय हरिणीए[18] तीए चेडीए ।
जह—'सामिणि ! एयघरे अच्छइ महिला अणण्णसमा ॥ १५६ 20

सा जइ कहिं वि तुम्ह आयत्तं कुणइ तो हु[19] रयणाणं[20] ।
पूराइ निस्संदेह तुह गहं किं च बहुएण ॥ १५७

जम्हा हु[21] रूवजोव्वणलावण्णगुणेहिं तीए सारिच्छा ।
दीसइ न मयलोए[1] व सोउं हरिणिया तुट्ठा ॥ १५८

---

१ L जो इह पोयसामी° २ L तुज्झं. ३ L पसाएण. ४ L रायणा. ५ A B णिणिया. ६ L रूवाइगुणेहि° ७ L आगंतव्वं ८ L °मि तयभणियं ९ L भणियं गवयं 1 C D वए वह कि. ११ L °अइसयम १२ L चित्तूणं. १३ L हरिणीए १४ L वणीयपुत्त १५ L हरिणीय १६ L सुणिय. १७ L काहिंति. १८ L भुंजामि १९ L जहाजुत्तं २ L वियड्ढमणिईहि साणु° २१ L कण्णे° २२ L कहे. २३ L हरिणीहिं तीए. २४ L एयघरे अच्छइ २५ L अच्छइ २६ A B तुम्ह आयत्तं कुणइ तो ह रय २७ L रयणाइ २८ A B कि तव बहु° २९ C D जम्हा व १ L °तुज्झगवाए°

सोऊण तय ताणि[1] वि दुक्खयाइं रुयति अइकलुणं ।
एत्तो य नम्मयाए व चित्त त निसामेह ॥　　　१७२

नाऊण वीरदासं गयं तओ हरिणियाएं सा वुत्ता ।
'भद्दे ! कुण वेसत्तं[2] मायसु विविहाइं सोक्खाइं[3] ॥　　　१७३

सररसरूवगंधे फासे भंजुहवसु मणहरे निच्चं ।
मह घरवसा एसा सव्वा वि हु तुज्झत्तणिय'[4] त्ति ॥　　　१७४

तं[5] सोउं नम्मयसुंदरी वि[6] विहुणिसु करयले दो वि ।
पभणइ – 'मा भणं भद्दे ! कुलसीलविरूमण वयणं ॥'[7]　　　१७५

तो रुसिऊणं हरिणी ताडावइ त कसप्पहारेहिं[8] ।
फुट्टियकिसुयसरिसा खणेण जाया तओ एसा ॥　　　१७६

'अज्ज वि न किंचि नट्ठं पडिवज्जसु मज्झ संतियं वयणं ।'[9]
इय मेहरीए भणीए भणइ इमा – 'कुणसु ज मुणसि ॥'　　　१७७

गाढयरं रुसिऊणं ताव पयच्छइ[10] तिक्खदुक्खाइं ।
सा वेसा ता इयरी सुमरइ परमिट्ठिवरमंत ॥　　　१७८

तस्स पभावेण तओ तर्हि[11] चिय पाणेहिं हरिणियी[12] मुक्का ।
रण्णो निवेइयम्मी[13] तम्मरणे भणइ तो राया ॥　　　१७९

'किंचि महत्व मण्ण'[14] छड्डाणे ठवेइं गुणगणमणग्घ ।
भो मंति ! ममाऽऽणयि(वि)[15] सिग्घ संपाडसु इमं'ति ॥　　　१८०

नरवइणो आणाए मंती वा तत्थ जाइ ता भइणी ।
दट्ठूण नम्मय सो जायं हरिसिओ [16]चित्ते ॥　　　१८१

जंपइ – 'मेहरियपय भद्दे ! तुह देमि रायवयणेणं ।'
नीं वि तयं पडिवज्जई परिभाविय निग्गमोवाय ॥　　　१८२

ठविऊण मइरि त मंती वि हु जाइ निययठाणम्मि ।
सा वि हु हरिणीदव्वं वेसाण देइ परितुट्ठा ॥　　　१८३

तं अच्छिय केणावि हु रण्णो[17] तेणावि अप्पिय एयं ।
'आणेह तय पन्त्य' जंपाण जाइ सो रम्म ॥　　　१८४

---

१ L ताण　२ L भद्देण कुण वसत्तं　३ C D भिविहाणि सोक्खाणि. L विवहाई सुक्खाई　४ L °त्तणय त्ति　५ L ता सोउ　६ L °सुंदरी वि वि　७ L भणइ भद्दे.
८ L ताडावइ कसप्पहारेहिं　९ L भणइ मा कुण°　१० L पयच्छइ　११ L वेसा ता इयरी.
१२ L तओ तह वि　१३ L हरिणीया.　१४ L रन्ना निवेइयम्मी　१५ L महं　१६ C D इयाणु　१७ L संति महग्घ　१८ L जणवइणो　१९ L मंती वा तत्थ　२ L भइणी,
११ L निगो हिओ　२१ L वा वि　२२ L परितुट्ठा　२३ L रन्नो

आरोविऊण तम्मि वा पुरिसा निंति नयरमज्झेण ।
ता चिंतइ 'मह सील को रक्खइ जीवमाणीए ॥ १८५

को पुण इत्थ उवाओ' चिंतंती नियइ[1] एगठाणम्मि ।
मइराहियदुम्मिगंधं[2] पवहंत गेहनिद्धमण ॥ १८६

त पेच्छिऊण [3]भणइ – 'भो भो ! बाढं तिसाइया अहयं[4] ।'
तो मेल्लावेइ वाम मालवाई दरिसिउ विणयं[5] ॥ १८७

जा आणंति जल ते ताव इमा उत्तरिउ जाणाओ ।
सव्वंगियमप्पाण चिक्खिल्ललेण[6] विलिंपइ ॥ १८८

पियइ तयं दुग्गंधं[7] नीरं अमयं[8] ति मण्णिउं बाला ।
लोलेइ महीए पसु[9] रिंवइ सिरे देइ अक्कोसे[10] ॥ १८९

पमणइ य – 'अहो[11] लोया ! अहयं इत्थाविया मम निर्वेइ ।'
गायइ नच्चइ रोवइ भयभीया सीलभंगस्स ॥ १९०

पुरिसेहिं तयं सिट्ठं निवस्स सो भणिउं[12] गई लग्ग ।
पेसेइ मंत-तंतप्पवाइणो[13] तेहिं किरियाए ॥ १९१

आढत्ताए बाले पढाविउ[14] लोयणे फुरुफुरंती[15] ।
अक्कोसिऊणं गाढं अहियअरगाढ पवंचेइ ॥ १९२

तो तेहिं परिचत्ता हिंडइ नयरस्स मज्झयारम्मि ।
डिंभेहिं परियरिया इम्मंती कट्ठलिट्ठीहिं[16] ॥ १९३

इय एवमाइ सा कयइंम्माइदंसणं पयासेइ ।
सीलस्स रक्खणत्थ धम्म हियएण सरमाणी ॥ १९४

अह अन्नया कयाई बहुविहलोएहिं परिवुडा बाला ।
निम्मज्जमाणिपवंतण् मायइ जिणरासयं रम्मं[17] ॥ १९५

तं दट्ठुं जिणदेवो पुच्छइ[18] – 'को तं महो सि विमसथो ।'
सा भणइ – 'सत्तागारं तेण न साहेमि नियनामं ॥' १९६

---

1 L कम्मि. 2 L मिलइ एग° 3 L मइराहियदुग्गंधं 4 L °[illegible]. 5 L तं दट्ठूणिय मेरुइ वा जो बाढं 6 L [illegible]. 7 L तो मिंचावइ 8 L [illegible] 9 A B °[illegible]. 10 L चिक्खिल्लेणं. 11 L दुग्गंध 12 L A B °[illegible]. 13 L लोलइ महीए पसु 14 L अक्कोसे. 15 L भणइ 16 L °मिव 17 L [illegible]. 18 L °[illegible] तो मे वर्ण गई. 19 L °मंततंतवाइणो 20 L [illegible] 21 L फुरुफुरंती. 22 A B अक्कोसि° 23 L [illegible] 24 L सव्वं [illegible]° 25 A B °[illegible] 26 L °[illegible]° 27 A B गायइ [illegible] रम्मं 28 L °[illegible] पभणइ

बीयम्मि दिणे उज्जाणसंमुहं जाव चल्लिया एसा ।
तो हिमाईलोगो नियचिउं[1] जाइ सट्ठाणे ॥ १९७

सा वि हु पल्लंकठिया चढइ इवे विहीएँ जा ताव[3] ।
कत्तो वि हु जिणदेवो समागओ तो तप दहुं ॥ १९८

वंदामो त्ति भणिया पणमइ सीसेण सा वि चरसड्ढं[4] । 5
नाऊणं नियचरियं अक्खइ सव्वं[5] अहावत्तं ॥ १९९

तो चवइ जिणदेवो—'वच्छे ! तुह गवेसणत्थमायाओ ।
मरुयच्छाओ अहयं पट्ठविओ वीरदासेण ॥ २००

अम्हा सो मह मित्तो पाणपिओ पेसिओ अह तेण ।
ता परिचयसु विसायं सव्वं पि हु सुंदरं कार्हं ॥ २०१ 10

पर किंतु इहमग्गे पडगसहस्सं पयस्स मेह वयरं ।
न पिहइ त तुमए उउडपहारेहिं मेचन्न[10] ॥' २०२

इय संकेयं[11] काउं दोन्नि[12] वि पविसंति नयरमज्झम्मि ।
विहिय[13] य बीयदिवसे सव्व मं मतिय आसि ॥ २०३

तो निवइ[14] हक्कारिय जिणदेव[15] भणइ—'हा कइ तुज्झ । 15
हाणी महामहला विहिया एयाएँ[16] पावाए ॥ २०४

ता रयणायरपारे अम्हंअरोहेण खिवसु एय ति[18] ।
जेम्मिरयं[19] अच्छंती कुणइ अणत्थंतरे बहुए ॥' २०५

आएसो[20] त्ति भणित्ता नियपल्लावियं नेइ नियपैठाणम्मि ।
छोडिया ण्हावेउं[22] परिहाविय मोइय[23] विहिणा ॥ २०६ 20

बहणे चडाविऊण पत्तो खेमेण पुण वि मरुयच्छे ।
"पविसित्तु[24] नियपगेहे आणावइ नम्मयपुरम्मि ॥ २०७

जा ते संवरिऊण[25] चलंति ता एइ सो तयं पेच्छं[26] ।
जणयाई दहूण कंठविलग्गा रुयइ तो सा ॥ २०८

तो उसमसेण-सहदेव-वीरदासाइ बंधवा सवे[28] ।
परिऊण बालयं तीसे रोयंति[29] अइकलुणं ॥ २०९ 25

---

१ L हिमाइल्लेगो नियचिय. २ L हु पल्लंकठिया. ३ L 'य ता ताव ४ L चैराग्र [illegible]
५ L 'सर्व. ६ L सर्व ७ L गवेस' ८ L बहु ९ L 'म्म [illegible] १० L मित्तं
११ L कीडं १२ L दुन्नि १३ A B विहियं १४ L निग्गई १५ L जिणदेवो.
१६ A B एयाए १७ L रयणायरपार [illegible] १८ ति is not found in L. १९ L जेम्मिरयं.
२० L आएसु २१ L नियगमम्मि २२ L ण्हावेउं २३ C D मोइउं २४ L अविसित्तु.
२५ L संवरिऊणं. २६ L पेच्छं २७ C D लो. २८ L सवे २९ C D रोवंति.

पुत्त य तेहिं सद्धं वा सा साहेइ नियपुत्तं ।
सुणमाणाणं दुक्खं[1] सहाण वि लक्खण[2] वायं ॥ २१०

अह तीए संगमम्मी विहिया पूया जिणिंदचंदाणं ।
सम्माणिओ य संघो दिण्णाणि[3] महंतदाणाणि ॥ २११

5 विहिय बद्धावणय विम्हयजणणं समत्थलोयाणं ।
जिणदेवसावगो वि हु जाइ पुणो निययनयरम्मि ॥ २१२

जा मम्मणसुंदरिसंगमम्मि दिवसा सुहेण वोलिंति ।
अह वि तहिं तो पत्तो विहरंतो साहुपरियरिओ ॥ २१३

मोरियवंससिरोमणिसंपइनरनाहनमियपयकमलो ।
10 दसपुव्वधरो सिरिथूलभद्दसीसो महुरवामी ॥ २१४

तियसासुरवंदणिओ भय(इ)सयनासणेण पयडियपयत्थो ।
महारविंदभाणू सूरी सिरिअज्जहत्थि त्ति ॥ २१५

तो नाऊणं सूरिं समागयं तस्स वंदणट्ठाए ।
मणिभरनिब्भराइं सव्वाणि वि[11] जंति उज्जाणे ॥ २१६

15 वंदित्तु तओ[12] सूरिं नेवासमम्मि सन्निविट्ठाइं ।
सूरी वि ताण धम्मं कहेइ जिणदेसियं रम्मं[13] ॥ २१७

जह–'एत्थं संसारे सकम्मफलभोयणो[14] इमे जीवा ।
पाविंति[15] सुहं दुक्खं जं विहियं अन्नजम्मम्मि ॥' २१८

तं सुणिय वीरदासो पुच्छइ करसंपुडं सिरे काउं ।
20 'भयवं! किमन्नजम्मे विहियं मइ माइपूयाए ॥ २१९

जेणं सीलजुया वि हु पत्ता एयारिसं महादुक्खं ।'
सूरी वि भणइ–'सावय! जं पुट्ठ तं निसामेह[16] ॥ २२०

अत्थि इह भरहवासे मज्झिमखंडम्मि पवमो विंझो ।
उत्तुंगसिहरसंचयसमाउलो खलियरविपसरो[17] ॥ २२१

25 तत्तो इमा पसूया महानई नम्मया अइपवेगा ।
तीए य अहिट्ठायगदेवी वि हु नम्मया अत्थि ॥ २२२

---

1 L °माणाणं [illegible]. 2 C D लक्खणे 3 L दिण्णाणि. 4 L [illegible]. 5 L °संतोस. 6 L वि वाहि तो पत्तो * This verse does not occur in A B C D. 8 A B °ओ [illegible] C D °ओ [illegible] 9 L °[illegible] 10 L °[illegible]. 11 A B सव्वाइं जंति. L सव्वाण वि. 12 L तउ 13 L [illegible] 14 L धम्मं 15 L °भोयणो. 16 L पार्विति. 17 L °[illegible] 18 L [illegible] 19 A B [illegible] 20 L °[illegible]. 21 L [illegible] 22 L °[illegible]

सा मिच्छत्तोवहया नम्मयवरदसंठियं महासत्त ।
धम्मरुइअणगारं दट्ठूण कुणइ उवसग्गे ॥　　　२२३

नाणाविहे सुघोरे निच्चलचित्त मुणिं मुणेऊण ।
उवसंता संजाया सम्मत्तधरा तओ' चविउं ॥　　　२२४

एसा हु नम्मयासुंदरि त्ति जाया सुया उ तुम्हाण ।
पुव्वभवब्भासेण य सईए नम्मया इट्ठा ॥　　　२२५

उ त्त्वयो सो साहू पल्लीकओ दुट्ठचित्तनुयाए ।
तं सुनिकाइयकम्मं मुच पयाई दुचिसइ ॥'　　　२२६

सो सोउं नियचरियं सजाय तीए जाइसरणं तु ।
संवेगगयाए तओ गहिया दिक्खा गुरुसमीवे ॥　　　२२७

दुक्करतवनिरयाए ओहिण्णाणं इमीए उप्पन्नं ।
तत्तो पवत्तिणित्ते ठविया सूरीहिं जोग्ग त्ति ॥　　　२२८

विहरंती य कमेणं संपत्ता कूवचंदनगरम्मि ।
रिसिदत्ताए गेहे वसहिं मग्गिउ उत्तरिया ॥　　　२२९

बहुसाहुणीहिं सहिया कहइ य धम्मं जिणिंदपण्णत्तं ।
सुणइ महेसरदत्तो रिसिदत्तासहिओ निच्च ॥　　　२३०

अह अण्णदिणे दियम्मी संवेगत्थ इमस्स सा गुणइ ।
सरमंडल भणेसं जहा इमेयारिसमरेण ॥　　　२३१

होइ नरो इयचओ तहा इमेयारिसेण इयवरिमो ।
एवंविहेणं य पुणो इयंआउ होइ अचियण्णो ॥　　　२३२

एयविहमरेण होइ मओ गु सदसमायम्मि ।
एय विहम य पुणो रहा उत्त(रु)म्मि संभवइ ॥　　　२३३

एमाइ भणे पि हु मा सरलक्खणं सुणऊण ।
सो हु महेसरदत्तो चित्तम्मि विभावए एवं ॥　　　२३४

'नूण मह दइयाए सरलक्खणजाणियाए आइट्ठो' ।
गुज्झपएसम्मि मओ रहा त्ति य तस्सेव पुरिसस्स ॥'　　　२३५

१ L °त्ती तओ　२ L °त्था य　३ L [illegible]　४ L [illegible] पुणि　५ L [illegible]
६ L [illegible]　७ L [illegible]　८ L [illegible]　९ L [illegible]　१० L [illegible]
११ L [illegible]　१२ L जोग त्ति　१३ L [illegible]　१४ L [illegible]
१५ [illegible]　१६ L [illegible]　१७ L [illegible]　१८ L [illegible]　१९ L [illegible]
२० [illegible]　२१ L [illegible]　२२ L [illegible]

तो विलविउं[1] पयत्तो—'हा हा अइनिग्घिणो अहं पावो[2]' ।
कूरो अणज्जचरिओ अविचारियकज्जकारि त्ति ॥ २३६

जेण मए सा बाला सरलसहावभाविया अरण्णम्मि ।
एगागिणी विमुक्का ईसावसविनडियमणेणं ॥ २३७

करयलं चररयण हारविय निच्छयं अपुण्णेणं ।
मरणेण विणा सुद्धी नत्थि महं किं च बहुएण ॥' २३८

इय विलवंतं सोउं भणइ इमा नम्मया—'अहं सा ठं ।'
कहइ य तं अइघत्तं नीसेसं अप्पणो चरियं ॥ २३९

'तो संपइ मह माया तुमं अजो कुणसु संजमं विउलं ।'
सो वि तयं सोऊणं खामइ परमेण विणएण ॥ २४०

'खमसु तयं जं तइया अइनिद्दयकूरचित्तभावेण ।
घोरम्मि दुहसमुद्दे पक्खित्ता सुद्धसीला वि ॥' २४१

तो भणइ नम्मयासुंदरी वि—'संतप्प मा तुमं एवं ।
असुमविवयम्मे कम्मे निमित्तमित्तं तुमं जाओ ॥' २४२

भणइ तओ महेसरदत्तो—'गिण्हामि' संजमं इण्हि" ।
नीसेसकम्ममहणं जागच्छइ जो वि मह सूरी ॥' २४३

एत्थंतरम्मि पत्तो अज्जसुहत्थीगुरू तओ एसो ।
तस्स समासे गिण्हेइ रिसिदत्तासंजुओ दिक्खं ॥ २४४

कालेण तयं दोण्णि वि पवरविमाणम्मि सुरवरा जाया ।
तत्तो वि चुया कमसो मोक्खं" जाहिंति गयदुक्खं ॥ २४५

नम्मयसुंदरिया वि हु" नियमं नाणित्ता अट्ठमस्स पज्जंते ।
सिरियं विहिणाऽणसणं ठियसो ठियसासम्मे" जाया ॥ २४६

तत्तो चविउं होही अवरविदेहे मणोहरो नाम ।
रायसुओ गुणकलिओ मोत्तुं" रज्जं तहिं विउलं ॥ २४७

काऊण संजमसिरिं उप्पाडित्ता य केवलं नाणं ।
संबोहिऊण भविए गच्छिस्सइ सासयं ठाणं ॥ २४८

---

1 L लो विलविउं 2 A B °णो महापावो 3 L चरणम्मि 4 L °भवीए° 5 L विविहं कवुवेणं 6 A B किं [illegible] C D किं च [illegible] [illegible] L °णा सवंबाओ. 8 L च तं [illegible] 9 C D जो 10 L गिण्हामि 11 L इण्हिं 12 L गिण्हइ 13 L [illegible] 14 L मुक्खं 15 L वि हु नियं [illegible] 16 L [illegible] 17 L [illegible] 18 L मुत्तुं 19 L [illegible]

इय पवरसईए नम्मयासुदरीए
  चरियमइपसत्थं कारय निम्मुईए ।
हरिजणयसुहिंहीमज्झयाराउ किंची
  *लिहियमणुगुणाणं देउ सोक्खं[1] जणाणं ॥ २४१

॥ इति[2] नर्मदासुदरीकथानकं समाप्तमिति[3] ॥ † 5

---

[1] L सुक्खं. [2] इति is not found L. [3] L कथानकं समाप्तं. * In the margin of L रचितम् is written a gloss on लिहियम्. † Following words in different handwriting are written in L at the end: नर्मदासुंदरीकथा श्रीमेरुसमीपेमाणकागारे इष्य सु मोहनमागसमीमानवसागरात्प्राप्त् सं १२ ५ वर्षे ॥

पच्चक्खुकूड बीरबयमुह कय बोमहेज देवीए दुसह । १९
मच्छुद्दिउ पमावइ सा वि साहु मुणि कहिय धम्मि तसु बोहिकाहु । २०
सा देवि चविवि सहदेवपुत्त हुय धम्मसुन्दरि गुणिहिं गरुय । २१
पडिवक्खिडि तसु हुउ पइविओगु अणुहूयि सीलप्पोहइणपओगु" । २२
इय निसुणवि निहुणि[वि भव]विरत्त चारित्तु लेइ नम्मय पवित्त । २३
दुक्कारसहस्पयम्मइरेण सा ठविय महत्तरपदि कमेण । २४
कुवलयविमाणह्णे सह मुणिवि विहरंत पत्त पुरि कूवचन्दि[1] । २५
कइ दीउ(ह) मोहेसरु निम्मिपत्तु सरलक्खणेण निरेह मत्तु । २६
'जाणिअइ सत्यपमाणि सत्तु तउ नमया जाणिउ पुरिसवत्तु । २७
मई दुट्ठि निकिट्ठि सुसील चत्त कत्ता तसु पावइ दिव्व पुत्त" । २८
नम्मयसुयपक्खिजवि चरणु लेइ रिसिदत्तसहिउ सो तसु तवेइ । २९
मारावविवि पणसणु समि जति तिणि वि मणुयसु सुइ मणुरवति । ३०

॥ घत्ता ॥

कल्लाणह कुलहर होभउ जयकर नमयासुंदरिसीयि वर ।
मच्छरवमि सहइ दसमी अपगमइ पहउ सुवसुइ जणपकर ॥ ३१

सरिया वि सीलसुन्दा बीसे सुकयाममण सियलोम ।
सिवाइ वीरगुरुस एय नम्मया जया मज्झहुरा ॥
तेरहसय-मउबीसे वरिसे सिरिजिणपहुप्पसायत्थे ।
एसा सन्धी विहिया जिमिमवयणाणुसारेण ॥

॥ श्रीनर्मदासुन्दरीमहासतीसन्धी[:] समाप्ता ॥

* *
*

---

१ बूप २ कूविपमि. ३ अडुरल. ४ दीम ५ 'कमार.

प्राचीन गुजराती गद्यमय

नर्मदासुन्दरी कथा

॥ ६० ॥ हिव नर्मदासुंदरीनी कथा कहइ ॥ एह जि जंबूद्वीपमाहि वर्धमानपुर नगर । तिहां संप्रति राजा राज करइ । तीणइ नगरि ऋषभ सार्थवाह वसइ । तेहनी भार्या वीरमती । तेहनइ बि(बि) पुत्र(त्र) एक सहदेव १ बीजउ वीरदास २ । अनइ ऋषिदत्ता एहवइ नामि पुत्री महारूपवंति यौवनावस्थाइं आवी । तेतलइ घणा महर्द्धिक व्यवहारीया मांगइ । पणि श्रेष्ठि मिथ्यात्वीनइ आपइ नही । इसइ महर्द्धिक रुद्रदत्त नामि वणिगपुत्र धनिव्यसनइ हेति रूपचंद्रपुरहूंतउ तीणइ नगरि आविउ । पणि ते कुबेरदत्त मित्रनइं घरि आवी ऊतरिओ । अनेक व्यवसाय करइ । आपणा घरनी रीतिइं तिहां रहइ । अन्यदा ऋषिदत्ता सखीइं परिवरी गारवइ रमती दीठी । हिव रुद्रदत्त मित्र आगलि कहइ "ए कन्या कुमारिका छइ किना मांगी छइ" । तिवारइ कुबेरदत्त कहइ "ए कुमारिका छइ । पणि ए श्रेष्ठि जिनधर्म टाली अनेरा कुणहीनइ न आपइ" । तिवारइं रुद्र मिथ्यात्वीइं थकउ ऋषिदत्तानइ लोभइं कपटश्राव[क] थई जैनधर्म पडिवजिउ । कोइ माया करइं गहडाइ विवेकिना चित्त आवर्जियइ । पछइ ऋषभसेन सार्थवाहि श्रावक जाणी आपणी पुत्री ऋषिदत्ता रुद्रदत्तनइ दीधी । तिहां पाणिग्रहण महोत्सव हूओ । केतला-एक मास तिहां अतिक्रम्या । तिसइ रुद्रदत्त ससुरानइं पूछी प्रिया सहित आपणइ नगरि आविउ । तिसइ रुद्रदत्तनउ पिता बहूनइ आगमनि महाहर्षि(र्षि)ओ । इम परि रहतां रुद्रदत्ति जिनधर्म छांडिउ । ऋषिदत्ताइं पणि भर्त्तारना संसर्ग लगइ जिनधर्म छांडिउ । क्रमिइ महेश्वरदत्त पुत्र ऋषिदत्ताइं जन्मिउ । क्रमिइं सर्व कला अभ्यसी मोटउ हूओ ।

इसइ ऋषिदत्तानउ भाउ बांधव सहदेव भार्या सुंदरी सहित सुखिइं रहइ छइ । पहण्य थिमि सुंदरीइं अपूर्व सउणउ देखिउ । तेहनइ पोषि आवास करिवा लागी । क्रमिइ ऋषि पामतइ एहवउ डोहलउ ऊपनउ । जाणइ जउ नर्मदानदी मांहि जई स्नान करउ । ए वात भर्त्तार आगलि कही । पछइं सहदेव संघा-तनी रचना करी सुंदरीनइं साथि लेई चालिउ । हिव नर्मदानइं कांठइ आवी पूजा अर्चा करी नर्मदामाहि पइसी जलक्रीडा कीधी । पछइ सहदेव व्यवसायनइ सुखिइं तिहां नगरनी स्थापना कीधी । नर्मदापुर नाम दीधउ । तिहां जिनमंदिर कराविउ । सम्यक्त्वरंगि पोषिउ मणी पछइ सघलाई व्यवहारिया आपणा नगर मूंकी तिहां आवी वस्या । इसइ पूरे दिवसे पुत्री जन्मी । पणि पुत्रजन्मनी परिइं उच्छव कीधउ । नर्मदा-सुंदरी ए नाम दीधउं । क्रमिइं क्रमिइ सघलीइ कला अभ्यसी यौवनावस्थाइं आवी ।

इसइ नर्मदासुंदरीनउ रूप सांभली ऋषिदत्ताइं चींतविउ "जउ माहरउ पुत्र महेश्वरदत्त तेहनइं हेति ए नर्मदासुंदरी मागीइ । अथवा मुझनइ धिग् धिक्कार हुउ । जे मइ जिनधर्म छांड्यउ हूं कुटुंबिनइं काती । जे हूं धर्मविना नामइं न आणउ ते माहरा पुत्रनइं

तिम देखइ ?" इम कहती रोवा लागी। तेतलइ रुद्रदत्त आविउ। तिणि पूछिउं "तूं असमाधि कांइ करइं?" तिवारइ ऋषिदत्ताइं सर्व वृत्तांत कहिउं। पछइ महेश्वरदत्त पुत्र मा-बापनी वात सांभली कहिवा लागउ "तात मात! तिहां मोकलउ। जिम सघलाइ बालकीं माउलानी पुत्री परिणी माताइं हर्ष उपजावउं।" पछइ पिताइ महेश्वरदत्त पठाविउ। थोडे दिहाडे पंथ अतिक्रमी नर्मदापुरि आविउ। तिहां सहदेवनइ मिलिउ। तिण महेश्वरदत्त तिम बोलइ तिम चालइ जिम सहदेवादिक सहू मनि चमत्कर्या। पछइ उत्संगि बइसारी कहिवा लागा "वत्स तूं अम्हारा चित्त आकर्ष्यां जिम चांगपी तिपाइं करी आप वरि थाय तिम अम्हे तूं वरि कीधा। तउ वरस मांगि जि कांइं मांगइ ते आपउं।" तिवारइं महेश्वरदत्तिइ नर्मदासुंदरी मांगी। पछइ माता-पिताए दीधी। तिहां महेश्वरदत्ति जिनधर्म पडिवजिउं। धर्म-छापण कीधा पुण हृदयि मनि जिनधर्म टाली अवर धर्म न करइ। पछइ महाआनंदिइ महेश्वरदत्ति नर्मदासुंदरीनउं पाणिग्रहण कीधउं। केतलाएक दिन तिहां रहिउ। तिण नर्मदासुंदरीइ तिम जिनधर्मना उपदेस दीधा जिम महेश्वरदत्त जिनधर्मनइ विषइ गाढउ निश्चल हूउ। पछइ केतलेएक दिहाडे ससुरानइ कही भार्या सहित महेश्वरदत्ति आवी मातपितानइं प्रणाम कीधउ। तिवारइ ऋषिदत्ता नर्मदासुंदरीनइं उत्संगि बइसारी कहइ "वत्सि तूं तिम करिजइ जिम मिथ्यात्वनउं नाम घरनइ न थाइ।"

तिवारइ महेश्वरदत्त नर्मदासुंदरी सुखिइं काल गमाडतां सर्व सज्जननइं मान्य हूआ। अन्यदा नर्मदासुंदरी गउखि बइठी आरीसा आगलि मुख जोअती, तंबोल खाती, अनेक विभ्रम करती लीलाइं तंबोल आपणउ नांखिउ। इसइ महात्मा, एक तलइ चालतउ हूतउ तेहनइ माथइ तंबोल पडिउ। तेतलइ महात्माइ कहिउं "इम जे ऋषिनी आशातना करइ ते भर्तारतउ वियोग पामइ।" इसउं ते महात्मानउ सकोपवचन सांभली विषादपर नर्मदासुंदरी गउखथिकी ऊतरी महात्माने पगे लागी कहिवा लागी "हे महात्मन्! हूं बालथी जे हूं जिनधर्म आराधथीहूंती एवडउ अविनय कीधउ। तउ हिव तुम्हे शिक्षाइं आसउ छउ। मइ ऊपरि क्षमा करउ। तुम्हेतउ बाईरि ऊपरि कोप न करउ। पछइ मइ ऊपरि किम करिस्यउ। तपसी मइ अपराधी ऊपरि शराप पछइ करउ।" तिवारइं मुनि बोलिउ "हे वत्सि! सांभलि। खेद म करिजे। जे महात्मा हूइं ते शाप आनइ अनुग्रह न करइं। पणि न जाणउं माहरा मुखहूंतउ एहवउ वचन किम नीकलिउ। अथवा कांइ जे भोगवां अनुभवनउ हूइ ते कोई कर्म छइ तिउं ना; ते तउ खमावउ जि हूइ।" इम प्रतिबोधी महात्मा आपणइ ठामि गयउ। नर्मदासुंदरी पाछी घरि आवी। सुखिइं घरि रहइ छइ।

इसइ अनेक दिवसि महेश्वरदत्त व्यवसाय भणी यवनद्वीप भणी चालिवा लागउ। तेतलइ नर्मदासुंदरी कहइ "स्वामी! हूं पणि साथि आविसु।" पछइ नर्मदासुंदरी संघाति चाली। तिहां समुद्रमांहि प्रवहणि बइठी जाअतां अर्धपथ अतिक्रमिउ जेतलइ, तेतलइं रात्रिइ समुद्र कुणही एकइं गीत गायउ। ते गीत सांभली नर्मदासुंदरी स्वरना लक्षण जाणती हूंती भर्तारनइं आश्चर्य उपजावा भणी कहिवा लागी "स्वामिन्! जे ए गीत गाय छइ ते सामलउ वर्णि छइ। स्थूल हाथ छइं। ह्रस्व देह छइं। गुह्यप्रदेशि मस

छइ । षेण संजम छइ । वाचीस बरसनउ छइ । रूपिइ विरूपउ छइ ।" इत्यादि कीना वचन सांभली महेसरदत्त मनमांहि चींतवइ "ए नर्मयासुन्दरी कुसीलिनी संभाविइ । अन्यथा एतली वात किम जाणइ । तउ हिव परीक्षा करउं ।" पछइ प्रमादि ते पुरुष तेही सर्व अहिनाण जोई मनि निश्चय कीधउ "तां सही ए कुसीलिनी जि छइ । इहां संदेह काई नहीं ।" पछइं गूढ कोप धरतउ चींतवइ "एतला दिन हूं इम जाणतउ हुं ए महासती छइ । पणि तउ आज पारिखउ दीठउ । तउ हिव एहनइ समुद्रमांहि ठेल्ही दिउं । अथवा सातुकरी केहिमी परिइं विसर्जन करउं ।" इम चेतकइ चींतवइ छइ तेतलइ अकस्मात् निर्यामक कूआथंभा ऊपरि चडीनइ कहइ "अरे लोको ! प्रवहण राखउ । सिउ पावउ । नागर मूकउ । राखसउ द्वीप आविउं । जल-इंधणनी सामग्री लिउ ।" इम कही आपणउ प्रवहण राखिउ । सर्व संग्रह कीधउ । इसइ महेसरदत्त माय्यालगइं गूढ कोप धरतउ नर्मदासुंदरीसिउं वनमांहि लेई गयउ । अनेक तलाव देखाड्या । वली सर्व वन देखाडी संध्याइं तिहां एक वननिकुंजमांहि बइ सूता । तेतलइ पूर्वोपार्जित दुःकर्मवशइं नर्मदानइ निद्रा आवी । तेतलइ महेसरदत्त नर्मया सूती जि मूकीनइ प्रवहणि आविउ । लोकनइं कहइ "अहो ! लोको नासउ नासउ; जेसा तउ राक्षसइ खाधी । हूं नासी आविउ । तुम्हे वाल्हउ, नहींतर राक्षस आवी खासीइ ।" तिवारइ बीहता लोक प्रवहणि चडी चाल्या । पछइ महेसरदत्त चींतवइ "मइं जिमइ वात कीधी । कुसीलिनी स्त्री पणि छांडी अनइं लोकमांहि अपवाद राखिउ ।" हिव अनुक्रमइ यवनद्वीप आविउ । तिहां घणउ धन उपार्जी आपणइ नगरि आविउ । अनइ प्रियानउं स्वरूप कहिउं । "सु राक्षसइं प्रिया मारवी ।" पछइ असमाधि करी नर्मयाना प्रेतकार्य कीधा । वली महेसर नवी वार परणाव्यउ ।

हिव नर्मयासुंदरी वनमांहि जिम सूती हूती तिम जि पुकार करती लागी । पणि आपणउ भर्तार न देखइ । तिसइ नर्मया मोहपणइ कहइ "स्वामी ! एहवउ हासउ न कीजइ ।" तउ ही पति नावइ । तेतलइ ऊठी वनमांहि जोवा लागी । पणि भर्त्ता न देखइ । तिवारइ नर्मया रोवा लागी । तिणि रोवतां घणे वनमांहि सापद छइ ते ही रोवा लागा । पछइ सतीना धरमांहि रात्रि रही । पणि रात्र सउ वर्ष समान हुई । वली प्रभाति रुदन करती, वन जोवती, पांच दिन अतिक्रमावी समुद्र तीरि जिहां प्रवहण हूता तिहां आवी । देखइ तउ आगलि प्रवहण नहीं । तिवारइं गाढेरी निपुणपणइ रुदन करती ते सुणिनउ वचन पीडि कहिउ । पछइ घोरेरी असमाधि करिवा लागी । इम आपणइ पूर्वोपार्जित कर्म भोगवती, आत्मानइ प्रतिबोध देती, महासतीइं सरोवरि स्नान करी, वनमांहि देव वांदी, फलाहार करीनइ तापसी हुई । पछइ गुफामांहि माटीनी प्रतिमा करी मननइ सिरखी मणी फल-फूले पूजी, आगलि बइठी सिज्झाय करइ । एकाग्रचित्त दीक्षामा ध्यानमइ तत्पर हूंती रहइ ।

इसइ ते नर्मयानउ पीतरियउ वीरदास बब्बरकूल भणी जातउ हूंतउ तीणइ प्रदेशि तिहां गुफामांहि स्वामीनी स्तुति करइ छइ तिहां आविउ । पछइ ते स्तुति सांभली वीरदास गुफामांहि पइठउ । तिसइ साधर्मरूपी वीरदासइं भत्रीजी देखी कंठि आलिंगी रोक

अनइं हर्षि भरतउ पूछिवा लागउ 'हे महिल ! तूं एकाकिनी इहां कांइं अथवा तू किम आवी ?" इम पूछिउं हूंतउं नर्मदाइं आपणउ सर्व वृत्तांत कहिउ । पछइं वीरदास वेषनइं ढांकवा वेशउ हूंतउ नर्मदासुंदरीनइं सेवानि मेई म्लेच्छकूल आविउ । तिसइ नर्मदासुंदरी उतारइं मूंकी पछइं वीरदास भेटि लेई राजानइ मिलिवा गयउ । राजाइं बहुमान देई बर्बरराज मूकिउं । पछइ वीरदास क्रियाणां वेचिवा लागउ ।

इण तिहां हरिणी नामि पणांगना वसइ । पणि ते बहुधनी अनेककलावंति सहस्र दीनार निइ । ते लेवा भणी दासी एक वीरदासनइं उतारइ मोकली । तिणि दासीइ नर्मदासुंदरी दीठी रूपवती । तिणि जई हरिणीनइ कहिउं "हुं एहवउं रूप पृथ्वीमांहि नथी । ए जउ ताहरइ घरि आवइ तउ घणे कल्याणेरि थाती । तीणइं प्रमुखी कोडि उपार्जिइं ?" पछइं हरिणिइं धन मांगिवानइ मिसि तेह वीरदासनउ चरित्र जोवा भणी दासी तेह वि मोकली । तिसइ वीरदासि सहस दीनार दीधा । तिसइ दासी पाछी आवी हरिणिनइं कहइ "न जाणिइ वीरदासनी बहिन छइ, अथवा सगी छइ किंवा दासी छइ । ते जाणिवा नही ?" तिवारइ हरणी तेहनइ घरि आवी । पछइ वीरदासनइ बलात्कारि आपणइ घरि लेई गई । मिषान्तर करी वीरदास मोकली हाथनी वींटी नामांकित लेई । ते लेई पछी हरिणीइं दासी हाथि नर्मदासुंदरीनइ मोकली । नामांकित मुद्रा देखाडी नर्मदानइ घरि आणी भूंहरा लेई नाखी । मुद्रिका वलि पाछी आपी । पछइ अकस्मात वीरदास पाछउ घरि आविउ । जइ उतारइ जोवइ तउ नर्मदानइ न देखइ । पछइं सर्व नगर खोलउ खोलउ सासंक हरिणीनइं घरि आविउ; पूछइ छु "नर्मदा किहां ?" तिवारइं ते कपटपंडिता न माग्य कहइ "हूं स्यउं जाणउं ।" तिसइ वीरदास चींतवइ "एक म्लेच्छनी धनइ मीठी नथी । तिम एक वेश्या अनइं राजानउ बहुमान । तउ ए साचि न पइ चिंतइ । एक परदेसइ बीजउं चीणइ लेपची ते किम आणिस्यइ ?" इम भणी असमाधि कीधी । पछइ आपणी वस्तु लेई बमणउ लाभ उपार्जी पाछउ चालिउ । भरुयच्छि नगरि आविउ । तिहां आव्या पछइ परममित्र परमश्रावक जिणदास ते आगलि सर्व वात कही । नर्मदासुंदरीनी शुद्धिनइं हेति म्लेच्छकूल भणी आपणइ ठामि मित्र मोकलिउ ।

इण हरिणीइ वीरदास चाल्या पछइ नर्मदासुंदरीनइ कहिउं "हे सुभगि ! सौभाग्यनउ निधान वेश्यापणउ आदरि । यौवननउं फल लिइ ।' ए वचन सांभली हरिणी कहिवा लागी तेतलइ नर्मदाइं कान ढांकी नइ कहिउ "ए वात वली पछइ म कहिसि । हूं आजन्म शीलनी खंडना नही करउं ।' तिवारइ वेश्या कहइ "अम्हारउ जन्म सफल, जे आपणी इच्छाइं विलसउं भोग भोगवउं ।" तेतलइ नर्मदा कहइ "एणइं दुर्लभि संसारमा दुख कठण छइ । जां मरणइं जीवितव्य लगइ माहरउ शीलरत्न कुण हरी सकइ । कदापि मेरु पर्वतनी चूलिका चालइ अनइं कदापि पश्चिमइं सूर्य उगइ, पणि माहरउ शील भंग न करउं ।" पछइ हरिणीइं अनेक दीन बोल बोल्या प्रेम देखाडिउ । पणि तउ ही न मानइ । तिवारइ हरणीइं पांचसइ भाटी नर्मदानइं देखाडी । पणि अगाउ ते स्त्रीनउं [मन ?] शीलथकी प्रमाणि सुभित नही । अनइ शील पणि राखिउ ।

तिसइ नमयानइं मारतां शीलनइं प्रमाणिइं हरिणी वेश्या मुई । पछइ बीजी वेश्या भयभीत हुंती पगे लागी । नमयानइ मनावइ "तूं अम्हारइ सामिनी था । प्रभुत्वपणइं आपणी इच्छाइं शील पालि ।" पछइ नमयासुंदरीइ ते वचन मानिउ । इम करतां प्रधानि नमया-सुंदरीनउ रूप देखी प्रार्थना कीधी । पणि मानइ नहीं । तिवारइ प्रधानि राजा आगलि घइं नमयाना रूपनी वर्णना कीधी । तेतलइ राजाइ नमयासुंदरी भणी पालखी मोकली । तिसइ राजाने सेवके चाई महामिथ्यात्वि नर्मदासुंदरी सुखासनि बइसारी, माथइ छत्र धरी चलावी । पछइ नमयासुंदरी शीलनी रक्षा भणी गहिली हुई । मोटउ एक नगरमउ खाड तेहमाहि छलकती पडी । लोकामइ कहइ "अहो लोको ! माहरइ शरीरि यक्षकर्दम कहवां सूकवि कपूर केसर कस्तूरी लागी छइ ।" इम कहती सघलाई लोकानइं कादमसिउ छांटइ अनइ आपणा वस्त्र फाडइ । वली लोक साम्ही धूलि नाखइ । इसइ प्रधानि राजानइ कहिउ "सामी ! म जाणिसिउ छलभेद हुओ किंवा छलि लागी तिम ते गहिली थई ।" तेतलइ राजाइ मंत्रवादी तेड्या । तेतलइ मंत्र गुणी गुणी सरिसव नांखइ तेतलइ नमयासुंदरी ते साम्हा पाषाण मारइ । तिम ते मंत्रवादी सर्व नासी गया । हिव नगरमांहि गहिलीनी परिइं फिरइ । वीतरागना गीत गायइ ।

इसइ ते जिनदास श्रावक भरुअच्छनूंतउ आविउ । तीणइ ते नमियासुंदरीनइ मुखि वीतरागना गीत सांभल्या । तिवारइ जिनदास आगलि आवी दयापरहूंतउ कहिवा लागउ "हे सुमति ! तुम्हनइ ए स्यउ थयउ ? तूं परम श्राविका जेम भक्ति दीसइ छइ ।" तिवारइ नमिया कहइ "तूं पढउ जेम श्रावक छइ तउ माहरउ सरूप एकांति पूछे पणि लोक देखतां म पूछे ।" हिव अन्यदा गीत गावती वनमांहि थाई नमिया देव वांदी गीत गायइ छइ । तिसइ जिनदास पणि केडइ लागउ वनमांहि गयउ । तिहां तेहनइ 'वांदू' इम करी जिनदास पूछिवा लागउ "तूं कउणि ?" तिवारइ नमयाइ आपणउ सर्व वृत्तांत श्रावक आगलि कहिउ । तिवारइ जिनदास कहइ 'बहिन ! वाहरी मोटी वात । जिम तइं शील राखिउ तिम बीजउ कोइ न राखइ । हिव हूं तम्हारइ कीधइ भरूअच्छहूंतउ आविउ छउं । वीरदास मित्रइ हूं मोकलिउ । तउ हिव तूं खेद म धरिसि । जिम रूडउ हुस्यइ तिम हूं करिसु । पणि आज पछइं राजमार्गि जेतला पाणीना घडा आवइ तेतला तूं भाजे ।" इम संकेत करी बेउं नगरमांहि आव्या । पछइ नमया पाषाण नांखइ, हाडका फोडइ, लोकनइ संतापइ । इसइ नगरनउ राजा नीकलिउ । तिणि ते गहिली दीठी । तिसइ जिनदास आगलि ऊभो हूंतउ तेहनइ कहिउ "आउ इणि इ बीइ नगर सघलउ नगरनी परिइं संतापिउ । हिव तिम करि जिम प्रवहणि बइसारी एहनइ परतीरि छोडूं जा, जिम व्याधि टलइ ?" तिसइ जिनदासि वचन पडिवजिउं । मनमांहि हर्षिउ । पछइ लोकहर तेडी नमयानइं पणि अठीलि घाती प्रवहणि बइसारी, सर्व चाकर प्रमाण भरी अनेक वस्तु नाना घाती, पछइ आप प्रवहणि बइसी चालिउ । मार्गि जातां अठीलि मांकी । वस्त्र आभरण पहिरावी नर्मदापुरि आणी । तिसइ पितांइं पुत्री आवी जाणी पिता साम्हउ आविउ । पछइं नमयासुंदरी माता-पितानइ पगि लागी । तारवारि रुदन करिवा लागी । तिसइ ऋषभसेनादिक कहिवा लागा "मरुउ हुउ जे अम्हे बेटी

बीकसी बैठी । तउ आज पुत्रीनइं भवउ जन्म हूओ ।" तेह भणी महामहोत्सव करिवा लागा । वेगप्रमाणि पूजापूर्वक साधर्मिक वात्सल्यादिक कीधा । केतलाएक दिन साधर्मि जिनदास तिहां रही वीरदासनइं पूछी भरूअच्छ आविउ ।

इसइ एकदा आर्य सुहस्तिसूरि दशपूर्वधर विहार करता नर्मदापुरि आव्या । तिवारइं नर्मदासुंदरी मा-बाप भरतारिसा सहित आचार्य समीपि आवी प्रणाम करी आगलि बइठी । तेतल[इ] श्री सुहस्तिसूरी धर्मलाभ कही धर्मोपदेस दीधउ । तिवार पछइं देसनानइं अंति वीरदास गुरुनइं प्रणमीनइं पूछिवा लागउ "स्वामिन् ! नर्मदासुंदरीइं भवांतरि कठण कर्म उपार्जिउं जे निर्दोषइ कुशीलपणानी एवडां कष्ट पाम्या ?" तिवारइ श्रुतांग श्रुतज्ञान उपयोग देई पूर्वभव कहिवा लागा—"पूर्णइ पृथ्वीपीठि वन्ध्यगिरि । तेहमाहि थकी नर्मदा नीकली छइ । तेहनी अधिष्ठायिका मिथ्यात्वनी देवतां एकदा महात्मा एक धर्मरुचि प्रतिमाइं रहिउ देखी घणा उपसर्ग कीधा । तउ ही धर्मरुचि महात्मा ध्यान थकउ न चूकइ । तिसइ देवताए महात्मानी क्षमा देखी प्रतिबूझीहूंती सम्यक्त्वधारिणी हुई । तिहां ते मरी तुम्हारी पुत्री नर्मदा हुइ । अनइ पूर्विला अभ्यासनी नर्मदा[म]नउ दोहलउ ऊपनउ । वली जे महात्मानइं उपसर्ग कीधा तेह भणी दुःखिणी हुई ।" ए वात सांभली नर्मदाइ दीक्षा लीधी । तिसइ जातीस्मरण ऊपनउं । पछइं चारित्र पालतां वली अवधिज्ञान ऊपनउ ।

पछइ प्रवर्तिनीपद पामी रूपचंद्रपुरि आवी । पणि तप करी कायाइं कृशदेह हुई छइ । पणि तिहां कुणही ओलखी नहीं । पछइ ते नर्मदासुंदरी प्रव(व)र्तिनि महासतीने एव परिवारी ऋषिदत्तानइं घरि आवी धर्मलाभ कहिउ । तिसइ ऋषिदत्ताइ उपाश्रय दीधउ । तिहां महासती रही । दिन प्रति उपदेस महासती सदा दिइ अनइं महेसरदत्त ऋषिद(त्ता) धर्मउ उपदेस सांभलइ । पणि कोई महासतीनइं ओलखइ नहीं । इम अन्यदा संधिभंग ऊपाइवा भणी महेसरदत्तनइं वारउग्रम चपामिउ । ते वारउग्रमोपदेस सांभली ते नर्मदासुंदरी चीति आवी । पछइ पश्चात्ताप करिवा लागउ 'धिग् धिक्कार माहरा, जे मइं एहवीइ सती अनमाहि मूकी तउ ते नर्मदाना कुण हाल होसिइ ।" इम आपहणी शोक करतउ देखी दया आणी महासती कहइ "जे हूं नर्मदासुंदरी जे तुम्ह आगलि बइठी छउं ।" तिवारइ महेसरदत्त बोलइ "ए किस्यउं आश्चर्य । जोउ सकलइ कर्म नि प्रभाव सबल जिम नचावइ तिम नाचीयइ । इहां किसउ दोस नहीं ।" पछइ ऊठी महासतीने पगे लागी आपणउ अपराध खमावी करी वैराग्यरंगरंजित हूंतउ श्री सुहस्तिन् आचार्य समीपि जई व्रत लीधउ । अनइं ऋषिदत्ताइं पणि चारित्र लीधउं । पछइं बेहूं तप तपी चारित्र पाली स्वर्गमाहिं मात्यम हुआ । अनइ नर्मदासुंदरी पणि प्रांतसमउ जाणी संलेखनापूर्वक अणसण पाली देवलोकि पुहुती । पछइं वली महाविदेहि क्षेत्रि ऊपजी दीक्षा लेई मोक्षि पहुचिसइ ॥ श्री ॥

॥ इति श्री शीलोपदेशमाला बालावबोधस्य वा० श्री० मेरुसुंदर० शीलोपरि नर्मदासुंदरीकथा ॥ श्री ॥